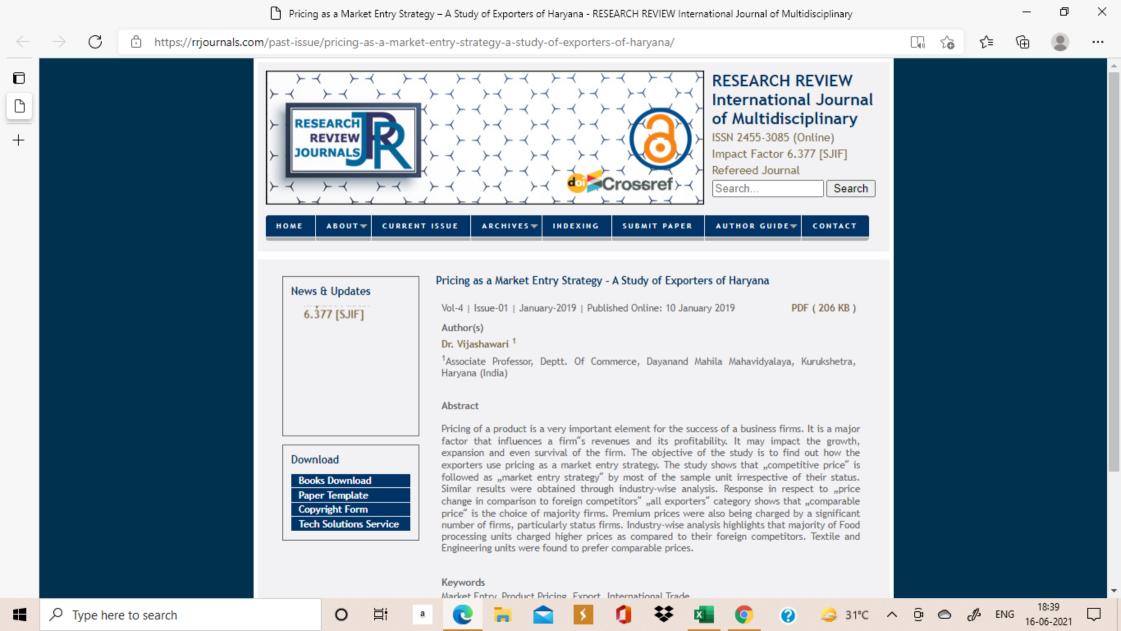
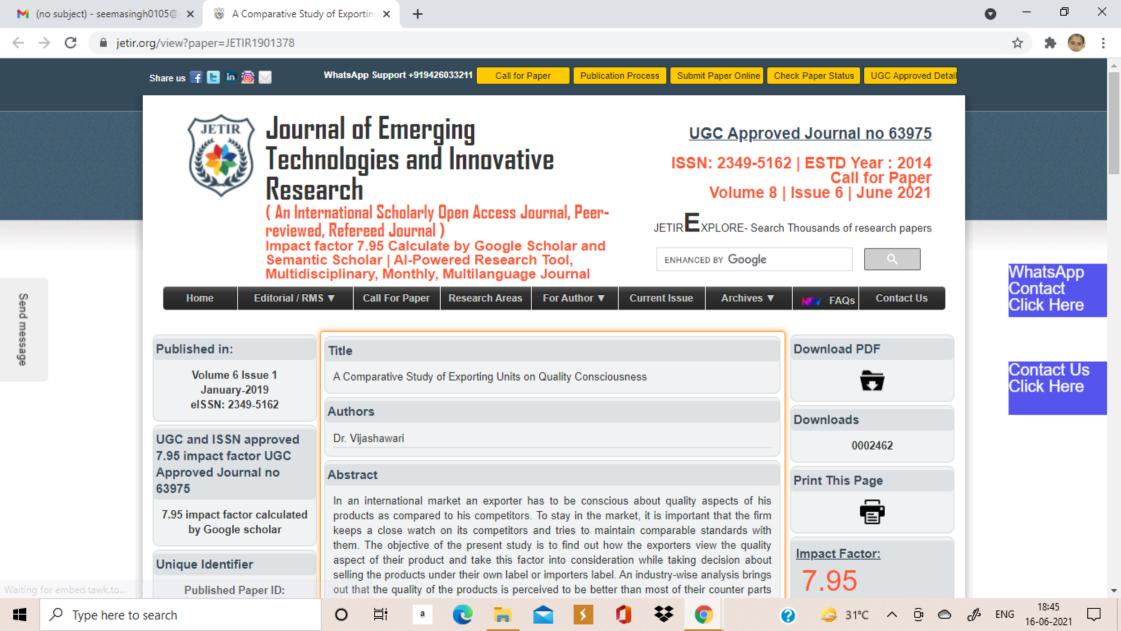
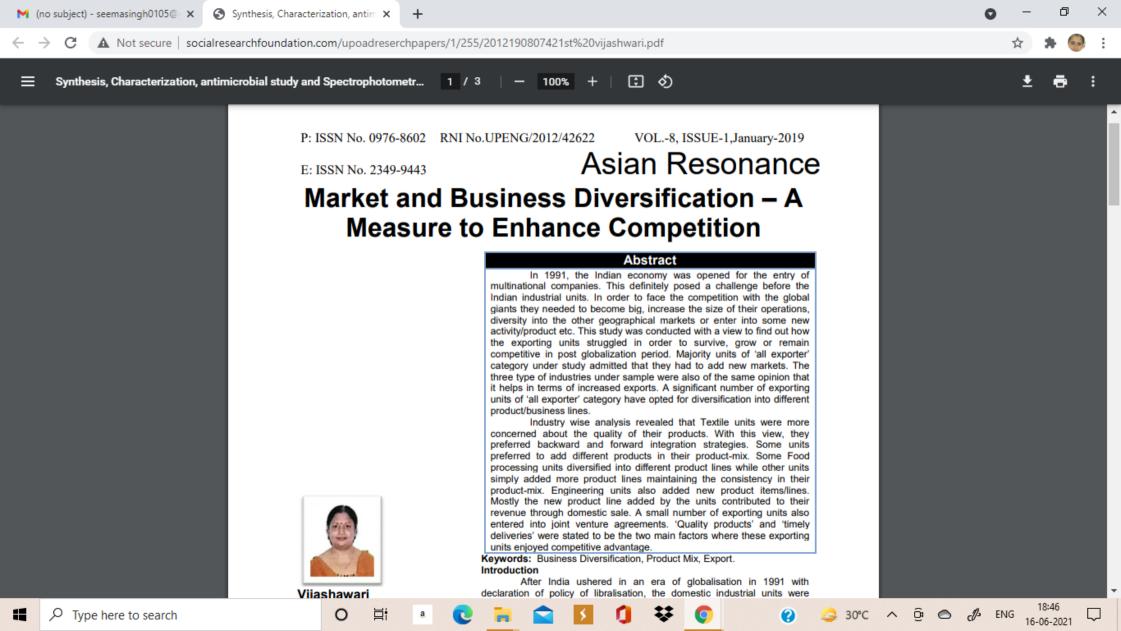
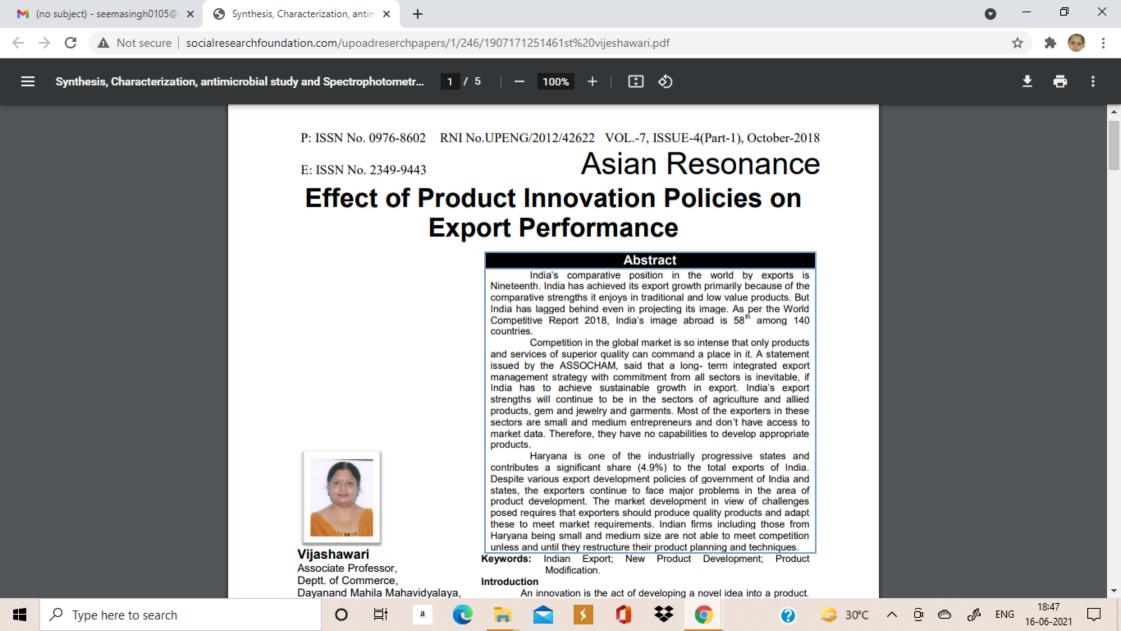
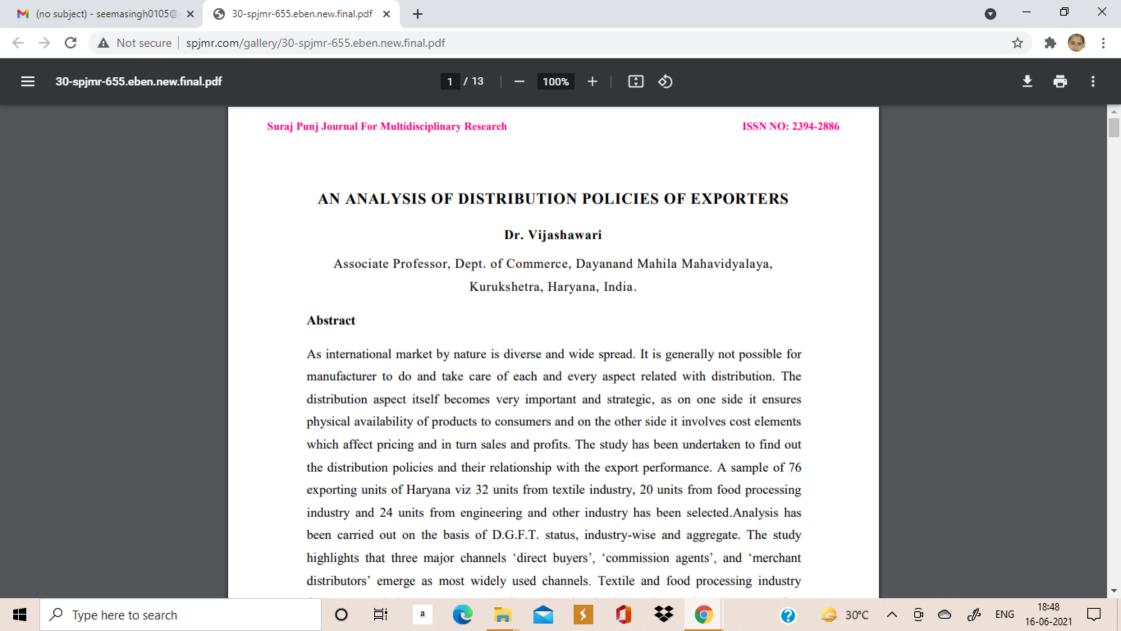
# Session: 2019 (online Papers)

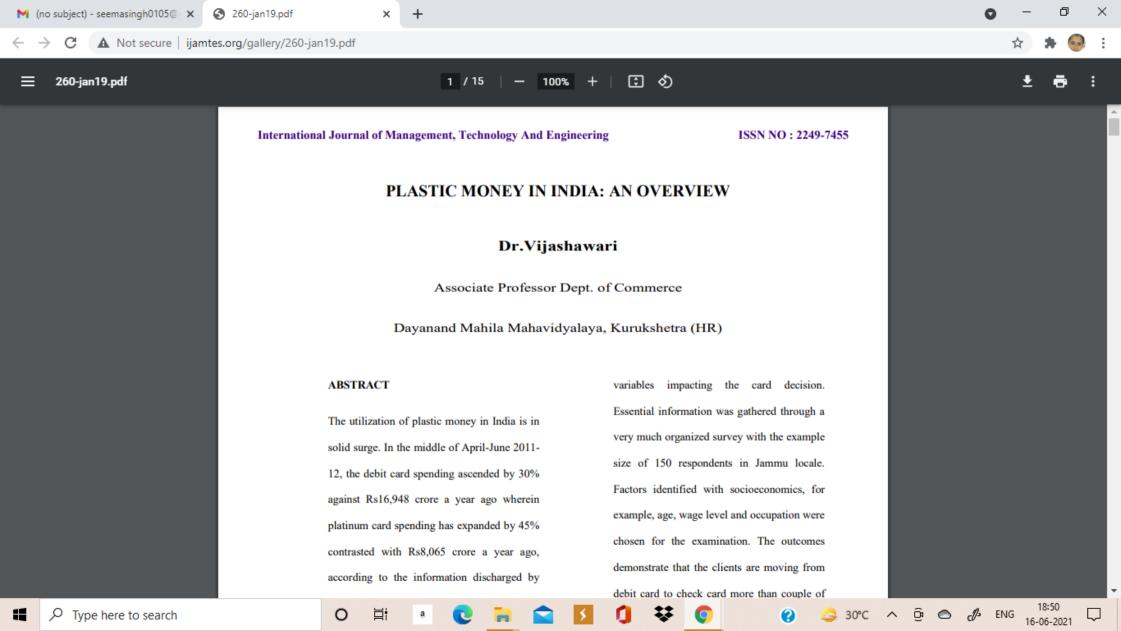


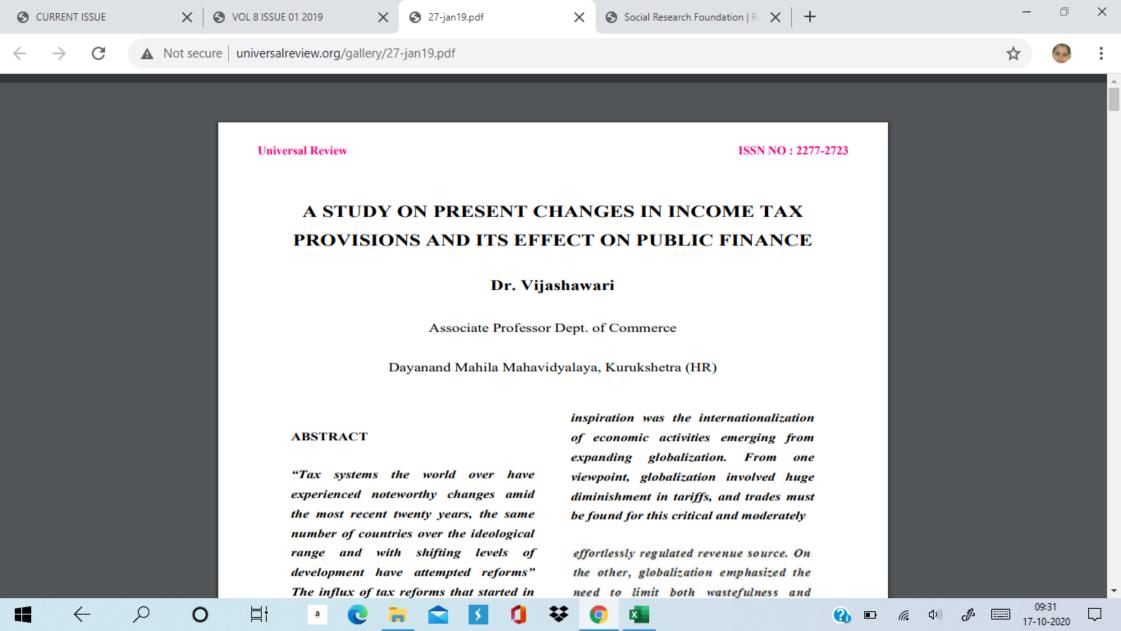


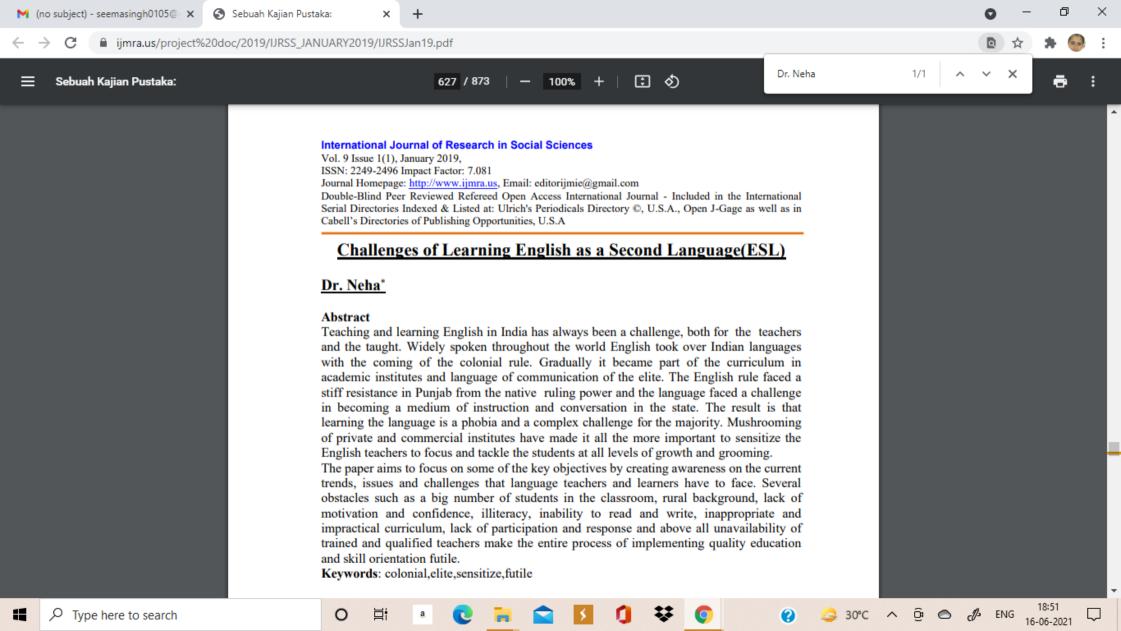


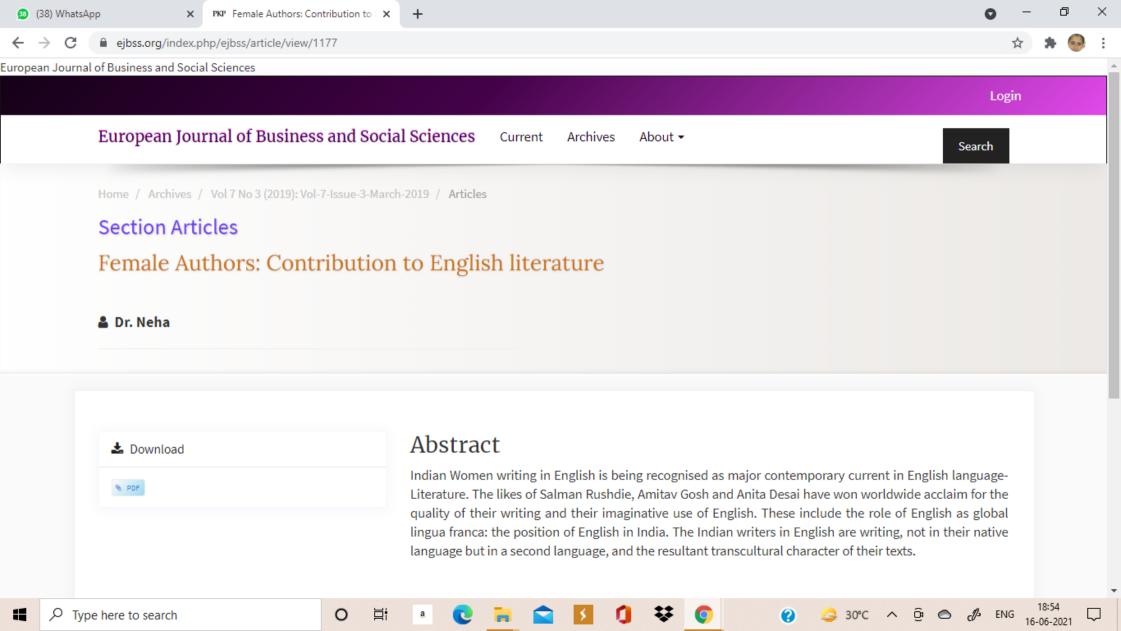


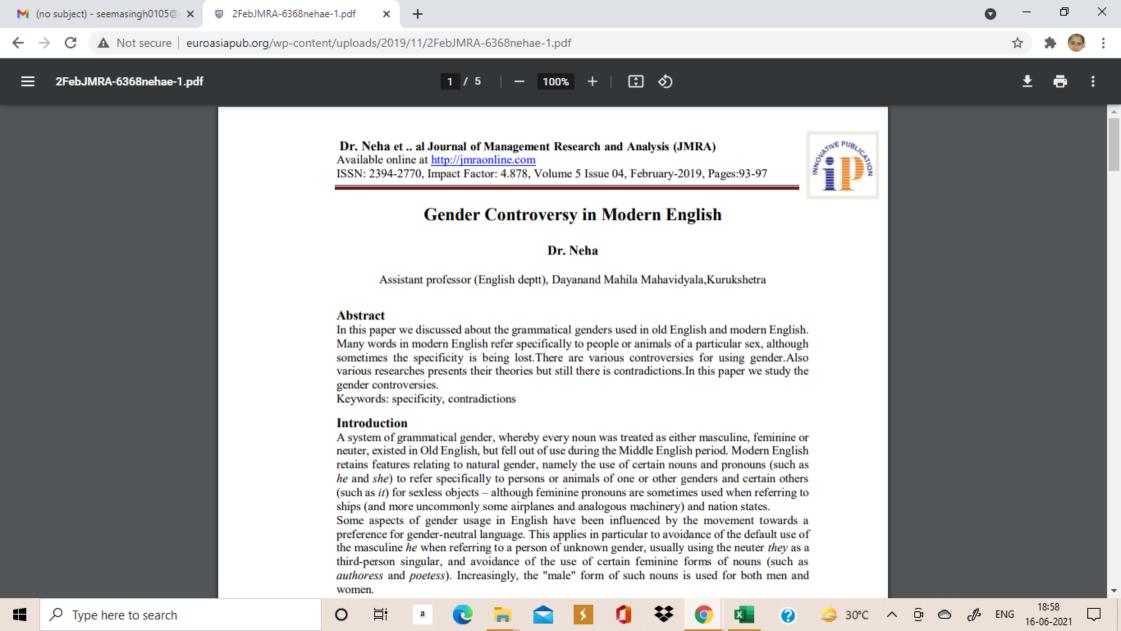


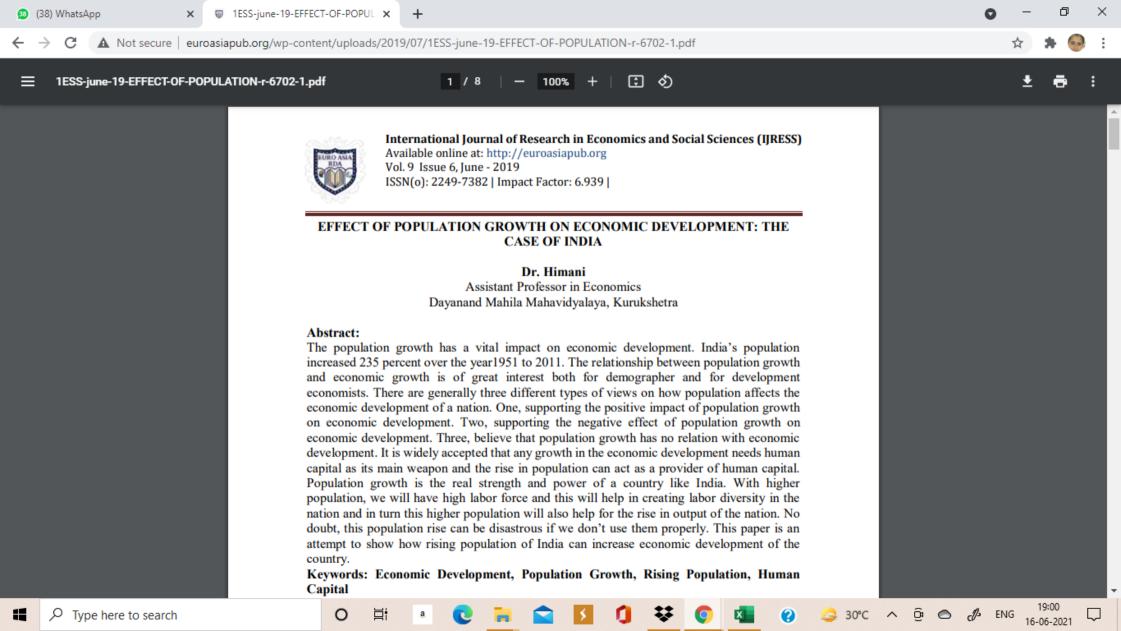


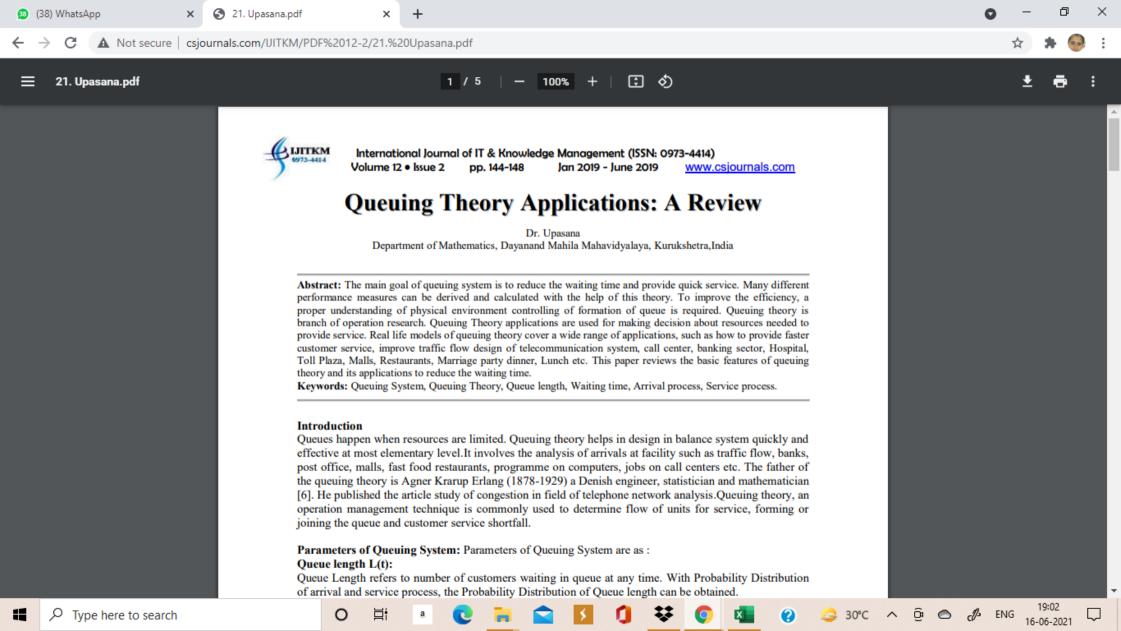


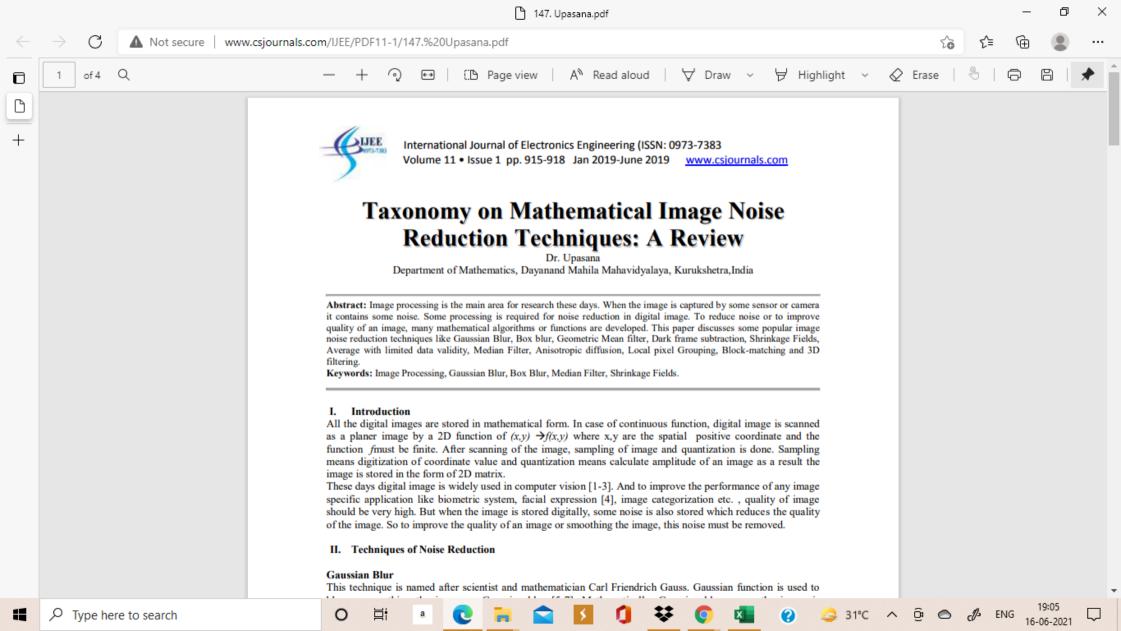


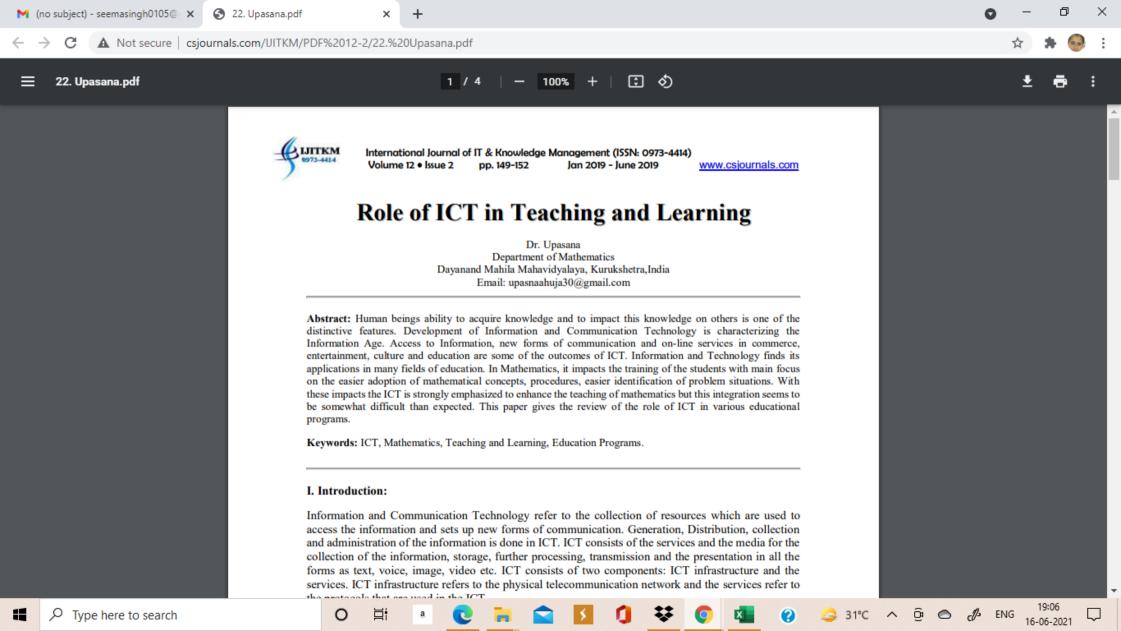












# Session: 2019 (offline Papers)

s66line

8,9

यतेमहि स्वरान्धे ISSN : 2229-7227

Year : 0

Issue: 24 (Pare-II)
April-June 2018

www.chittonresearchjournal.com

Impact Fostor: 4.012

International Refereed

### युन्त्न

Chintan Research Journal

। रिसर्च जर्नल

साहित्य, मानविकी, समाज—विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित) (Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest . U.S.A.)

(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland) (Indexed & Listed at : Research Bib, Japan) (UGC Approved List No. 41243)

संपादक आचार्य (डॉ.) शीलक राम



Attested to be true copy

Principal Dayanand Mahila Mahavidyala Kurukshetra Haryana) Con Weber IQAC Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner



### शोध-आलंखानुक्रम

How, when and why do peasants protest?	
Abhinav Mishra	10-15
Abhinav Mishra : राजनीविक परिवेश	40.00
and Syttle child	16-24
्रावित सामा नागार्चन (1911-1998)	
हाँ ओमप्रकारा	25-29
डा॰ ओमप्रकारा Gencept of self in Kamala Das poem: An introduction	20.04
Concept of sell in the sell of Environmental Dec	30-34
Annand  Annand  Trands and pattern of Urbanization in Haryana - its impact on Environmental Deg	35.44
Dr. Karan Singh	00-11
Manak: Messenger of Oliveron.	42-48
Sandeep Kaur Sandeep Kaur Sandeep Kaur Sandeep Kaur Sandeep Kaur	
Productivity Analysis of Scheduled Communication	49-55
CA Pranav Bansal  Savay Analysis on the Usage of Whats App messenger	
Analysis on the Usago of The Us	56-64
Arjita Bhandari, Sheena भाषा हिन्दी : विविध आयाम	
	65-67
डॉ॰ दोपशिखा est to Private defence : A Sheild Not as A Sword	
	68-72
Miss Sonu, Dr.Seema Dahiya	20 2¢
Neelam Rani	73-75
ਜ਼ਿਖ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਚ ਨਵੇਂ ਦਿਸਹਦੇ ਕਵਿਤਾ ਰੂਪ ਵਿੱਚ	76-78
्राताची जाप्ता हिन तह रिमार्ट बाह्य पुर रिक	10-10
Gurdeep Singh	
Gurdeep Singh	79-82
ङाँ॰ जगतनारायण कौशिक	
्रिक्टिय महत्त्वपरिचयरच	83-87
सरिता रानी	
िश्लेस्त्रीयप्रायश्चित्तसाधनानां समीक्षणम्	88-97
डॉ. राकुन्तलादाराः	90-31
डणार् भगवर्गीतायां लोकायतमतपर्यालोचनम्	
	98-102
हा.दयान-दपाणिग्राही	400
Sees and Efficiency of Health Services in Haryana	103-109
Rampal Singh, Vaibhav Verma  Branti Lamba, Vaibhay Verma	pment Bank
Branti Lamba Vaibbay Verma	17U-117
Preeti Lamba, Vaibhav Verma  Anil Kumar, Vaibhay Verma	100 BRIDE
Anil Kumar, Vaibhav Verma	710-12-
्रिश्हें समाज का आदर्श	•
	121-124
अंजलि	

Attested to be true copy

Principal
Disagua (Schila Mahavidyala
Kurukshen — saryana)

Converger IQAC

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner



'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN: 2229-7227)

International Refereed वर्ष 9, अंक 34(ii)

(पृ.सं. 56-64)

Impact Factor : 4.812

विक्रमी सम्वत्: 2077 (अप्रैल-जून 2019)

#### Survey Analysis on the Usage of Whats App Messenger

Arjita Bhandari

Assistant Professor
Department of Commerce
Dayanand Mahila Mahavidyalaya

Kurukshetra (Haryana)

Sheena

Assistant Professor
Department of Commerce
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra (Haryana)

#### **Abstract**

Whats app is an emerging social media application in mobile phone. The usage of whats app is increasing day by day and there is profound effect on individual lives, culture and society. This had lead to research regarding usage and its effect on user's social and personal life. Through this paper we are able to study usage rate of whats app with the help of descriptive analysis as well as comparison had been made between male/female and married/unmarried users through t-test. This survey analysis will be helpful to academicians and researchers to understand the behavior of users.

#### Key-Words: Social Media Platforms, Whats App Messenger.

#### 1. Introduction

The various kinds of groups of online media can be best understood with the help of social media. As Social Media provides various activities such as participation through communication, openness to feedback, sharing information, conversation etc.

With the help of internet we can connect to our family, friends, families and acquaintances through social media websites. Social Media websites are all about connecting with friends, society, family, colleagues etc. Various social media platforms are available such as Facebook, WhatsApp, Instagram, Linked In, Twitter, etc. All these platforms help in sharing information, audio, videos, text, photos, organize events and for playing games.

Keeping in mind the security issues, social media websites are best platforms for connecting with world. Internet is second largest user of internet service. According to INCUBE Report 2018, number of internet users in India has registered an annual growth of 18 percent and it is estimated at 566 billion as of December, 2018.

#### **WhatsApp**

One of the important social media platforms 'WhatsApp' emerging as major changes in mobile applications. The number of users is growing very fastly. According to the Report of Statista.com, WhatsApp is most popular emerging app worldwide. Report stated that number of daily active users from 1st quarter 2017 to 1st quarter 2019

56

चिन्तन अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध-पत्रिका (अप्रैल-जून 2019)

Attested to be true copy

rincipal

Merila Mahavidyala

Convener
IQAC
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra

સાદેત્સ છેલ્લા આંગ્રહ્યું સાસો હતો પૂર્વ દિવસાદિ હત્તું સે

## श्यार चेतना

હાન્ત્રાહ્યું લો ધૃત્યો દિત્તા શોધા પાદિ હતા (ધારિકા) ભાગમાં ભાગમાં મુખ્યો સ્થાપન મામ કાલા (ધારિકા)

> ्टिश्काः डॉ.हिं सिंह सिप्टाव्याः पूर्व सदस्य, भारतीय दर्शन अनुसंग्राम परिवद

> > ्रप्रधान संपादक डॉ. दिजयादन्त शर्मा

સ્યાદકર ઑસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રેફિસ્ટ્રે

Arrested to be true copy

6

Colleger

Scanned with CamScanner

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

-84	ख्याल गायन व महिला गायिकार्ये संध्या शर्मा	174-175
	हरियाणा में महिलाओं की बदलती भूमिका	176-179
-89-	वीरमती सहारत	
-09	चोल राजवंश का उद्भव व विकास : एक अध्ययन	180-183
-94	सुरेश कुमार	
	वैदिक वाङ्गय एवं मानव मूल्य : विश्वशान्ति के सन्दर्भ में	184-187
-99	डॉ॰ शीला बंदला	
-39	भर्तृहरि की शैली एवं नीतिशतक का काव्य-सौष्ठव ज्योति	188-195
		,50 ,00
105	कतिपय साम्प्रदायिक रामायणों का संक्षिप्त परिचय लक्ष्मी कुमारी	196-201
	रादमा पुनारा "सुषम बेदी के उपन्यासों में प्रवासी नारी का संघर्ष"	
109	सोफिया सलाधिया	202-206
	महाभारत में वर्णित अध्यांग योग का विवेचन सांख्योगानुसार	
·113	शम्पू रानी	207-211
	उत्तररामचरित में वर्णित राजनीतिक आदशाँ की वर्तमान् कालीन प्रासङ्गिकता	
121	प्रिंस शर्मा, शम्भू राम	212-215
	आंचार्य क्षेमेन्द्र रचित कृतियों में धार्मिक तथ्य	
-126	कुमारी सुनीता	216-219
and	श्रीमद्भगवद्गीता का दार्शनिक दृष्टिकोण : एक विवेचन	
	इन्दुवाला, प्रो. किशनाराम बिशनोई	220-223
-132	कथा का साहित्य विमर्श एवं क्षेमेन्द्र की दृष्टि	
	नीतू वाला	224-227
<b>⊢135</b>	समाज में घटित नारी समस्या पर एक विचार	
	डॉ॰ जया दारोंडे	228-233
<u>;-147</u>	इरियाणा के बाल साहित्य की ओम प्रकाश चौहान का योगदान	
	संजीव कुमार	234-238
3-151	वर्षमान भारतीय समाज पर वैदिक संस्कृति का प्रभाव	
- 455	किं मनजीत कौर	239-243
2-156	ਉਪ-ਭਾਸ਼ਾਈ ਸਰਵੇਖਣ ਦੀ ਵਿਧੀ	*
7-159	ਡਾ. ਰਮਾ ਕੁਮਾਰੀ	244-250
li - i -	ਕੈਨੰਡਾ ਵਿੱਚ ਰਚਿਤ ਪੰਜਾਬੀ ਗਲਪ ਦਾ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ	
i0-165	ਬਲਜੀਤ ਕੌਰ ਂ	251-256
0	ਬਲਦੇਵ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਵਲ ਮਹਾਂਬਲੀ ਸੂਚਾ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸਕ ਯਥਾਰਥ ਚਿਤਰਣ	
37-170	ੀ ਨਿਆਰਕ ਹੈ। ਪ੍ਰਾਹਾ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸਕ ਯਥਾਰਥ ਚਿਤਰਣ	
71-173	Dr. Gurinder Singh	257-262
71-17-		

Affested to be true copy

Principal
Day and Maring Mehavidyala
Kurbasupli sayana)

6(11)

Continer
IQAC
Dayanand Mahila MahavidyalayaScanned with CamScanner
Kurukshetra

### वर्तमान भारतीय समाज पर वैदिक संस्कृति का प्रभाव

हाँ, मनबोत कौर अध्यक्षा, हिन्दी विभाग दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

सारांश

र्वेदिक काल प्राचीन भारतीय संस्कृति का एक काल खण्ड हैं। उस समय वंदों की रचना हुई थी। हडप्पा संस्कृति के पतन के पश्चात् भारत देश में एक नई सभ्यता का आविभाव हुआ। इस सभ्यता की जनकारी के स्त्रोत वेदों के आधार पर हो इसे वेदिक सभ्यता व संस्कृति का नाम दिया गया । वैदिक जाल का विभाजन दो भागों में किया गया है।

- ऋग्वंदिक काल 1500-1000 ई॰प॰
- उत्तरवीदक काल 1000-600 ई.प.

वास्तव में वैदिक संस्कृति आयोँ द्वारा विकसित एक ग्रामीण सभ्यता थी । आर्य सर्वप्रथम पंजाब और अफगानिस्तान में बसे थे। महान् विद्वान मैक्समूलर ने आर्थों का निवास स्थान मध्य एशिया को स्वाकार किया है । आर्यों द्वारा निर्मित सभ्यता को ही वैदिक सभ्यता कहा जाता है ।

आयों की भाषा संस्कृत थी । उनकी प्रशासनिक ईकाई पाँच भागों में बंटी हुई थी । क. कुल छ. ग्राम ग. विश घ. जन ङ राष्ट्र । वैदिक काल में राजतंत्रात्मक प्रणाली प्रचलित थीं । समाज चार वर्णों में विभाजित था । क. ब्राह्मण ख. क्षत्रिय ग. वैश्य घ. शृद्ध । प्रस्तुत शोध पत्र में यह दरानि का प्रयास किया गया है कि वैदिक संस्कृति में प्रचलित अनेक रीति-रिवाज आज भी भारतीय समाज समाज को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं।

संस्कृति का अर्थ व स्वरूप 'संस्कृति' शब्द का लेकर आरंभ से ही अनेक बिह्नानों में मतभेद रहा है । विभिन्न विचारकों ने इस प्रश्न को सुलज्ञाने के प्रयास किये हैं । कुछ विद्वानों का मानना है कि 'समस्त सीखा हुआ व्यवहार' ीं नंस्कृति हैं । इसका अर्थ ये हुआ कि मनुष्य ने आचार-विचार, धर्म, रहन-सहन आदि जितनो भो भान्यताओं को एकबित किया है, वे ही संस्कृति के मुख्य उपादान है तथा उन्हें समय-सीमा में नहीं

शंधा जा सकता ।

वाचस्पति गैरोला के अनुसार - "यदि व्युत्पत्ति की दृष्टि में 'संस्कृति' शब्द पर विचार किया नायं तो जात होता है कि 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु सं 'संस्कृति' राज्द बनता है । इस व्युत्पत्ति के आधार पर 'संस्कृति" उस अर्थ का द्यांतक हैं जो समस्त मानवता को विशेषता प्रदान करता है। व्यापक निनमानस द्वारा उसका निर्माण होता हैं । इसलियं विद्वानों ने सम्पूर्ण जनमानस के उच्चतम विचारों, युग-युग को उपलब्धियों और आदशों के समन्वय से संस्कृति का उद्गम स्वीकार किया गया है। मानव के जो आदर्श और उसको जो स्थापनाएँ किसी नागरिक को मुसंस्कृत बनाने में सहायक होते हैं, वे ही संस्कृति के मूल तत्व है और उन्हों से संस्कृति का निर्माण हुआ। वे मूल तत्व है- सद्बुद्धि, सदाचार, सद्विबंक

Attested to be true copy

Principal Dayanand Mahila Mahavidyala Kurukshetra Haryana)

संस्कार चेतना, अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका

239

the Maridyalaya Kuru

DOL.

आचार्य अकादमी

ISO 9001: 2008

Year: 8 Issue: 30

April - June 2018

www.chintanresearchjournal.com

Impact factor: 4.012

यतेमहि स्वराज्ये

Price: ₹ 500

International Refereed

## 2000

Chintan

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विि प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Personal's Directory ©, ProQuest . U.S.A.)

(Indexed & Lister)

repernicus, Poland)

(Indexed & Listed & Josearch Bib, Japan)

(indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJINDEX))

(UGC Approved List No. 41243)

संपादक

आचार्य (डॉ०) शीलक राम



Attacted to be true co

Dayanand Mahila Mahavidyala

v (rukshetra (Harvana)

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

साहित्व में क्रांतिकारियों का समाजवारी विन्तन चढी बाबार में लड़की' में पित्सत्तात्मक समाव पाणियोव व्याकरण में वज - वेदपाल आर्थ . The Indian Women Writers and their Contribution in the World Literature ਵਨੀਤਾ ਕਾਵਿ ਅਤੇ ਨਾਰੀ-ਸੰਵੇਦਨਾ ਡਾ. ਜੋਨੀਆ ਰਾਨੀ ਮੋਹਨਜੀਤ ਦਾ ਸਿਰਜਣਾਤਮਿਕ ਸਫ਼ਰ ਪਰਮਿੰਦਰ ਕੋਰ ਡਾ. ਹਰਚਰਨ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਟਕਾਂ ਦੇ ਸਮਾਜਕ ਸਰੋਕਾਰ ਭਾ.ਕੁਰਪ੍ਰੀਤ ਕੋਰ ਸਮਕਾਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਵਲ : ਕਥਾਗਤ ਪਰਿਪੇਖ ਛਾ: ਬਲਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਭਕਤ ਰਵਿਦਾਸ ਭਾਣੀ ਵਿੱਚ ਮੁਕਤੀ (ਬੇਗਮਪੁਰੇ) ਦਾ ਸਕੱਲਪ: ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸਦੰਦਰ ਵਿੱਚ प्. गुरुतीड मिथा • बाह्मिक कर्मकाण्ड और स्त्री - डॉ॰ जय सिंह • केतन पिंपबापुर : एक बहुमुखी व्यक्तितल - डॉ॰ चवा दारोंडे · Impact of Goods and Service Tax (GST) on Micro, Small and Med Enterprises (MSMEs) - Parvinder Singh \* A Blady on Cuality of Work Life and Organizational Committee Middle-Level Employees In Net Solution Company (City Covernment: Introduction and it's beposts

lo Wher IQAC

Dayanand Mahila Mahavidyala Kurukshetra

Attested to be true copy

Principal ayanand Mahila Mahavidyala Kurukshetra (Haryana)





international Refereed किनान' अनामाधीय विषयं जोन (1854 2223-722)

वर्ष १, अंक ३३

(9.11. 1060 1064)

UGC List No.41243 Impact Factor: 4,012

विक्रमी सम्बत्: 2076 (बनवरी मार्च 2019)

ਵਨੀਤਾ ਕਾਵਿ ਅਤੇ ਨਾਰੀ-ਸੰਵੇਦਨਾ

डा. मेहीना उसी भक्तिमहोट पृक्षेत्रव बी भेड़ बस्त्र वत्वमेउत

क्ष भारते प्राच ਵਨੀਤਾ ਕਾਵਿ ਵਿਚਲੀ ਨਾਰੀ ਸਾਰੀ ਪਦਾਰਥਕ ਸੁੱਖ ਸਹੂਲਤਾਂ ਦਾ ਸੁੱਖ ਹੱਢਾਉਣ ਦੀ ਥਾਂ ਆਜਦੀ ਤੇ ਸਟੈ-ਇੱਛਾ ਭਰਪੂਰ ਜੀਵਨ ਜੀਉਣ ਦੀ ਚਾਹਵਾਨ ਹੈ। ਉਹ ਮਰਦ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ, ਮਿੱਬਿਹਾਸ, ਤਰਕ, ਵਿਵੇਕ, ਰਿਸਤਿਆਂ, ਬੁੱਧੀ, ਦਲੀਲ੍ਹ ਅਤੇ ਰਸਮਾਂ ਰਿਵਾਜ਼ਾਂ ਆਦਿ ਸਭ ਅੱਗੇ ਪ੍ਰਸਨ ਚਿੰਨ ਖੜ੍ਹੇ ਕਰਦੀ ਹੋਈ ਨਾਰੀ ਦੀ ਸਵੈ-ਇੱਛਾ ਅਤੇ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦੀ ਵਕਾਲਤ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਇਉਂ ਵਨੀਤਾ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਚੇਤੰਨਸ਼ੀਲ ਨਾਰੀ ਦੀ ਹੋਦ ਕਾਰਜ਼ਸ਼ੀਲ ਹੈ।

ਮੂਖ ਸ਼ਬਦ : ਰਸ਼ਮ-ਰਿਵਾਜ, ਵਿਗਿਆਨਕ, ਦ੍ਰਿਸ਼ਟਕੈਣ, ਕਾਵਿ-ਰਚਨਾ, ਚੇਤੰਨਸੀਲਤਾ ।

ਨਾਰੀ-ਸੀਵੇਦਨਾ ਨਾਰੀ ਅਤੇ ਸੀਵੇਦਨਾ ਦੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦੇ ਮੇਲ ਤੋਂ ਬਣਿਆ ਹੈ। ਨਾਰੀ ਤੋਂ ਭਾਵ-ਨਰ ਦੀ ਮਦੀਨ, ਇਸਤਰੀ ਅਤੇ ਔਰਤ ਆਦਿ ਹਨ। ਨਾਰੀ ਜਾਂ ਇਸਤਰੀ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਤੀ ਤੇ ਸਮਾਜ ਦਾ ਇਕ ਅਤਿ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਅੰਗ ਹੈ। ਵਿਗਿਆਨਕ ਇਸ਼ਟੀਕੈਣ ਤੋਂ ਵੀ ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਵੇਖਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਇਹ ਸਪੱਸਟ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਨਾਰੀ ਦੀ ਹੋਦ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਸ੍ਰਿਸਟੀ ਦੀ ਹੋਦ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ । ਸ੍ਰਿਸਟੀ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਪਿੱਛੇ ਨਾਰੀ ਦੀ ਅਹਿਮ ਭੂਮਿਕਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਨਾਰੀ-ਸੰਵੇਦਨਾ ਦੇ ਸਾਬਦਿਕ ਅਰਥਾਂ ਤੇ ਸੰਕਲਪ ਨੂੰ ਜਾਨਣ ਵੱਲ ਰੁਚਿਤ ਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਉਦੋਂ ਵੀ ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਸੰਵੇਦਨਾ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਸ਼ਬਦ ਹੈ। ਸੰਵੇਦ ਤੋਂ ਭਾਵ ਹੈ– ਗਿਆਨ, ਜਾਣਨਾ, ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਮਝਣਾ, ਸੰਵੇਦਨਾ। ਸੰਵੇਦਨਾ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜ਼ਣਨ ਦੀ ਕ੍ਰਿਆ ਨਾਲ ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਜੋ ਯਥਾਰਥ ਦਾ ਬੋਧ ਕਰਾਉਣ ਵਾਲੀ ਇਕੋ-ਇਕ ਸਕਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਰੀ ਦੇ ਬਹੁ ਪਾਸਾਰੀ ਅਨੁਭਵ ਦੀ ਗ੍ਰਹਿਣਸੀਲਤਾ ਅਧਵਾ ਅਭਿਵਿਅਕਤੀ ਦਾ ਨਾਂ ਹੀ ਨਾਰੀ ਸੰਵੇਦਨਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਇਸ ਨੂੰ ਕਵਿ ਦੇ ਨਾਲ ਜੋੜ ਦਿੰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਉਦੋਂ ਇਹ ਨਾਰੀ ਦੀ ਉਸ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਕ, ਸਮਾਜਿਕ ਤੇ ਆਰਥਿਕ ਸਥਿਤੀ ਦਾ ਪੋਸ਼ਿਕ ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਜੋ ਰੂਪਾਂਤਰਣ ਦੀ ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਆ ਵਿਚੋਂ ਗੁਜ਼ਰ ਕੇ ਕਾਵਿ ਵਿਚ ਪ੍ਰਗਟ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਸਮੁੱਚੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਜਦੋਂ ਨਾਰੀ ਦੀਆ ਸ਼ਹੀਰਕ, ਮਾਨਸਿਕ, ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਕ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਤੇ ਮਜ਼ਬੂਰੀਆਂ ਅਧਵਾ ਉਸ ਦੇ ਜੀਵਨ ਅਨੁਭਵ ਦੀਆਂ ਵਿਭਿੰਨ ਪਰਤ ਕਵਿ-ਰਚਨਾ ਵਿਚ ਰੂਪਾਂਤਰਿਤ ਹੋ ਕੇ ਪੇਸ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ ਤਾਂ ਉਹ ਨਾਰੀ-ਸੰਵੇਦਨਾ ਦਾ ਹੀ ਪ੍ਰਗਟਾਉ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਆਪਣੇ ਪੋਜ ਪੇਰ ਵਿੱਚ ਅਸੀਂ ਵਨੀਤਾ ਦੇ ਕਾਵਿ ਨੂੰ ਆਧਾਰ ਬਣਾ ਕੇ ਨਾਰੀ-ਸੰਵੇਦਨਾ ਨੂੰ ਪੇਸ ਕਰਨ ਦੀ ਕੈਸਿਸ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ।

ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਵਨੀਤਾ ਕਾਵਿ 'ਸੁਪਨਿਆਂ ਦੀ ਪਗਡੰਡੀ' ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ 'ਪਹਿਰ ਘੜੀਆਂ' ਤੱਕ ਨੂੰ ਨਾਰੀ-ਸੰਵੇਦਨਾ ਦੀ ਵਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਵਿਚਾਰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਸਾਨੂੰ ਇਸ ਗੱਲ ਦਾ ਗਿਆਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਵਨੀਤਾ ਕਾਵਿ ਵਿਚ ਨਾਰੀ-ਸੰਵੇਦਨਾ ਦੇ ਵਿਭਿੰਘ ਪੰਜਾਰ ਬੜੇ ਭਰਵੇਂ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਉਸ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸਮੁੱਚੇ ਕਾਵਿ ਵਿਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਤ੍ਰਾਸਦਿਕ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਵਿਭਿੰਨ ਪਾਸਾਰਾਂ ਨੂੰ ਭਰਵੇਂ ਰੂਪ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕਰਕੇ ਉਸ ਦੀਆਂ ਮਨੋਤਾਵਨਾਵਾਂ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਵਨੀਤਾ ਕਾਵਿ ਦੀ ਵਿਲਖੱਣਤਾ ਇਸ ਗੱਲ ਵਿਚ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਨੇ ਆਪਣੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਵਾਂਗ ਮਰਦ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਕਰੀ ਦੀ ਤਰਸਯੋਗ ਤ੍ਰਾਸਦਿਕ ਅਵਸਥਾ ਦਾ ਬਿਆਨ ਕਰਕੇ ਕਿਸੇ ਡੂੰਘੀ ਵੇਦਨਾ ਨੂੰ ਨਹੀਂ ਜਗਾਇਆ ਸਗੋਂ ਵਨੀਤਾ ਆਧੁਨਿਕ ਨਾਰੀ ਨੂੰ ਜਾਗਰੂਕ ਅਵਸਥਾ ਅਥਵਾ ਚੇਤੰਨ ਨਾਰੀ ਵਜੋਂ ਪੇਸ਼ ਕਰਕੇ ਇਕ ਚੇਤੰਨਸ਼ੀਲ ਨਾਰੀ ਦੀ ਹੋਂਦ ਦਾ ਤਿੱਖਾ ਅਹਿਸਾਸ ਕਰਵਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਉਸ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਨਾਰੀ ਦੱਬੀ, ਕੁੱਚਲੀ, ਬੇਵੱਸ, ਕਮਜ਼ੇਰ ਜਾਂ ਅਬਲਾ ਨਾਰੀ ਨਹੀਂ ਖ਼ਲਕਿ ਸਵੈ ਨਿਰਭਰ ਅਤੇ ਸਵੇਂ ਚੇਤੰਨ ਨਾਰੀ ਹੈ: ਜਿਵੇਂ :

Attested to be true copy

Principal Dayan. lahila Mahavidyala Kurus (Haryana) 1060

ਦਾਦੀ ! ਤੂੰ ਸਾਂਤ ਕੇ ਰੱਖ ਉਹ ਪਿਉ ਦਾਦੇ, ਪੜਦਾਦੇ ਵਾਲਾ ਸੰਦੁਕ ਮੈਂ ਇਸ ਸੰਦੂਕ ਦੀ ਛਣਕਾਰ 'ਚ ਰਤਾ ਵੀ ਨਹੀਂਉਂ ਵਰਚਣਾ ਤੇਰੀ ਨੂੰਹ ਜਾਣਦੀ ਕਿ ਤੇਰੀ ਪੋਤੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਗਹਿਣਿਆਂ ਦੇ ਸਿੰਗਾਰ ਤੋਂ ਹੈ ਬਾਗੀ ਤੇ ਮੈਨੂੰ ਕਤਈ ਨਹੀਂ ਚੰਗੇ ਲਗਦੇ ਇਹ ਤੇਰੇ

Dayanana Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

चिन्तन अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक शोध-पत्रिका (जनवरी-मार्च 2019)

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Year: 8 Issue: 31

Jan.-March 2019

www.chintanresearchjournal.com

यतेमुद्धि स्वराज्ये ISSN: 2249-2976

+ampact Factor : 4.005

(Art, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects) (Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest, U.S.A.)

(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland) (Indexed & Listed at : Research Bib, Japan) (Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJINDEX))

(UGC Approved List No. 41241)

(International Refereed)

# Pramana Research Journal

Edwin-Chief Acharya Shilak Ram



Acharya Academy Bharat ISO 9001:2008

Attested to be true copy

Principal
Payanand Mahila Mahavidyala
Kuruksheira (Haryana)

Mener

Jayanand Mahila Mahavidyalaya Gurukshetra

ः संस्कृत महाकाव्या म उत्सव-महारसय	
र्जाः विविन	901-904
• शिवानी के उपन्यासों में चित्रित नारी	
– वीना • वीन दलाक : एक फ्वलंत मुद्दा	905-910
- प्रतीपा कमारी	911-914
- दक्षितों में उभरती राजनीतिक पहचान	211-914
<ul> <li>अनिल</li> <li>लोहारू रिवासत में आर्य समाज आन्दोलन का योगदान</li> </ul>	915-918
- कविता राठी	Didn a.v.
<ul> <li>बाह्मणवादी समाज व्यवस्था : महात्मा फुले का विश्लेषण</li> </ul>	919-922
– महेन्द्र सिंह	923-927
• आभार्य पं गंद दुलारे वाजपेयी का आसोचनात्मक दृष्टिकोण	
- मोहित	928-930
• महामना मालवीय एवं महात्मा गांधी की विचारघारा और सिद्धांत : एक नवीन द्	
<ul> <li>नवीन जैन</li> <li>नारी मुक्ति आंदोलन में ज्योतिबा फुले की मुमिका</li> </ul>	931-934
<ul> <li>नारा मुक्त आरालन म ज्यातमा फुल का मूमका</li> <li>जगतीरा</li> </ul>	
• रविदास की सामाजिक चेतना	935-937
- बलजीत सिंह	938-946
<ul> <li>पत्रकारिता में अम्बेड्कर का योगदान</li> </ul>	944-940
- नरेश कुमार	947-950
<ul> <li>मेघदुत में प्रयुक्त भावार्थक कृदन्त पदों का विवेचन</li> <li>सीमा ग्रेनी</li> </ul>	
The Parent Child Relationship in the Scarlet letter of Nathanii Hawthorn	951-954
- Savita	955-958
· The Manital Relationship in The Scarlet Letter of Nathanial Hawthorne	
- Parveen	959-962
Financial Inclusion in Haryana: A Case Study of Barwala Town     Manak Hans, Rekha	Market Company
AResearch on Significant Contribution of Physical Education and Sports A     Review	963-966
7111011011	ACCIVILIES :
- Dr. Rekha Rani	967-973
ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਨਾਰੀ ਸੰਵੇਦਨਾ	
ਮੰਜਿਲਾ ਰਾਈ	974-976
਼ ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ ਜੇਤੂ: ਮੋਹਨਜੀਤ (ਜੀਵਨ ਦੀ ਝਲਕ) ਪਰਮਿੰਦਰ ਕੌਰ	
	977-983
ੂ 'ਜਾਪੁ ਸਾਹਿਬ' ਬਾਣੀ ਦੇ ਪਰਿਪੇਖ ਵਿੱਚ ਕੋਸ਼ੀ ਇਕਾਈਆਂ ਦੀ ਸ਼ਬਦ ਬਣਤਰ ਜਸਵਿੰਦਰ ਕੋਰ	984-988
, ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਸੰਗੀਤ ਅਤੇ ਲੋਕ ਸੰਗੀਤ : ਅੰਤਰ ਸਬੰਧ	304*309
	989-992
਼ ਸੱਤ ਰਾਮ ਉਦਾਸੀ ਕਾਵਿ ਦਾ ਜੁਝਾਰਵਾਦੀ ਪਰਿਪੇਖ	444.040
ਡਾ. ਸੋਨੀਆ ਰਾਨੀ	993-998

Attested to be true c

Pincipal
Enand Mahila Mahavidyala
h shetra Haryana)

Convener IQAC Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra





UGC Approved No. 41241 Impact Factor: 4.005

Research Journal (ISSN: 2249-2976)
Year-8, Issue-31 (Jan.-March 2019) (Page No. 993-998)

#### ਸੰਤ ਰਾਮ ਉਦਾਸੀ ਕਾਵਿ ਦਾ ਜੁਝਾਰਵਾਦੀ ਪਰਿਪੇਖ

ਛਾ. ਸੋਨੀਆ ਰਾਨੀ ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਡੀ. ਐਨ. ਕਾਲਜ ਕੁਰੂਕਸਤਰ

ਜੇਹ ਆਲੇਪ ਸਾਹ

ਪੁੱਖ ਸਾਹੇ ਉਦਾਸੀ ਕਾਵਿ ਦੇ ਜੁਝਾਰਵਾਦੀ ਪਰਿਪੇਖ ਬਾਰੇ ਇੱਥੇ ਵਿਸਤ੍ਰਿਤ ਚਰਚਾ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਕੁੱਝ ਪੱਖਾ ਬਾਰੇ ਅਸੀਂ ਵਿਚਾਹ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ ਵਿਚ ਅਸਮਰਥ ਵੀ ਰਹੇ ਹਾਂ। ਚਰਚਾ ਨੂੰ ਸਮੇਂਟਦੇ ਹੋਏ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਦੇਸ਼, ਸਾਮਹਾਜ, ਪਾਰਲੀਮਾਨੀ ਪ੍ਰਬੰਧ, ਸ੍ਰੇਣੀਗਤ ਸੰਘਰਸ ਆਦਿ ਸੰਕਲਪਾ ਨੂੰ ਉਦਾਸ਼ੀ ਦੀ ਰਚਨਾਤਮਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਆਪਣੇ ਕਲਾਵੇਂ ਵਿਚ ਲੈਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾਂ ਨਾਇਕ ਦੇ ਪ੍ਰੈਫਣਾ ਸ੍ਰੇਤ ਵਜੋਂ ਪ੍ਰਸਤ੍ਤ ਕਰਨ ਸਮੇਂ ਇਤਿਹਾਸ, ਸਿੰਮਿਹਾਸ ਦੇ ਨਾਇਕਾ, ਸੰਤਾ, ਭਗਤਾ, ਯੋਧਿਆ, ਸੂਰਬੀਗ ਅਤੇ ਸਿੱਖ ਗੁਰੂਆਂ ਨੂੰ ਸੰਕਲਪਿਤ ਕਰਦਿਆਂ ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਸ੍ਰੇਣੀ ਸੰਘਰਸ਼ ਦੇ ਨਜਰੀਏ ਤੋਂ ਪੁਨਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ।

ਮੁਖ ਸ਼ਬਦ : ਰਚਨਾਤਮਕ ਦ੍ਰਿਸਟੀ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸੁਤੰਤਰਤਾ, ਸਮਾਜਿਕ -ਆਰਥਿਕ ਸਮਾਨਤਾ ।

ਆਪੁਨਿਕ ਦੇਰ ਵਿਚ ਕਈ ਰਾਜਨੀਤਿਕ, ਧਾਰਮਿਕ, ਸਮਾਜਿਕ, ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਅਤੇ ਧਾਰਮਿਕ ਲਹਿਰਾ ਚੱਲੀਆ ਹਨ। ਪੰਜਾਬੰ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਇਹਨਾ ਲਹਿਰਾ ਦਾ ਮੁਢਲਾ ਦੇਰ ਜਿੱਥੇ ਵਧੇਰੇ ਕਰਕੇ ਧਾਰਮਿਕ ਸੀ, ਉੱਥੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਵੀ ਸੀ। ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਦੀਆਂ ਲਹਿਰਾ ਜਾਂ ਅੰਦੋਲਨ ਧਰਮ ਅਧੀਨ ਰੱਲਣ ਦੀ ਥਾਂ ਵਧੇਰੇ ਸਮਾਜਿਕ ਜਾਂ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਰੂਪ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਦੀਆਂ ਗਈਆਂ। ਇਸ ਦੇਰ ਵਿਚ ਸਿੱਧੇ ਧਾਰਮਿਕ ਤੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਲਹਿਰਾ ਦਾ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਜਰ ਸਮਾਰਾਜ ਦੇ ਵਿਰੋਧ ਅਤੇ ਸੁਤੰਤਰਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਵੱਲ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸੰਧਤ ਰਿਹਾ, ਉੱਥੇ ਨਾਲ ਹੀ ਵੀਹਵੀ ਸਦੀ ਦੇ ਆਰੰਭ ਤੋਂ ਹੀ ਅਜਿਹੀਆਂ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਲਹਿਰਾ ਵੀ ਆਰੰਭ ਹੋਈਆਂ ਜੋ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸੁਤੰਤਰਤਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਸਮਾਜਿਕ-ਆਰਥਿਕ ਸਮਾਨਤਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਆਪਣਾ ਮੁੱਖ ਉਦੇਸ਼ ਸਿੱਥ ਕੇ ਚਲਦੀਆਂ ਹਨ। ਮਾਰਕਸਵਾਦ-ਲੈਨਿਨਵਾਦ ਇਹਨਾ ਲਹਿਰਾ ਦਾ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਵਿਚਾਰਧਾਰਕ ਆਧਾਰ ਸੀ। ਭਾਰਤ ਵਿਚੋਂ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾ ਦੇ ਜਾਣ ਪਿੱਛੇ ਜਿੱਥੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਆਜਾਦੀ ਨੂੰ ਅਸਲੀ ਰੂਪ ਵਿਚ ਸਮਾਜਿਕ, ਆਰਥਿਕ ਲਹਿਰਾ ਵਿਚ ਨਿਹਿਤ ਸਮਝਿਆ ਜਾਣ ਲੱਗਿਆਂ, ਉੱਥੇ ਇਹਨਾਂ ਲਹਿਰਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਦਾਅਪੋਚਕ ਪੱਧਰ ਉੱਤੇ ਕਈ ਵਿਚਾਰ ਦ੍ਰਿਸਟੀਗੋਰਰ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਖ਼ਾਸ ਤੇਰ 'ਤੇ ਮਾਰਕਸਵਾਦ-ਲੈਨਿਨਵਾਦ ਦੇ ਨਾਲ ਚੀਨੀ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਆਗੂ ਦੇ ਸਾਧੀ ਸ਼ੁਰੂ ਹੁੰਦੀ ਅਤੇ ਦੂਫੇੜ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਹੁੰਦੀ। ਇਸੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਧੀਨ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਵੀ 1961 ਵਿਚ ਜਿਹੜੀ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਲਹਿਰ ਦੇ ਪ੍ਰੇਦੇ ਹੋਇਆਂ, ਉਸ ਦਾ ਮੁੱਦ ਪੱਛਮੀ ਬੰਗਾਲ ਦੇ ਕਸਬੇ ਨਕਸਲਬਾੜੀ ਤੋਂ ਬੱਝਿਆਂ, ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਆਮ ਲੋਕਾਈ ਵਿਚ ਇਹ ਲਹਿਰ ਨੁਸ਼ਾਲਬਾੜੀ ਦੇ ਨਾ ਨਾਲ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹੁੰਈ ਜਦੋਂ ਕਿ ਇਹ ਲਹਿਰ ਇਕ ਅਜਿਹੀ ਮਾਰਕਸਵਾਦੀ-ਲੈਨਿਨਵਾਦੀ ਅਤੇ ਮਾਉ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾਂ ਤੇ ਆਪਰਿਤ ਲਹਿਰ ਸਿੰ ਰਾਜਨੀਤ ਲਹਿਰ ਸ਼ਿੰਦ ਸ਼ੁਰੂ ਦੇਰ ਸ਼ੁਰੂ ਦੇਰ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਨਕਤੰਤਰ ਵਿਚ ਵਿਸਵਾਸ਼ ਰੱਖਣ ਦੀ ਥਾਂ ਹਥਿਆਰਥੇਦ ਇਨਕਲਾਬ ਰਾਹੀ ਸਮਾਜਿਕਆਰਪਿਕ ਸੁਬਾਪਨਾਂ ਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਲੈ ਕੇ ਤੁਰੀ ਸੀ।

ਇਸ ਲਹਿਰ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਧੀਨ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾ ਨੇ ਕਲਮ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਹਥਿਆਰ ਬਣਾਇਆ। ਜਿੱਥੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਦੱਖ-ਵੱਖ ਪ੍ਰਾਤ ਵਿੱਚ ਸਾਹਿਤ ਜਿਰਜਣਾ ਹੋਈ, ਉੱਥੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾ ਨੇ ਵੀ ਆਪਣਾ ਭਰਪੂਰ ਯੰਗਦਾਨ ਪਾਇਆ। ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਹੋਰ ਰੂਪਾ ਨਾਲੇ ਕੁਟਿਤਾ ਦੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸ਼ਿਰਜਣਾ ਹੋਈ। ਸਾਹਿਤ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਇਸ ਲਹਿਰ ਨੂੰ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਨਾ ਦਿੱਤੇ ਗਏ ਪਰ ਜੁਝਾਰ ਕਵਿਤਾ ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਵਾਰੇ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਹੋਇਆ। ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਜਗਤ ਵਿਚ ਵੀ ਭਾਵੇਂ ਕਈ ਨਾਮ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਰਹੇ, ਪਰ ਵਧੇਰੇ ਕਵੀਆਂ ਦੀ ਜੁਝਾਰ ਜਨਕਾਨੀ ਕਵੀ ਦੇ ਤੇਹ 'ਤੇ ਪਛਾਣ ਸਥਾਪਿਤ ਹੋਈ। ਸੰਤ ਰਾਮ ਉਦਾਸੀ ਇਸ ਲਹਿਰ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਇਕ ਬੜਾ ਹੀ ਸ਼ਹਿਰਦਾ ਤੇ ਖਾੜਕੂ ਕਵੀ ਸੀ। ਉਦਾਸੀ ਦੀ ਸਰੋਦੀ ਕਵਿਤਾ ਲੋਕਾਈ ਦੇ ਮੂੰਹ ਚੜਨ ਦੀ ਸਮੱਰਥਾ ਰੱਖਣ ਕਰਕੇ ਉਸਨੂੰ ਹੈਰਨਾ ਸਮਕਾਲੀ ਜੁਝਾਰ ਕਈਆਂ ਨਾਲੋਂ ਵਿਲੱਖਣਤਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਉਦਾਸੀ ਨੇ ਗਜਲਾ, ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਅਤੇ ਗੀਤਾ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ। ਉਸ ਦੇ ਗੀਤ ਪਿੰਡਾ ਵੇਂ ਇੱਕਣਾ ਤੇ ਅਖਾੜਿਆਂ ਵਿਚ ਵਿਸ਼ਾਲ ਜਨ-ਸਮੂਹ ਵੱਲੋਂ ਸੁਣੇ ਅਤੇ ਪਸੰਦ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਰਹੇ ਹਨ। ਇੱਥੇ ਹੀ ਬੱਸ ਨਹੀਂ ਉਸਦੇ ਗੀਤ ਤੋਂ ਵਿਆਹ ਵੇਲੇ ਘਰਾ ਵਿਚ ਦੀ ਵਜਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ ਅਤੇ ਕੋਠੇ ਉੱਤੇ ਮੰਜੀਆਂ ਜੋੜ ਕੇ ਲਾਉਡ ਸਪੀਕਰ ਰਾਹੀ ਸਾਰੇ ਪਿੰਡ ਨੂੰ ਵੀ ਸੁਣਾਏ ਜਾਂਦੇ ਸਨ। ਵਿਆਹ ਵਰਗੇ ਹੁਲਾਸ਼ਮਈ ਸਮਾਗਮ ਉੱਤੇ ਕ੍ਰਾਤੀਕਾਰੀ ਗੀਤ ਚੱਲਣ ਤੋਂ ਉਸ ਦੀ ਪ੍ਰਸਿੱਧੀ ਦਾ ਅੰਦਾਜ਼ਾ ਲਗਾਇਆਂ ਜ਼ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਉਦਾਸੀ ਨੇ ਚਾਰ ਕਾਵਿ-ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਝੱਲੀ ਪਾਏ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਲਹੂ ਭਿੱਜੇ ਬੱਲ (1971), ਸੈਨਤਾ (1976)

ਪੈ-ਪ੍ਰਕਰੀਆ ਸੀਖਾ (1978) ਅਤੇ ਲਹੂ ਤੋਂ ਲੱਹੇ ਤੱਕ (1979) ਸਾਮਿਲ ਹਨ।

ਸੰਤ ਰਾਮ ਉਦਾਸੀ ਨੇ ਬਹੁਤ ਗਰੀਬ ਕਿਰਤੀ ਘਰਾਣੇ ਵਿਚ ਜਨਮ ਲੈ ਕੇ ਅਧਿਆਪਕੀ ਦਾ ਕਿੱਤਾ ਅਪਣਾਇਆ ਜਿਹੜਾ ਉਸ ਨੂੰ ਬੇਤੰਨ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਸਮਾਜਕ ਕੀਮਤਾ ਦੇ ਦਮਨੀ ਰਵੇਂਈਏ ਅਤੇ ਯੁੱਗ ਬੰਧਕ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਨੂੰ ਚੇਤੰਨ ਰੂਪ ਵਿਚ ਸਮਝਣ ਵਿਚ ਸਹਾਇਕ ਹੋਇਆ। ਘਰ ਦੀ ਭੈੜੀ ਹਾਲਤ, ਆਲੋ-ਦੁਆਲੇ ਦੇ ਕਿਰਤੀ ਕਿਸਾਨਾ ਦੀ ਮੰਦਹਾਲੀ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਦੀ ਨਿੱਘਰਦੀ ਜ ਰਹੀ ਹਾਲਤ ਨੇ ਉਹਦੀ ਵਰਗ ਚੇਤਨਾ ਨੂੰ ਨਿਖਾਰਿਆ। 1261 ਵਿਚ ਅਧਿਆਤਮਵਾਦੀ ਹੁਚੀਆ ਅਧੀਨ ਲਿਖਣਾ ਆਰੰਭ ਕਰਕੇ ਅਤੇ ਇਸ ਦੀਆਂ ਅੰਧ-ਵਿਸ਼ਵਾਸੀ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਨੂੰ ਸੁਚੇਤ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਜਾਣ/ਸਮਝ ਕੇ ਉਦਾਸੀ ਨੇ ਮਾਰਕਸਵਾਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨੂੰ ਅਪਣਾਇਆ।

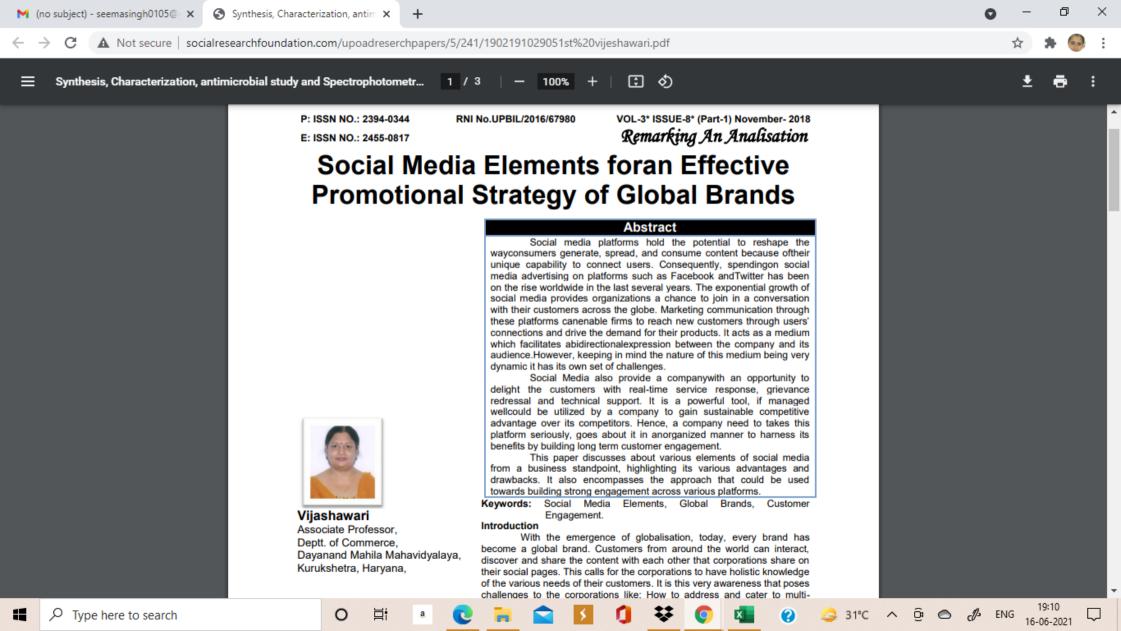
Pramana Quarterly Research Journal • January-March (2019)

993

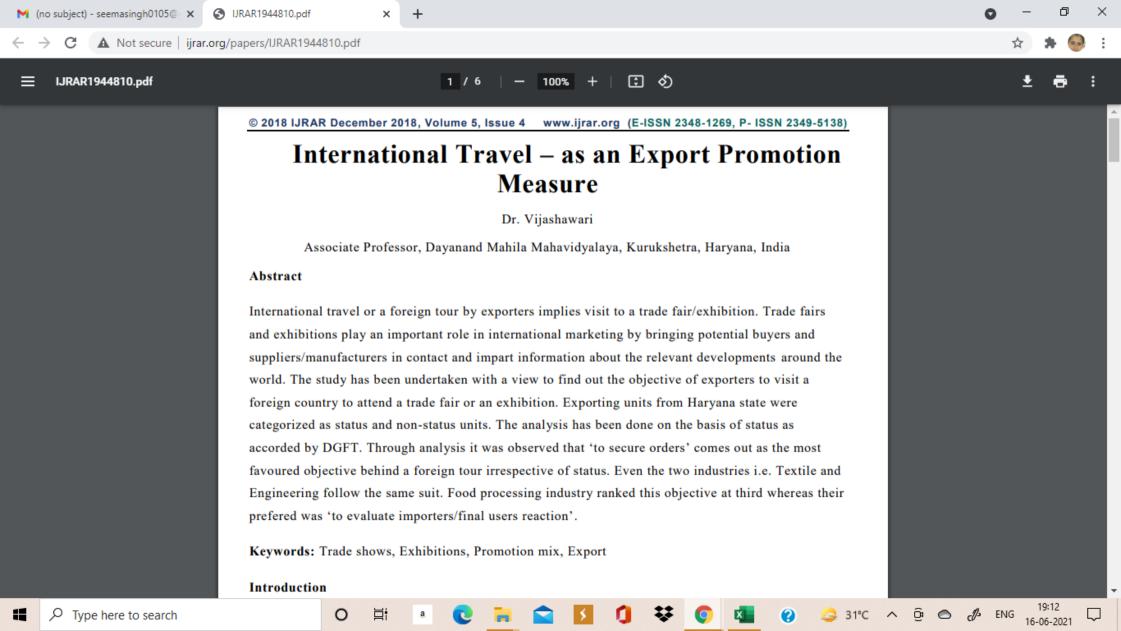
Attested to be true copy

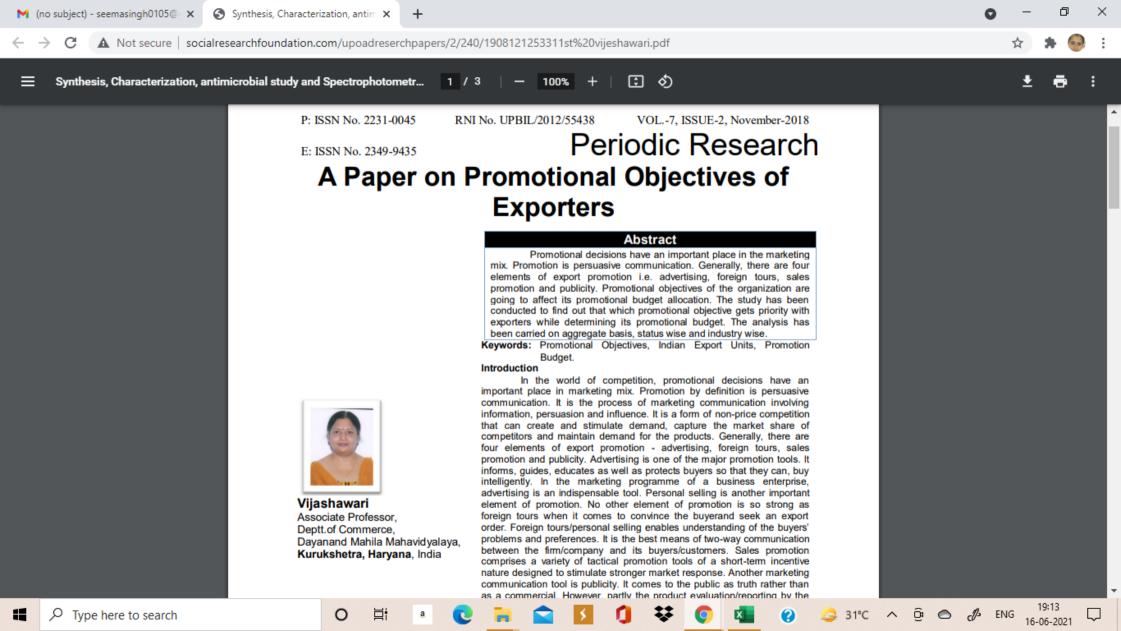
Principal Pananand Mahila Mahavidyala K. A. Kanatira Haryana) Conveyer
IQAC
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra

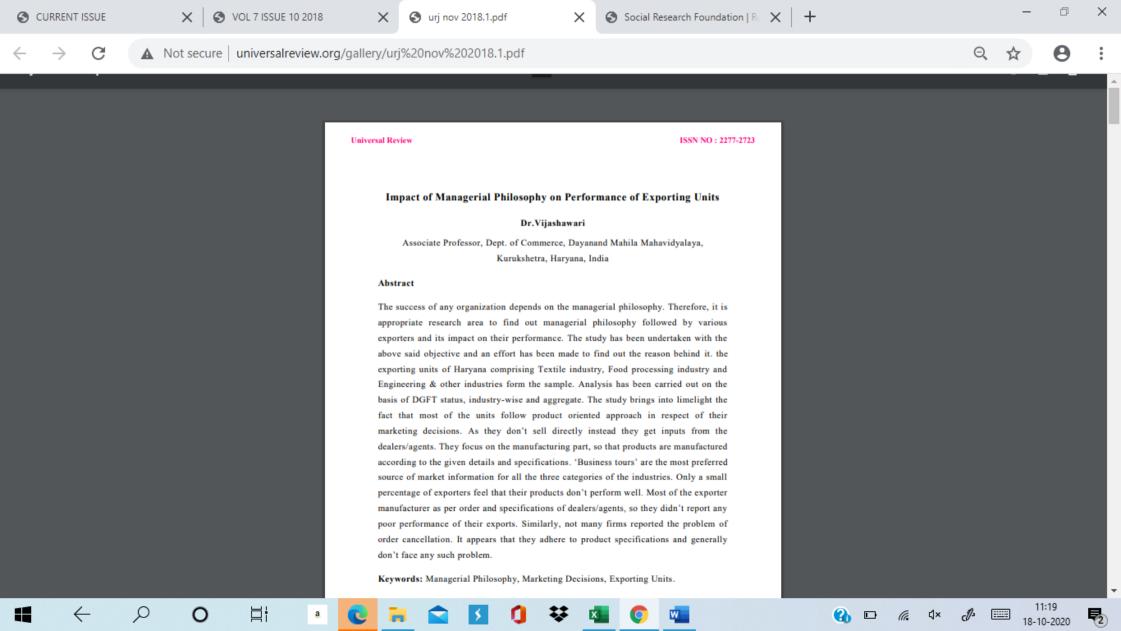
# Session: 2018 (online Papers)



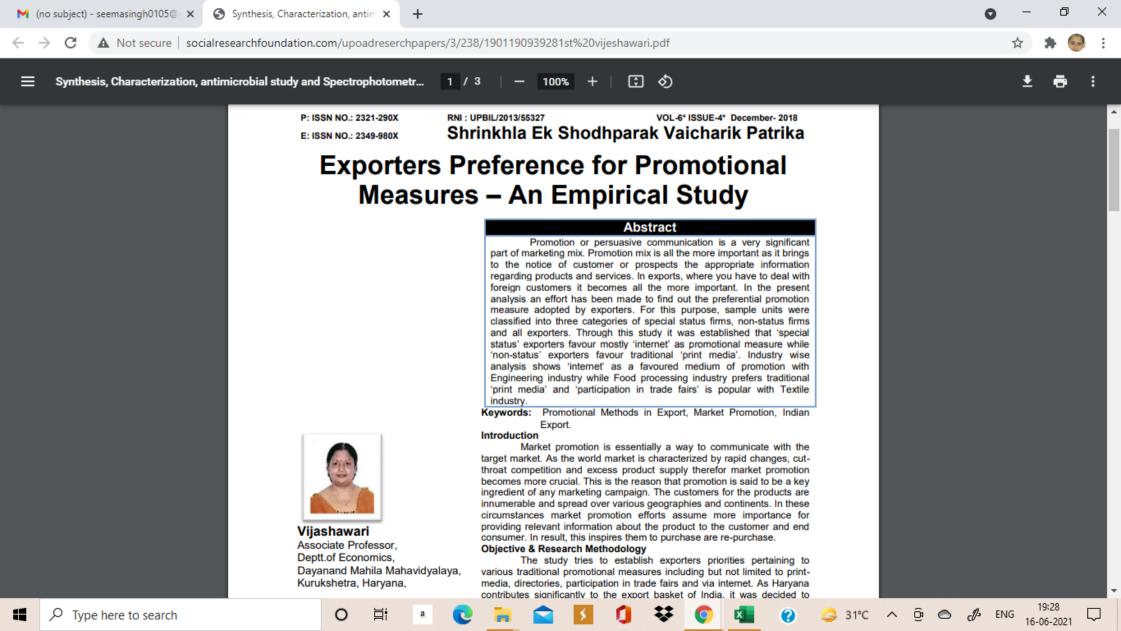




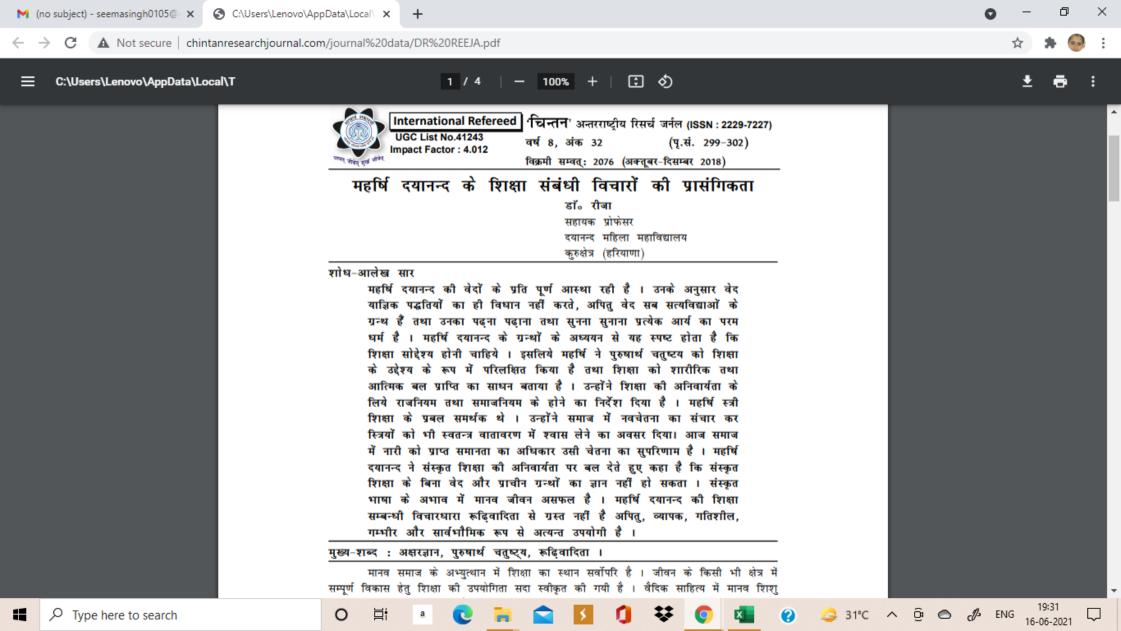


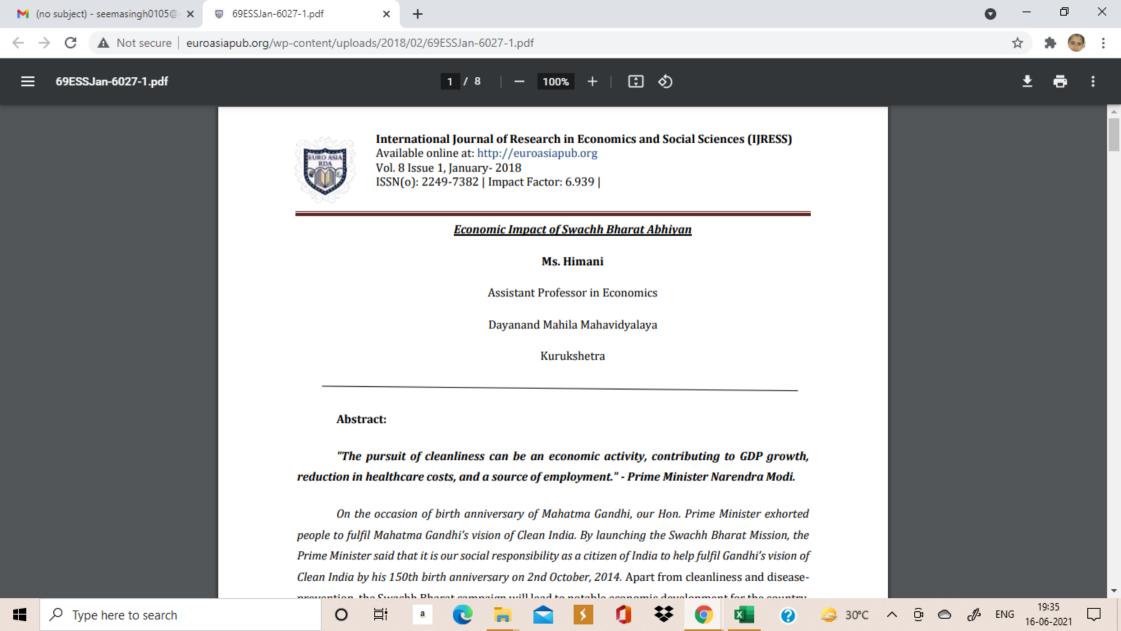


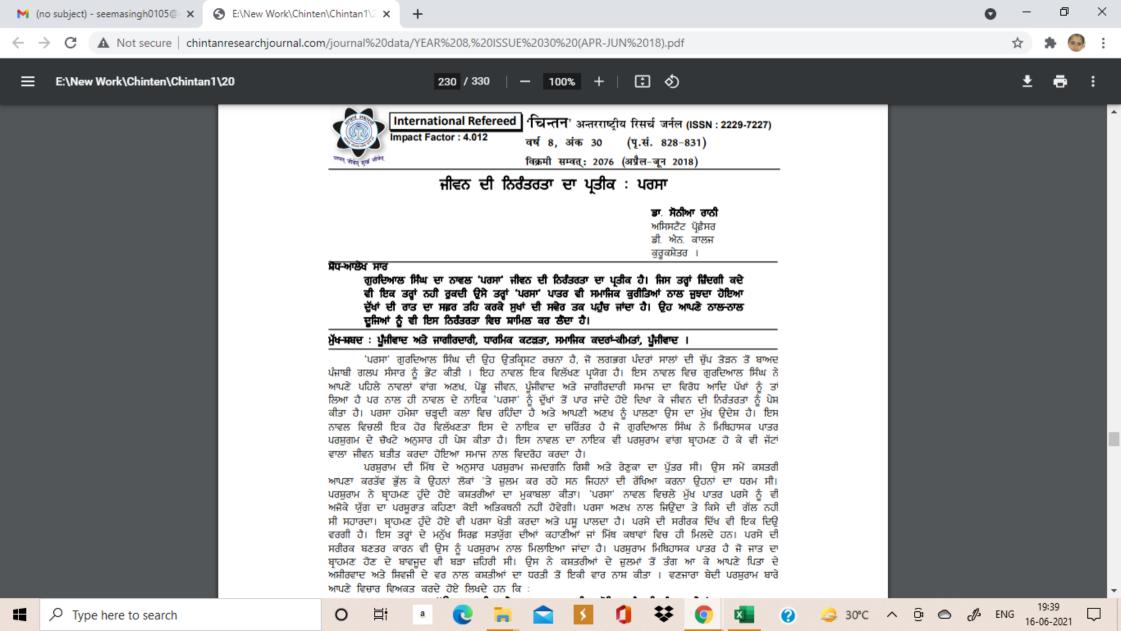


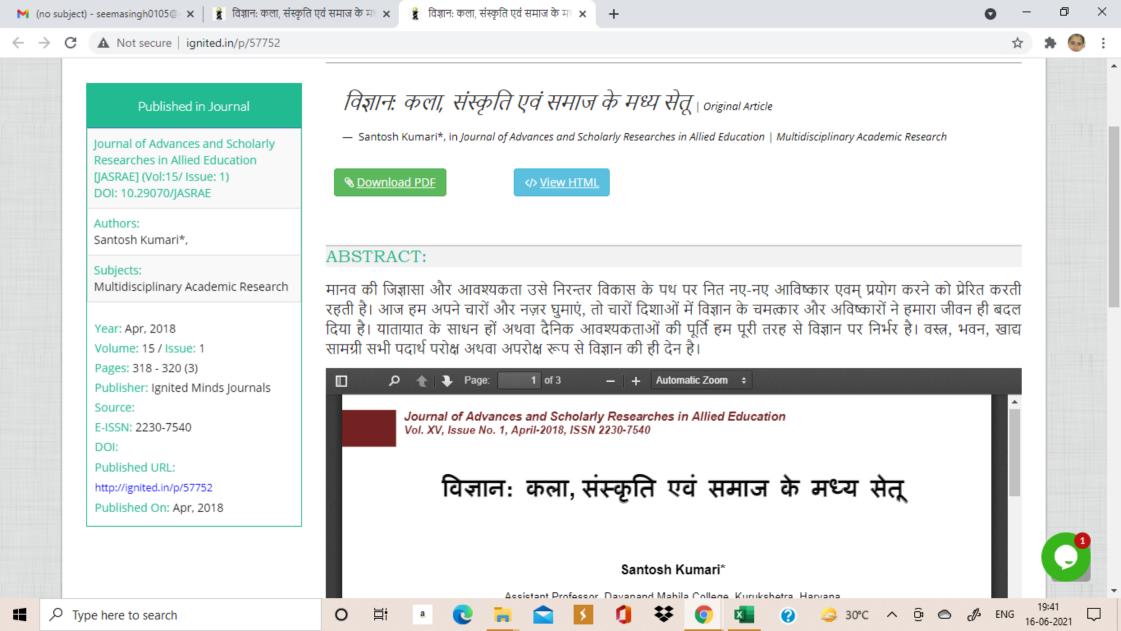


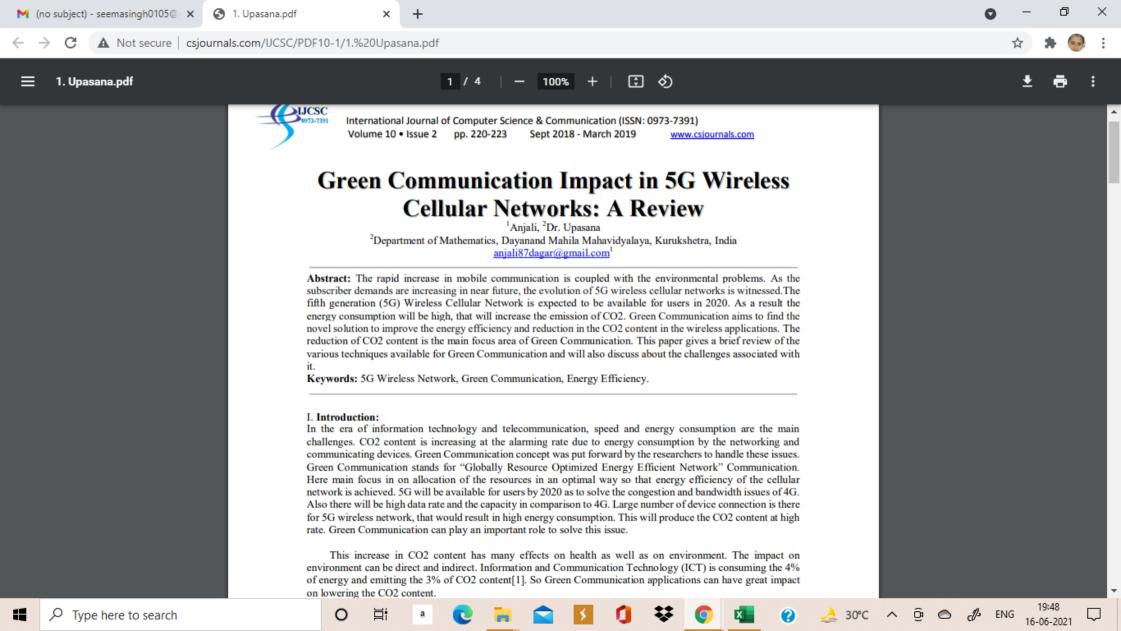












# Session: 2018 (offline Papers)





साहित्य, शिक्षा, वाणिज्य, मानविका एवं विज्ञान विषयों की

मुल्यांकित

अन्तरराष्ट्रीय शोध पत्रिका (मासिक) Impect Factor - 2.003

ISSN 2347 : 4041

CA-19 8 2018

स्तामी हरिखोम दाम पिछाजक मागदशक्तः बात्सल्य बाटिका क्रक्षेत्र

श्री जय मर्गवल सिंगला लेखक एवं साहित्यकार कुरुखेत्र

झॅ. मुधीर बुभार, पूर्व निदेशक हरिवाणा संस्कृत अकादमी पंचनुला

ग्रॅ. कृषा वद स्त्रामः, पूर्व कृतवादेव रुतक्षेत्र विश्वविकत्तर. बुरुक्षेत्र

डॉ. रोहताश गुप्ता, पूर्वाञ्चस प्राणी शास्त्र विमाग, तु. वि. कुरुक्षेत्र

श्री प्रदीप शर्मा समानसेवी दिख्ली

मार्गदर्शकः

डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, विपानावस्पति पूर्व सदस्य, मार्तीख दर्शन अनुसंधान परिषद पूर्व अध्यक्ष ,दर्शन् विमाग, कु. वि. कुरुक्षेत्र

मुख्य संरक्षक

डॉ. बी. के. कुठियाला

कुलपति, मालनलाल चतुर्वेदी यत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल अध्यत, हरियाणा उच्च शिक्षा परिषद

प्रधान संपादक डॉ. विजय दत्त शर्मा

प्रबन्ध संपादक डॉ. गणेश दत्त डॉ. तर्सेम कौशिक डॉ. प्रवीण वत्स

संपादक डॉ.केवल कृष्ण

उप संपादक डॉ.अशोक कुमार

शोध चेतना अकादमी

'वसुधैव जुटुम्बकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.)

email: sanskarchetna@gmail.com www.sanskarchetna.com सम्पादकीय कार्यालयः संपादक, संस्कार चेतना, 153, सैक्टर- 30, कुरुक्षेत्र, हरियाणा 136118

A मंजीकृत कार्साल्य अंसिक्क, संस्कार चेतना, सिरसमा, बीड मथाना, कुरुक्षेत्र, हरियाणा 136131

Principal

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

1	
1	2
	-
	1

	मानवताबाद के परिप्रेक्ष्य में दलित साहित्य	
	डॉ. संगम वर्मा	390-394
	लोक साहित्य में महिला चित्रण	
	यशवन्ती	395-399
	'गोदान' उपन्यास में इक्कीसवीं सदी के किसान का चित्रण	
	अनीता देवी	400-405
	उदय भानु 'हंस' के काब्यू में राष्ट्रवाद के स्वर	
	अमनदीप कौर	406-409
	डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र की आलोचना दृष्टि	
	डॉ॰ अनु <b>ष कुमार पटेल</b>	410-412
	समकालीन नोध और धूमिल के काव्य में मूल्य चेतना	
	डॉ. दिग्विजय कुमार शर्मा	413-417
	National Human Right Commission As a Model of Human Right Protect	ion:
	Indian Scenario	
	Vivek Khatkar	418-421
۰	Reciprocal Teaching in an English Classroom: A Blue Print	
	Dr. Kalpana Thakur, Jagdeep Kumar	422-427
0	Child Marriage Prohibition in India: Historical Developments	400 404
	Reena The History of Demostic Violence, Heye We Learnt Any Leasens?	428-434
	The History of Domestic Violence: Have We Learnt Any Lessons?  Dr Surinder Kaur	435-444
	Tibet as a factor in Sino-Indian Relations	435-444
	Dr. Shalini Sharma	445-450
0	रामदरश मिश्र के काव्य में रस-योजना	
	संजय कुमार	451-455
	The Growing Menace of Child Abuse : How to Curb It?	101 100
	Dr. Neelam Rathee	456-461
	ਗੁਰਸ਼ਰਨ ਸਿੰਘ ਦੇ ਨਾਟਕ 'ਬੇਗਮੋ ਦੀ ਧੀ' ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ ਅਤੇ ਸ਼ਕਤੀਕਰਨ	
•	ਕਮਲਮੀਤ ਕੌਰ	462-464
4	ਇੱਕ ਝਾਤ ਰੂਮਾਂਤਰਣ ਹੋ ਰਹੇ ਪੰਜਾਬੀ ਸਭਿਆਚਾਰ 'ਤੇ	405 407
	ਤਨਵੀਰ ਕੌਰ 'ਨੈਨਸੀ'	465-467
	निराला के काव्य में लोक चेतना	
	सन्नी कुमार	468-473
	युवा शक्ति की प्रेरणा-स्वामी विवेकानन्द	
	डॉ॰ मनजीत कौर	474-477
•	Rag Pickers at Greater Warangal Muncipal Corporation - Prob	lems and
	Administrative Response	470 407
	Dr. Devath Suresh	478-487

Attested to be true copy

Principal Dayanand Mahila Mahavidyala Kurukshetra (Haryana) Convene IQAC Dayanand

Convener
IQAC
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra

युवा शक्ति की प्रेरणा-स्वामी विवेकानन्द

हाँ भनजीत कौर सहायक प्रोफंसर हिन्दी-विभाग (अध्यक्ष) दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

संक्षेपिका

स्वामी विवेकानन्द राष्ट्रीय चेतना को आगृत करने वाले, मानवता का संदेश देने वाले युगनायक है । उनके विचार युवाओं के लिये प्रेरणा स्त्रोत हैं । स्वामी जी ऐसे व्यक्तितल से परिपूर्ण हो जोकि न केवल भारत के लिये बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिये एक आदर्श है । अपनी अद्भुत तीव बुद्धि, प्रतिभा, ज्ञान, विवेक, संयम, आदर्श आदि चारित्रिक गुणों से परिपूर्ण स्वामी विवेकानन्द जी सदैय भारतवर्ष का गौरत रहेंगे । वे ऐसे युवा वर्ग का निर्माण करना चाहते थे जिनमें लीह-शक्ति विद्यमान हो, स्वस्थ मस्तिष्क हो, बिना भैदभाव के एक दूसरे के प्रति प्रेम व विश्वास रखते हों । प्रस्तुत शोध पत्र में उन सभी आयामों व चारिद्धिक गुणों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है जोकि स्वामी विवेकानन्द जी ने भारतीर्य युवा वर्ग को सीखाये ।

स्वामी विवेकानन्द : एक संक्षिप्त परिचय : स्वामी विवेकानन्द भारत देश के ऐसे महापुरुषों में में एक है जिन्होंने भारत को दासता से मुक्त करवाने के लिये कड़ा संघर्ष किया । इन्होंने न केवल भारतीयों का बल्कि सम्पूर्ण मानवता का गौरव बढ़ाया । इनका जन्म 12 जनवरी 1863 ई॰ में कोलकाता के एक क्षत्रिय परिवार में श्री विश्वनाथ दत्त के घर हुआ । वे कलकत्ता हाई कोर्ट में प्रसिद्ध वकील ये ।उनके बचपन का नाम नरेन्द्र था । इन्होंने 1889 में मैट्रिक की परीक्षा पास की । फिर इन्होंने 'जनरल असेम्बली' नामक कॉलंज में प्रवेश लिया तथा वी.ए, की परीक्षा पास की । इन्होंने ब्रह्म समाज का भी अध्ययन किया । 17 वर्ष की आयु में स्वामी जी संत राष्ट्रकृष्ण परमर्हस के सम्पर्क में आये । इन्हों दिनों इनके पिता का देहान्त हो गया। नीकरी न मिलने के कारण इनको काफी आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा । वे कोलकाता छांड्कर वरादनगर के आश्रम में रहने लगें। यहाँ उन्होंने शास्त्रों व अन्य धर्म ग्रंथों का अध्ययन-विश्लेषण किया । सन् 1893 में अमेरिका के शिकागों शहर में विश्व धर्म सम्मेलन में इन्होंने भाग लिया । वहां अपने प्रभावशाली वकतव्य से सभी को प्रभावित कर दिया । वो वहां से 4 वर्ष बाद लीटे । इस दौरान उन्होंन वहां धर्म का प्रचार-प्रयार किया । वापिस लौटने पर उनका भव्य स्वागत किया गया । 4 जुलाई 1902 ई॰ को ग्रंथि 9 बजे 39 वर्ष की अल्यायु में 'ॐ' ध्वान के उच्चारण के साथ उन्होंने अतिम श्वास ली ।

भारत देश की महान विभृतियों में स्वामी विवेकानन्द की गणना सदैन होती रहेगी।

पुवाओं हेतु स्वामी विवेकानन्द के अनमोल संदेश: वर्तमान समय न केवल वैज्ञानिक युग हैं बिल्क संक्रमण युक्त व भागदीड़ का युग हैं। ग्रत्येक व्यक्ति कम मेहनत करके अधिक प्राप्त करने की उम्मीद संक्रमण वुक्त व भागदीड़ का युग हैं। ग्रत्येक व्यक्ति कम मेहनत करके अधिक प्राप्त करने की उम्मीद स्वता है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी संक्रमण का दौर चल रहा है। भौतिकवाद भी अपनी चरम पराकाष्ठा पर है। भारतीय संस्कृति का अस्तित्व भी खतरे में दिखाई दे रहा है। भारत की नौजवान भीड़ी को पश्चिमी

Attested to be true copy

Scanned with CamScanner

Principal
Dayanand Mahila Mahavidyala
K kshatra Haryana)

donumer IQAC

Dame - - d Mahila Mahavidyalaya

2011



संस्कार वेतना संस्कार <mark>वेतना</mark>

ISSN 2347-4041

प्रथमां विश्ववारां तां संस्कृतिं स्वयुगानुगाम्। संस्कारचेतना धत्ते वसुधैव सुदुम्बक्षम्।।

ew 07 3/85-07 and, 2018 UGC NO. 41232 साहित्य,शिक्षाः वाणिज्य, मानविकीः, विज्ञान एवं सभी विषयों की

## सरकार चेतना

संस्कार चेतना संस्कार वेतना संस्कार वेतना संस्कार चेतना संस्कार चेतना संस्कार वेतना संस्कार चेतना संस्कार चेतना संस्कार चेतना संस्कार वेतना संस्कार चेतना संस्कार चेतना संस्कार चेतना संस्कार् चेतना संस्कार चेतना संस्कार् चेतना संस्कार चेतना संस्कार चेतना रंखार् चेतना

अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका (मासिक) INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

> प्रधान संपादक विजय दत्त शर्मा, पृवं निदेशक रियाणा प्रथ अकारमी, पंतकता

संपादक डॉ. केवल कृष्ण



े द्याचीतम् । स्थ्वेत स्ट्र**न्स** 

शोध चेतना अकादमी वसुधैव कुटुम्वकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.)

Attested to be true copy

https://mail.google.com/mail/u/0/#inbox?projector=1

Principal
Dayanand Mahila Mahaviduala
Kurukshetta

Mahavidyalaya I Q A C Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

1/1

14		
′ T	he protagonist's progression in Margaret Atwood's The Edible Wo Neelam Rani hanging Role of Women in Indian Secretary	- 機
1. 0	Neelam Rani Neelam Rani	man
	Dr. Meena Kumasi	
	Karamyeer Singh	256-284
✓ V	Vorking Capital and its Significance  Dr. Nisha Jain	265-268
V .	गारतीय संस्कृति और मृल्य	269-273
V (	डॉ॰ सुरेश चन्द्र Canal Irrigation in Haryana: An Overview	274-278
	Reetu उषा प्रियंवदा की कहानियों में भारतीय एवं अमेरिकी नारी	279-282
	शिवल रानी मुक्ता की कविताओं में नारी-विमर्श	283-286
	पुष्पा	287-295
1	माया मिली ना राम में चित्रित समर्पण भाव अर्चना रानी	296-299
1	सूचना प्रौद्योगिकी (इंटरनेट) और हिन्दी भाषा डॉ. राजेश कुमार	300-304
1	हिन्दी पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका	
1	सना फिरदौस श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित स्थितप्रज्ञ के लक्षण : एक विवेचन	305-307
	Luxmi प्रेमचन्द के उपन्यासों में सामाजिक दर्शन	308-310
1	न्हें चोन मिंद	311-313
1	Attitude Towards Internet Usage in Youth	314-318
1	Dr. Anupama Sihag Teacher Effectiveness among Senior Secondary School Teacher in	
	their occupational Stress and Gender PK Patnaik, Ruchi Rani	319-326
1	Intensity of Rainfall Variation in Dudle District of Management	327-335
	Pramod Suresh Chaudhan ਬਹੁ ਪਰਤਾਂ, ਬਹੁ ਅਰਥਾਂ ਦਾ ਸੁਮੇਲ ਜਰਨੈਲ ਸਿੰਘ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀਕਾਤਮਕ ਕਹਾਣੀ '	<b>ರ</b> ವು
100	ਡਾ. ਰਛਪਾਲ ਸਿੰਘ ਉੱਪਲ	336-,339
	ਕ ਰੂਜ ਰਿਪਨਿਆ ਨਿਪਨ-ਰਿਸਾਨੀ ਜੀਵਨ	

Attested to be true copy

Principal
Dayanand Mahila Mahavidyala
Korukshetra (Haryana)

ਆਰਥਿਕ ਮੰਦਹਾਲੀ ਵਿਚ ਘਿਰਿਆ ਨਿਮਨ-ਕਿਸਾਨੀ ਜੀਵਨ ('ਇਕ ਰਾਮਾਇਣ ਹੋਰ' ਦੇ ਸੰਦਰਡ ਵਿਚ)

ਡਾ. ਸੋਨੀਆ ਰਾਨੀ

340-344

Content IQAC Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

Punjabi

ALL D

WAT WIT

11 11

West O

T THE

n fat putter

ता रा

ਜਦਾ ਹੈ

ातील हिं

विसा है

W COU

्रेड्ड wi

ने गाउ

ਹੀ ਰਹੇ।

MOTERIAN.

वि जी करित

ਪਰਿਵਾਰਨ

ਹਿਹਾ ਹੈ।

रेस्टी ।

GNOTA

धन वा भड़ेब ह

de in

होंगे त

Cwo

ी है।

Py 63

O E

i was Defin

ी हा

मेनकार

संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यकित शोध पत्रिका वर्ग र. अंक र. मार्च अत

ਆਰਥਿਕ ਮੰਦਹਾਲੀ ਵਿਚ ਘਿਰਿਆ ਨਿਮਨ-ਕਿਸਾਨੀ ਜੀਵਨ ('ਇਕ ਰਾਮਾਇਣ ਹੋਰ' ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿਚ)

> ਡਾ. ਸੋਨੀਆ ਹਾਨੀ ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ ਡੀ ਐਨ ਕਾਲਜ ਕੁਰੂਕਸੇਤਰ ।

ISSN-2347-4041

ISSN: 2147 Car Impact Factor 15

ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਟ-ਜਗਤ ਵਿਚ ਇਕ ਯਥਾਰਥਵਾਦੀ ਨਾਟਕਕਾਰ ਵਜੋਂ ਪ੍ਰਵੇਸ ਕਰਨ ਵਾਲਾ ਅਜਮਰ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਨਿਵੇਕਲਾ ਹਸਤਾਖਰ ਹੈ, ਜੋ ਅਚੇਤ ਤੌਰ 'ਤੇ ਪੇਂਡੂ ਕਿਸਾਨੀ ਦੇ ਸੰਕਟਮਈ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਚੇਤਨਾ ਦਾ ਆਧਾਰ ਬਣਾਉਂਦਾ ਹੈ। ਐਲਬੇ ਨੇ ਭਾਵੇਂ ਪਹਿਲਾਂ ਕਵਿਤਾ, ਨਾਵਲ, ਕਹਾਣੀ ਦੀ ਰਚਨਾ ਦੇ ਸੰਪਾਦਨਾ ਵੀ ਕੀਤੀ ਪਰ ਉਸਨੂੰ ਨਾਟਕ ਲਿਖਕੇ ਹੀ ਤ੍ਰਿਪਤੀ ਮਹਿਸੂਸ ਹੋਈ, ਕਿਉਂਕਿ ਨਾਟਕ ਹੀ ਇਕ ਆਪਣੇ ਹੈ ਜਿਸ ਰਾਹੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦਾ ਯਥਾਰਥ ਲੋਕਾਂ ਤੱਕ ਸਫ਼ਲਤਾ ਸਹਿਤ ਪਹੁੰਚ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਸੰਚਾ ਜਨਮ ਨੇਵਨਾ ਉਹ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਅਤੇ ਫਿਰ ਆਲੋ-ਦੁਆਲੇ ਤੋਂ ਹੀ ਚੇਤਨਾ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਐਲਡੇ ਇਕ ਅਜਿਹੇ ਹੀ ਨਿਮਨ ਪੇਂਡੂ ਕਿਸਾਨੀ ਪਰਿਵਾਰ ਦਾ ਜੰਮਪਲ ਹੈ ਜਿਸਨੇ ਛੋਟੇ ਕਿਸਾਨੀ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਸਿਗਫ਼ ਲਾਫ਼ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡੇ 'ਤੇ ਹੰਢਾਇਆ ਵੀ ਹੈ। ਚੌਗਿਰਦੇ ਦੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚਲੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਦੁਸ਼ਾਸ਼ਿਆਂ ਤੰਗੀਆਂ ਤੁਰਸੀਆਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਖੁਸ਼ੀਆਂ-ਗਮੀਆਂ ਤੇ ਜਜਬੇ ਹੀ ਐਲਖ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਦਾ ਅਫ਼ੈਟਵਾਂ ਅੰਗ ਹੈ ਇਕ ਹਨ। ਇਹ ਚੌਗਿਰਦਾ ਹੀ ਔਲਖ ਦੇ ਮਨ ਦੇ ਚਿਤਰਪਟ ਉੱਤੇ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਕਰ ਗਿਆ ਅਤੇ ਪੇਂਡੂ ਫ਼ੈਟੀ ਜ਼ਿਜ਼ਵੇਂ ਜੀਵਨ ਦਾ ਇਹੀ ਦੁਖ਼ਾਂਤਕ-ਅਨੁਭਵ ਸਮਾਂ ਪਾ ਕੇ ਉਸਦੀ ਨਾਟ-ਸਿਰਜਣਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਸਰੋਤ ਬਣ ਗਿਆ।

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਛੋਟੀ ਕਿਸਾਨੀ ਖਾਸ ਕਰਕੇ ਮਾਲਵੇ ਦੇ ਪਿੰਡਾਂ ਦਾ ਜੀਵਨ ਹੈ। ਕਿਸਾਨੀ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਆਉਂਦੀਆਂ ਮੁਸਕਲਾਂ ਤੇ ਗ਼ਰੀਬ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਆਰਥਿਕ ਸੰਕਟ ਭਰਿਆ ਜੀਵਨ ਜਿਸ ਢੰਗ ਨਾ ਆਪਣੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਹ ਹੀ ਉਸਦੀ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਟਕ ਵਿਚ ਇਕ ਵਿਲੱਖਣ ਪਹਿਚਾਣ ਸ਼ਣਵਿ ਹਨ। ਡਾ. ਟੀ. ਆਰ. ਵਿਨੋਦ ਔਲਖ ਬਾਰੇ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਲਿਖਦੇ ਹਨ :

> "ਔਲਖ ਮੁੱਖ ਤੌਰ ਉੱਤੇ ਛੋਟੀ ਕਿਸਾਨੀ ਦੇ ਦੁਖਾਂਤ ਦਾ ਨਾਟਕਕਾਰ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਬਹੁ-ਗਿਣਤੀ ਛੋਟੀ ਕਿਸਾਨੀ ਦੀ ਹੈ ਜੋ ਭਿੰਨ-ਭਿੰਨ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਵਿਚ ਵੰਡੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਪਹਿਵਾਰ ਦੀ ਜੋਦੀ ਜ਼ਮੀਨ ਉੱਤੇ ਸਾਂਝੀ ਪਰਿਵਾਰਕ ਮਿਹਨਤ ਨਾਲ ਜੂਨ ਗੁਜ਼ਾਰਾ ਕਰਦੀ ਹੋਈ ਕਿਸਾਨੀ ਦੀ ਆਰਥਿਕ ਵੰਡ ਲਗਾਤਾਰ ਪਤਲੀ ਪੈਂਦੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਕਿਸਾਨੀ ਦੇ ਆਰਥਿਕ ਆਧਾਰ ਨਿਘਾਰ ਸਮਾਜਕ ਵਿਕਾਸ ਦਾ ਵਸਤੂ ਯਥਾਰਥ ਹੀ ਹੈ ਜੋ ਉਸਦੇ ਨਾਟਕਾਂ ਵਿਚ ਬੜੀ ਸ਼ਿੱਦਤ ਨਾਲ ਆਪਣੀਆਂ ਸੰਸਕ੍ਰਿਤਕ ਪਰਤਾਂ ਸਮੇਤ ਰੂਪਮਾਨ ਹੋਇਆ ਹੈ।"

ਅਜਮੇਰ ਸਿੰਘ ਔਲਖ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਚੇਤੰਨ ਨਾਟਕਕਾਰ ਹੈ ਜਿਹੜਾ ਨਿਮਨ ਕਿਸਾਨੀ ਦੇ ਦੁਖਤ ਹੈ ਲੋਕੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਦਰਸਕ ਵਰਗ ਦੇ ਸਨਮੁਖ ਰੱਖਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਦਰਸ਼ਕ ਨੂੰ ਸੋਚ-ਵਿਚਾਰ ਲਈ, ਕੁੱਝ-ਕਰਨ ਲਈ ਤੇ ਜੋ ਕਹਿਣ ਲਈ ਝੰਜੋੜ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਉਸ ਦੇ ਅਜਿਹੇ ਕਾਰਜ ਨੂੰ ਮੁੱਖ ਰੱਖ ਕੇ ਹੀ ਉਸ ਦੇ ਨਾਟਕ 'ਇਕ ਰਾਜੀਟ ਹੋਰ' ਨੂੰ ਆਧਾਰ ਬਣਾ ਕੇ ਨਿਮਨ-ਕਿਸਾਨੀ ਜੀਵਨ ਦੀਆਂ ਪਰਤਾਂ ਨੂੰ ਉਘਾੜਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਾਗੇ। 'ਇਕ ਰਾਜੀਟ ਹੋਰ' ਨਾਟਕ ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਟ-ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਰੰਗ-ਮੰਚ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਹੀ ਚਰਚਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਕਿ ਕੇ ਅਤੇ ਇਹ ਨਾਟਕ ਸ਼ਹਿਰਾਂ, ਕਸਬਿਆਂ ਤੇ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਅਨੇਕਾਂ ਵਾਰ ਖੇਡਿਆ ਵੀ ਗਿਆ ਹੈ। ਔਲਖ ਨੇ ਇਹ ਨਾਟਕ ਸ਼ਹਿਰਾਂ, ਕੁਸਬਿਆਂ ਤੇ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਅਨੇਕਾਂ ਵਾਰ ਖੇਡਿਆ ਵੀ ਗਿਆ ਹੈ। ਔਲਖ ਨੇ ਇਹ ਨਾਟਕ ਸ਼ਹਿਰਾਂ, ਕੁਸਬਿਆਂ ਤੇ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਅਨੇਕਾਂ ਵਾਰ ਖੇਡਿਆ ਵੀ ਗਿਆ ਹੈ। ਔਲਖ ਨੇ ਇਹ ਨਾਟਕ ਸ਼ਹਿਰਾਂ, ਕੁਸਬਿਆਂ ਤੇ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਅਨੇਕਾਂ ਵਾਰ ਖੇਡਿਆ ਵੀ ਗਿਆ ਹੈ। ਔਲਖ ਨੇ ਇਹ ਨਾਟਕ ਸ਼ਹਿਰਾਂ, ਕੁਸਬਿਆਂ ਤੇ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਅਨੇਕਾਂ ਵਾਰ ਖੇਡਿਆ ਵੀ ਗਿਆ ਹੈ। ਔਲਖ ਨੇ ਇਹ ਨਾਟਕ ਸ਼ਹਿਰਾਂ, ਕੁਸਬਿਆਂ ਤੇ ਪਿੰਡਾਂ ਵਿਚ ਅਨੇਕਾਂ ਵਾਰ ਖੇਡਿਆ ਵੀ ਗਿਆ ਹੈ। ਔਲਖ ਨੇ ਇਹ ਨਾਟਕ

ਰਾਮ ਪ੍ਰਸ਼ੋਤਮ ਸੀਤਾ ਪਤੀ ਬਰਤਾ ਲਛਮਣ ਜਤ ਦਾ ਪੂਰਾ ।

340 Attested to be true copy संस्कार चेतना, अन्तरराष्ट्रीय गूल्यांकित शोध वीका

Principal
Dayanand Mahila Mahavidyala
Kurukshetra (Haryana)

CANDET 1QAC Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

OTHER RESEARCH JOURNALS PUBLISHED By KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA

JOURNAL OF HARYANA STUDIES

**Arts Faculty Building** Kurukshetra University Kurukshetra - 136119 (Haryana)

PRACE IN OTHER DICEST OF INDOLOGICAL STUDIES

Institute of Sanskrit and Incological Studies Karaksherra University Karakshetra - 136119 (Haryuna)

Subscription (annual rates):
India Re 150

Attested to be true copy

A ANY L

Principal Dayanand Mahila Mahavidyala rukshetra /Harvana)



ISSN 0454-6962

### **KURUKSHETRA UNIVERSITY** RESEARCH JOURNAL

(Arts & Humanities)

VOLUME-XLVIII - 2014 (Part-II)

A Refereed Journal



### अवस्त्र शास्त्र वास्त्र अस्त्र वास्त्र अस्त्र अस्त E REPRESENTATION OF THE PARTY O

lick by the Scull's applicant, Service (1976) ("Asia Gradic VIAC Approximation

6455 Tarl 15

August 2018

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

Contents		Page No.
Sr. No. Title & Author		i-vi
Editorial etc.  1. Social Structure and Mechanism in Northern India	Dr. Rajesh Sheokand	1-7
from Seventh to Twelfth Century A. D.  2. Role of Shuddhi Movement to Upliftment of	Dr. Jai Singh	8-14
Untouchables in Punjab (1901-1912)  1 The Begar System in Simla Hill States	Pawan Kumar	15-21
during the Hritish Period  A. Problem of Hhistration in Narrative Art	Ravinder Singh Jasheer Kaur	22-29 30-38
Art Education and its Significance in Haryana     Product Placement in Bollywood Film:	Dalbir Singh .	39-46
Consumerism through Consumption 7. Resilience, Self-efficacy Study Skills of Children with Disabilities in Relation to	Neelu Dhall & Prof. Sushama Sharma	47-58
Perceived Parenting Styles 8 Examination Phobia and Related Psycho-somatic	Dr. Anita Rani	59-65
Problems among Secondary School Students 9. Thomas King's Medicine River:	Virender Pal	66-76
The Balancing Act 10. जिला कुरुक्षेत्र का मुस्लिम समुदाय: सामाजिक एवम्	धर्मवीर सैनी	77-86
धार्मिक जीवन (1947—2001) 11.कुषाणकालीन काष्टशिल्प	हरदीप सिंह	87-91
12. कवि केदारनाथ अग्रवाल की जनपदीय चेतना	गुरनाम सिंह डॉ॰ हरि प्रकाश शर्मा	92-95 96-102
<ol> <li>दर्शनशास्त्र में हिरयाणा का योगदान</li> <li>गुरु रविदास एवं दादूदयाल की वाणी में सामाजिक</li> </ol>	डॉ. हरि ओम फुलिया	103-106
सरोकार' एक तुलनात्मक विवेचन 15. ਡਾ. ਮੋਨੋਜੀਤ ਦੀ ਪੁਸਤਕ 'ਸੱਭੇ ਗੱਲਾਂ ਖੌਟੀਆਂ ਦਾ ਵਿਅੰਗ	ਡਾ. ਕਰਨਦੀਪ ਸਿੰਘ	107-113

16 ਨਵਤੇਜ ਭਾਰਤੀ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਦਾ ਵਿਚਾਰਧਾਰਕ ਪਰਿਪੇਖ	ਬਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ	114-123
<b>ੀ</b> .ਸਾਜ਼ਿਸ਼ਾਂ ਦੀ ਮਹਿਕ : ਅਵਚੇਤਨਾ ਤੋਂ ਚੇਤਨਤਾ ਤੱਕ	ਡਾ. ਸੋਨੀਆ ਰਾਨੀ	124-128 N
18. ਦੇਵਿੰਦਰ ਸੈਫ਼ੀ ਦਾ ਕਾਵਿ-ਜਗਤ	ਬਲਰਾਜ ਸਿੰਘ	129-138
19 ਕੈਲਾਸ਼ ਪੂਰੀ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਨਾਰੀ ਪਰਿਪੇਖ	ਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ	139-145
20 ਵਿਭਿੰਨ ਸਾਹਿਤਕ ਕਲਾਵਾਂ ਦਾ ਸੰਗਮ : ਨਾਟਕ	ਕੁਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ	146-151
21. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਵਿਚ ਸੁਹਾਗਣ ਦਾ ਸੰਕਲਪ	ਡਾ. ਬਲਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਥਿੰਦ	152-161
22.21ਵੀ ਸਦੀ ਦੀ ਪਰਵਾਸੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕਹਾਣੀ ਵਿਚ	ਡਾ. ਸੂਖਵਿੰਦਰ ਕੌਰ ਕੰਵਲ	162-164
ਨਾਰੀ ਸੰਵੇਦਨਾ ਚਿੰਤਨ ਅਤੇ ਚੁਨੌਤੀਆਂ (ਵੀਨਾ ਵਰਮਾ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿਚ)		
23 ਵਰਿਆਮ ਸੰਧੂ ਦੀ ਕਹਾਣੀ "ਸੁਨਹਿਰੀ ਕਿਣਕਾ": ਇਕ ਅਧਿਐਨ	ਬਲਵਾਨ ਸਿੰਘ	165-168
24.ਸੁਖਵਿੰਦਰ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਵਿਚ ਨਾਰੀ ਚੇਤਨਾ ਅਤੇ ਚਿੰਤਨ	ਸਰਵਜੀਤ ਕੌਰ	169-175
25 ਗਰਮਤਿ ਕਾਵਿ ਵਿਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ	ਜਗਮੋਹਨ ਸਿੰਘ	176-179
26.''ਗਲੀਆਂ ਬਾਬਲ ਵਾਲੀਆਂ'' : ਕਲਾਤਮਕ ਅਧਿਐਨ	ਹਰਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ	180-183
27.ਸਿਧ ਗੋਸ਼ਟਿ ਵਿਚ ਸੰਵਾਦ ਕਲਾ – ਇਕ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ	ਜਗਦੀਪ ਸਿੰਘ	184-187
28.ਅਗਰਬੱਤੀ ਕਾਵਿ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ	ਸੋਨੀਆ	188-191
ਜਸਵਿੰਦਰ ਦੀ ਕਾਵਿ ਸੰਵੇਦਨ		
29. ਰਾਮ ਸਰੂਪ ਅਣਖੀ ਦੀ ਕਹਾਣੀ: ਬੇਜ਼ਮੀਨੇ ਤੇ ਛੋਟੀ ਕਿਸਾਨੀ	ਡਾ. ਰਛਪਾਲ ਸਿੰਘ ਉੱਪਲ	192-195
ਦਾ ਆਰਥਿਕ ਸੰਕਟ		

(14)

(vi)

(vii)

Attested to be true copy

Principal JW
Dayanand Mahila Mahavidyala
Kurukshetra Haryana)

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra ਸਾਜ਼ਿਸ਼ਾਂ ਦੀ ਮਹਿਕ : ਅਵਚੇਤਨਾ ਤੋਂ ਚੇਤਨਤਾ ਤੱਕ

ਡਾ. ਸੋਨੀਆ ਰਾਨੀ•

ਅਵਚੇਤਨਤਾ ਅਤੇ ਚੇਤਨਤਾ ਇਕ ਸਿੱਕੇ ਦੇ ਦੋ ਪਹਿਲੂ ਮੰਨੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ । ਅਵਚੇਤਨ ਵਿਚੋਂ ਚੇਤਨਤਾ ਜਨਮ ਲੈਂਦੀ ਹੈ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਐ ਅਨੁਸਾਰ ਜਦੋਂ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਚੇਤਨ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਦੋਂ ਵੀ ਅਵਚੇਤਨਾ ਉਸ ਦੇ ਦਿਮਾਗ਼ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ । ਅਵਚੇਤਨਤਾ ਅਤੇ ਚੇਤਨਤਾ ਦਾ ਰੂਪ ਅੱਡ ਹੈ ਪਰ ਵਾਸਤਵਿਕਤਾ ਦੋਵਾਂ ਦੀ ਇਕੋਂ ਜਿਹੀ ਹੈ । ਚੇਤਨਤਾ, ਅਵਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਪਹੁੰਚ ਜਾਂਦੀ ਹੈ । ਸਾਹਿਤ ਇਹ ਅਵਚੇਤਨਤਾ ਵੀ ਚੇਤਨਤਾ ਜਿੰਨੀ ਕ੍ਰਿਆਸ਼ੀਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ । 'ਸਾਜ਼ਿਸ਼ਾਂ ਦੀ ਮਹਿਕ' ਕਾਵਿ-ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਰਾਹੀ ਵੇਦਵਾਲ ਭਾਟੀਆ 'ਸਨੀ' ਅਵਚੇਤਨਤਾ ਵਿਚੋਂ ਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਤਲਾਸ਼ ਕਰਦਾ ਜਾਪਦਾ ਹੈ ।

'ਸਾਜ਼ਿਸ਼ਾਂ ਦੀ ਮਹਿਕ' ਵੇਦਪਾਲ ਭਾਟੀਆ 'ਸੋਨੀ' ਦਾ ਦੂਜਾ ਕਾਵਿ-ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਹੈ । ਇਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉਹ ਪੰਜਾਬੀ ਕਾਵਿ ਖੇਤਰ ਵਿਚ 'ਜਿਉਦੀਆਂ ਲਾਸ਼ਾਂ' ਨਾਲ ਆਪਣਾ ਮਹੱਤਵਪੂਰਣ ਯੋਗਦਾਨ ਪਾ ਚੁੱਕੇ ਹਨ। ਪਹਿਲੇ ਕਾਵਿ-ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਵਾਗ ਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦੂਜੇ ਕਾਵਿ-ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਨੂੰ ਵੀ ਪੰਜਾਬੀ ਪਾਠਕਾਂ ਵੱਲੋਂ ਭਰਪੂਰ ਹੁੰਗਾਰਾ ਮਿਲਿਆ ਹੈ । 'ਸੋਨੀ' ਸਾਹਿਤ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਭਾਨਵਾਂ ਹਸਤਾਖ਼ਰ ਹੈ ਪਰ ਉਸਦੀ ਅਵਚੇਤਨਾ ਜਦੋਂ ਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਪਹੁੰਚਦੀ ਹੈ ਉਦੋਂ ਵਿਲੱਖਣ ਸ਼ਾਇਰੀ ਜਾਪਦੀ ਹੈ। ਕਾਵਿ ਸੰਪੂਰਨ ਬ੍ਰਹਿਮੰਡ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲੈ ਕੇ ਚਲਦਾ ਹੈ । ਕਵੀ ਦਾ ਮਨ ਅਵਚੇਤਨ ਵਿਚੋਂ ਵੀ ਚੇਤਨਾ ਦੇ ਅੰਸ਼ ਭਾਲ ਲੈਂਦਾ ਹੈ । ਜੇਕਰ ਅਵਚੇਤਨ ਨੂੰ ਪਰਿਭਾਸ਼ਿਤ ਕਰਨ ਦਾ ਉਪਰਾਲਾ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਇਹ ਉਹ ਅਵਸਥਾ ਹੈ ਜਿਹੜੀ ਅਦ੍ਰਿਸ਼ ਵਿਚੋਂ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਆਂ ਹੁੰਦੀ ਹੈ । ਜਦੋਂ ਸਾਡੇ ਮਨ ਅੰਦਰ ਸਥਿਰਤਾ ਪੈਦਾ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉਦੋਂ ਅਵਚੇਤਨ ਵਿਚ ਵੀ ਕੁੱਝ ਨਾ ਕੁੱਝ ਚਲਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ । ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਕਦੇ ਸਥਿਰ ਨਹੀਂ ਰਹਿੰਦਾ ਪਰ ਸਥਿਰਤਾ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਕਿਉਕਿ ਅਵਚੇਤਨਤਾ ਉਸ ਬੰਦ ਫਾਇਸ਼ ਵਾਂਗ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜਿਹੜੀ ਖੁੱਲਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਬਹੁਤੇ ਰਾਜ ਖੋਲ੍ਹ ਦਿੰਦੀ ਹੈ-

ਅਵਚੇਤਨ ਮਨੌਵਿਗਿਆਨ ਦਾ ਕੇਂਦਰੀ ਸੰਕਲਪ ਹੈ । ਆਧੁਨਿਕ ਯੁੱਗ ਵਿਚ ਇਸ ਸੰਕਲਪ ਦੇ ਮਨੌਵਿਗਿਆਨ । ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਅਰਥ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਹੋਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਵੀ ਦਰਸ਼ਨ ਪਰੰਪਰਾ ਵਿਚ ਅਵਚੇਤਨੀ ਧਾਰਨਾਵਾਂ ਅਪਰੋਖ, ਅਚੇਤ ਰੂਪ ਵਿਚ ਖੇਤਰਤੀਬੇ ਰੂਪਾਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਸਨ। ਮਨੌਵਿਗਿਆਨਕ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਇਹ ਸੰਕਲਪ ਇਕ ਵਿਧੀ ਬੱਧ ਰੂਪ ਵਿਚ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਅਰਥਾਂ ਦਾ ਧਾਰਨਾ ਹੋ ਨਿਖ਼ੜਦਾ ਹੈ । ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਮਨੌਵਿਗਿਆਨੀ ਫ਼ਰਾਇਡ ਨੇ ਸਿਧਾਂਤਬੱਧ ਸੁਨਿਸ਼ਚਿਤ ਅਤੇ ਵਿਗਿਆਨਕ ਅਰਥਾਂ ਵਿਚ ਇਸ ਸੰਕਲਪ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕੀਤਾ । ਅਵਚੇਤਨ ਫਰਾਇਡੀਅਨ ਮਨੌਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਨ ਵਿਧੀ ਦਾ ਆਧਾਰ ਅਤੇ ਕੇਂਦਰ ਬਿੰਦੂ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਪਰ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਦੀ ਪੱਧਰ ਤੇ ਹੀ ਸੀਮਿਤ ਨਾ ਰਹਿ ਕੇ ਆਧੁਨਿਕ ਸਾਹਿਤ ਚਿੰਤਨ ਅਤੇ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਗਿਆਨ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਇਸ ਸੰਕਲਪ ਨੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸਥਾਨ ਹਾਸਲ ਕਰ ਲਿਆ ਹੈ।'''

ਸਮਕਾਲੀ ਸਿਧਾਂਤ ਅਤੇ ਵਿਹਾਰ ਵਿਚ ਅਵਚੇਤਨ ਨੂੰ ਮਾਨਵੀ ਵਿਵਹਾਰ ਦਾ ਧੁਰਾ ਮੰਨਦੇ ਹੋਏ ਸਿਰਜਣਾਤਮਕ ਪਹਿਲੂਆਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ । ਅਜੇਕੇ ਪ੍ਰਸੰਗਾਂ ਵਿਚ ਸਥਾਪਤੀ ਅਤੇ ਭਾਰੂ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੇ ਮਨ ਨੂੰ ਗੁਲਾਮ ਬਣਾਉਣ ਵਾਲੇ ਢੰਗਾਂ ਅਤੇ ਕਾਰਜ਼ਾਂ ਨੂੰ ਤਲਾਸ਼ਣ ਲਈ ਅਵਚੇਤਨੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਅਤੇ ਪ੍ਰਕਾਰਜਾਂ ਦੀ ਸੂਝ ਹੋਣੀ ਅਤਿ ਜਰੂਰੀ ਹੈ । ਅਵਚੇਤਨ ਵੀ ਮਾਨਵ ਮਨ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਵਰਗੀ ਚਰਿੱਤਰਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਅਸਤਿਤਵ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਪਰਿਸਥਿਤੀਆਂ ਦੁਆਰਾ ਨਿਰਧਾਰਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ।

ਕਾਵਿਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਤੋਂ ਅਵਚੇਤਨ ਕਵੀ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਬਲਤਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦਾ ਹੈ । ਅਵਚੇਤਨ ਮਨ ਵਿਚ ਜਦੋਂ ਚੇਤਨਤਾ ਆਉਂਦੀ ਹੈ ਉਦੋਂ ਉਸਦੀ ਸਥਿਤੀ ਬਦਲ ਜਾਂਦੀ ਹੈ । ਇਹ ਅਵਚੇਤਨ ਅਤੇ ਚੇਤਨਤਾ ਵਿਚ ਕੜੀ ਵਾਂਗ ਬਣ ਜਾਂਦੀ ਹੈ । ਅਵਚੇਤਨ ਦਾ ਸਿੱਧਾ ਸੰਬੰਧ ਚੇਤਨਤਾ ਨਾਲ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਇਕ ਸਿੱਕੇ ਦੇ ਦੋ ਪਹਿਲੂ ਮੰਨੇ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਅਵਚੇਤਨ ਦੀ ਜਾਂਗ੍ਰਿਤੀ ਉਦੋਂ ਹੋਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਪ੍ਰਬਲਤਾ ਅਵਚੇਤਨ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਨਾਲ ਨਿਹਿਤ ਹੈ । ਜਦੋਂ ਅਵਚੇਤਨ ਅਰਧ ਚੇਤਨ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚੋਂ ਨਿਕਲਦਾ ਹੈ ਉਦੋਂ ਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਪ੍ਰਬਲਤਾ ਵੱਧ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਚੇਤਨਤਾ ਦਾ ਸੋਮਾ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਅੰਦਰ ਛੁਪਿਆ ਯਾਦਾਂ ਦਾ ਇਕ ਪ੍ਰਤਿਬਿੰਬ ਹੁੰਦਾ ਹੈ । ਚੇਤਨਤਾ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਚੇਤਕ ਤੋਂ ਅਗਲੀ ਸਥਿਤੀ ਕਹਿ ਸਕਵੇਂ ਹਾਂ ।ਨ

A Mesdanth die drugs copy

[124]

Content

Dayanand Mahila Mahavidyalay Kurukshetra

Principal
Dayanand Mahila Mahavidas

ਜੇਕਰ ਤੁਸੀਂ ਜਾਣਦੇ ਗ਼ਰੀਬੀ ਦੇ ਦਰਦ ਬਾਰੇ ਫੇਰ ਨਾ ਬਾਲਦੇ ਸੁੱਕੀਆਂ ਰੋਟੀਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਘਰ ਨੂੰ ਰੋਸ਼ਨ ਕਰਨ ਲਈ ਹੁਣ ਮੈਂ ਗ਼ਰੀਬੀ ਨੂੰ ਮਾਰਾਂਗਾ ਫੇਰ ਕੋਈ ਸਾਜ਼ਿਸ਼ ਨਾ ਹੋਵੇ ਮੈਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਗ਼ਰੀਬੀ ਵਿਚ

ਸਾਜ਼ਿਸ਼ਾਂ ਦੀ ਮਹਿਕ ਹੋਰ ਵੱਧ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ।<sup>2</sup>

ਕਾਵਿਤ ਸਤਰਾਂ ਵਿਚ ਸੁੱਕੀਆਂ ਰੋਟੀਆਂ ਨੂੰ ਅਵਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਪਰ ਜਦੋਂ ਘਰ ਮਿਨ ਕਰਨ ਦੀ ਗੱਲ ਪੂਰਨ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਉਦੋਂ ਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਪ੍ਰਥਲਤਾ ਵੱਧ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਕਵੀ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਗ਼ਰੀਬੀ ਨੂੰ ਮਾਰਨ ਵਿਚ ਨਿਹਿਤ ਹੈ। ਪਰ ਜਦੋਂ ਪੂਰਨ ਚੇਤਨਤਾ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲ ਸਾਜ਼ਿਸ਼ਾਂ ਦੀ ਮਹਿਕ ਹੋਰ ਵੱਧ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਕਾਵਿ ਸਤਰ ਦਾ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਕਰੀਏ ਤਾਂ ਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਸਾਡੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆ ਖੜ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇੰਜ ਅਵਚੇਤਨ ਵਿਚ ਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਤਲਾਸ਼ ਹੈ ਜਿਹੜੀ ਕਵਿਤਾ ਨੂੰ ਨਵੇਂ ਆਯਾਮ ਬਖ਼ਸ਼ਦੀ ਹੈ। ਫਰਾਇਡ ਵੀ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੋਇਆ ਚੇਤਨਾ ਨੂੰ ਅਵਚੇਤਨਾ ਦਾ ਪ੍ਰਤਿਰੂਪ ਮੰਨਦਾ ਹੈ। ਜਿਹੜੀ ਪੂਰਨ ਚੇਤਨਾ ਅਤੇ ਅਰਧ-ਅਵਚੇਤਨ ਵਿਚਕਾਰ ਹੈ। ਅਵਚੇਤਨਾ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਕਦੇ ਵੀ ਇਕਹਿਰੇ ਕਾਲਕੁਮ ਅਨੁਸਾਰ ਨਹੀਂ ਵਾਪਰਦੀ ਸਗੋਂ ਇਹ ਬੇਤਰਤੀਬ੍ਰੀ ਵਿਚ ਹੁੰਦੀ ਹੈ-

ਹੁਣ ਆਪਣੀ ਚੁੱਪ ਨੂੰ ਕੇ ਤੂਫ਼ਾਨਾਂ ਦੇ ਆਉਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਸ਼ਾਂਤੀ ਦਾ ਅੰਦੇਸ਼ਾਂ ਬਣਾਈਏ ਇਸ ਖ਼ਾਮੋਸ਼ੀ ਦਾ ਅਰਥ ਬੋਲਦੀ ਭੀੜ ਤੋਂ ਚੰਗਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਖ਼ਾਮੋਸ਼ੀ ਹਮੇਸ਼ਾ ਕੁਝ ਬੋਲਦੀ ਹੈ ।

ਕਾਵਿ ਵਿਚ ਪੂਰਵ ਚੇਤਨਾ ਪ੍ਰਤਿਮਾਨਿਤ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ ਜਿਹੜੀ ਇਕ ਕਾਲਕ੍ਰਮ ਵਿਚ ਨਹੀ । ਇਹ ਵਰਤਮਾਨ ਤੋਂ ਭਵਿੱਖ ਅਤੇ ਭਵਿੱਖ ਤੋਂ ਵਰਤਮਾਨ ਵਿਚ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਮਾਨ ਹੁੰਦੀ ਹੋਈ ਅਵਚੇਤਨਤਾ ਵਿਚ ਚੇਤਨਤਾ ਨੂੰ ਪੈਦਾ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ । ਚੇਤਨਤਾ ਅਵਚੇਤਨਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਬਲਤਾ ਨਾਲ ਖ਼ਾਮੋਸ਼ੀ ਬੋਲਦੀ ਹੈ । ਉਦੋਂ ਅਵਚੇਤਨਤਾ ਵਿਚੋਂ ਲੰਘ ਚੇਤਨਤਾ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਪਹੁੰਚ ਜਾਂਦੇ ਹਨ । ਖ਼ਾਮੋਸ਼ੀ ਦਾ ਅਰਥ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਚੇਤਨਾ ਸਦਕੇ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਤੁਫ਼ਾਨਾਂ ਦੇ ਆਉਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਹਮੇਸ਼ਾ ਥੋੜੀ ਸ਼ਾਂਤੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਖ਼ਾਮੋਸ਼ੀ ਅਵਚੇਤਨ ਹੋ ਕੇ ਵੀ ਚੇਤਨਤਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਤਿਬਲ ਕਰਦੀ ਹੈ–

ਇਹ ਕਿਹੋ ਜਿਹੀ ਖ਼ੁਸ਼ੀ ਹੈ ਮੇਰੇ ਚਿੱਤ ਤੋਂ ਪਾਰ ਮੈਨੂੰ ਬੁੱਤ ਬਣਨ ਤਕ ਮੈਂ ਕਿਵੇਂ ਜਿੰਦਾ ਰਹਾਂਗਾ ਕਿਉਂਕਿ ਮੈਂ ਜਾਣਦਾ ਹਾਂ ਹਿੱਠ ਪਿੱਛੇ ਵਾਰ

[125]

### कुण्वन्तो विश्वमार्यम्

Year 7

Issue 30 (II)

Oct. December 2018

www.pramanaresearchjournal.com

Impact Factor: 4.005



यतेमहि स्वराज्ये

ISSN: 2249-2976

(Art, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland)

(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)

(Indexed & Listed at Indian Journal Index (IJINDEX))

(UGC Approved List No. 41241)

Pramana (International Referred)

Research Journal

Editor-in-Chief va (Dr.) Shilak Ram



Acharya Academy Bharat

ISO 9001:2008

Attested to be true copy

Principal
Davenand Mahila Mahavidyala

IQAC Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

- Manoj Kumar	884-88
• टेलीविचन और हिन्दी भाषा : एक विवेचन - गीता रानी	
	889-89
• हिन्दों साहित्य में रहस्यवाद के पुरोधा : संव कवि कबीर दास जी - अमरनाथ	
• ऐतिहासिक स्रोत के रूप में पुराणों का महत्त्व	894-89
- राकेश कुमार	
Psychological Trauma of Women in Anita Desai's Novels	898-903
- Ashu Devi	
• शीतयुद्ध के बाद भारत की विदेश नीति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	904-907
- Snree Parbha	000 044
Commerce education in India and Challenges of Commerce Edu	908-914
r directi Nutrial	042.040
Concept Development of Plastic Money and Perception of People	Towards Usage o
Internet Banking  - Dr. Parveen	
	919-924
Poverty is Like Punishment for a Crime you Didn't Commit  - Bharti Arora	
Human Resource Planning : Its Nature and Facets	925-929
- Arvin Dangi	
Digital Economy : Challenges & Opportunities	930-939
- Taank Jyoti Santram	940-944
Rights of an accused under India's criminal justice system	
- Shashank	945-948
'तमस' : अंग्रेजी कुटिलता व भारतीय हतनुद्धिता का जीवंत रस्तावेज - नंदिकशोर	
	949-951
नारी विमर्श : प्राचीनकाल से लेकर 'तसलीमा नसरीन' की आत्मकथा 'मुझे	
ਮਨਮੋਹਨ ਬਾਵਾ ਦਾ ਨਾਵਲ 'ਯੁੱਧਨਾਦ' : ਵਿਸ਼ੇਗਤ ਅਧਿਐਨ	952-955
ਭਾ. ਸਵਹਨਜੀਤ ਕੌਰ	956-958
ਪਾਲ ਕੌਰ ਦਾ ਨਾਰੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ	-40-000
ਕਾਨ ਕਰ ਦਾ ਨਾਗ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕਣ ਡਾ. ਸੋਨੀਆ ਗਨੀ	959-963
	200-303
ਲੋਕ ਬੋਲੀਆਂ ਦਾ ਸਿਰਤਾਜ ਪਾਤਰ 'ਛੜਾ'	
ਡਾ. ਰਵਪਾਲ ਸਿੰਘ ਉੱਪਲ	964-967
ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਬਾਣੀ ਵਿਚ ਮਨੁੱਖੀ ਨੈਤਿਕ ਕੁਦਰਾਂ ਕੀਮਤਾਂ ਭਾ. ਨਵੰਤਰ ਸਿੰਘ	968-970
ਅਜੀਤ ਕੋਰ ਦੀ ਸਵੇ-ਜੀਵਨੀ (ਖਾਨਾਬਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਕੂੜਾ-ਕਖਾੜਾ) : ਆਲੰਚਨਾਤਮਕ ਅਧਿਐਨ	
बर्सिंस्त वेत	971-974

Attested to be true copy

Principal Dayanand Mahila Mahavidyala Kuruksheira Haryana) W Cher CAC

Jayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

10/5/2020



Impact Factor: 4.005

The state of the ball

Charles and the

Research Journal (ISSN: 2249-2976) Year-7, Issue-30(II) (Oct-Dec. 2018) (Page No. 959-963)

### ਪਾਲ ਕੋਰ ਦਾ ਨਾਰੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ

ਡਾ. ਸੋਨੀਆ ਰਾਨੀ ਅਮਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫ਼ੰਸਰ ਡੀ. ਐਨ. ਕਾਲਜ ਕਰਕਸ਼ੇਤਰ

ਸ਼ੋਧ ਆਲੇਖ ਸਾਰ :

ਪਾਲ ਕੋਰ ਦਾ ਨਾਰੀ-ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਸੰਵੇਦਨਾ ਭਰਪੂਰ ਹੈ ਜੋ ਨਿਜ ਤੋਂ ਪਰ ਤੱਕ ਦਾ ਸਫ਼ਰ ਤੈਅ ਕਰਦਾ ਪ੍ਰਤੀਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਇਸਤਰੀ ਜਗਤ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਕਈ ਅਜਿਹੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਨੁਕਤਿਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਕਾਵਿ-ਸੰਵੇਦਨਾ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਰਾਹੀਂ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਬਾਰੇ ਸ਼ਾਇਦ ਪਹਿਲਾਂ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਪਾਲ ਕੌਰ ਦੀ ਨਾਰੀ-ਸੰਵੇਦਨਾ, ਨਾਰੀ ਦੀ ਸੁਤੰਤਰਤਾ, ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਅਤੇ ਉਸਦੇ ਅਸਤਿੱਤਵ ਦੀ ਪ੍ਰਸਤੁਤੀ ਕਰਦੀ ਪ੍ਰਤੀਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਮੁਖ ਸ਼ਬਦ : ਕਾਵਿ-ਸੰਵੇਦਨਾ, ਨਾਰੀ-ਸੰਵੇਦਨਾ, ਨਾਰੀ ਦੀ ਸੁਤੰਤਰਤਾ, ਇਸਤਰੀ-ਚੇਤੰਨਤਾ ।

ਮੁੱਢ ਤੋਂ ਹੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ-ਚੇਤੰਨਤਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਰੂਪ ਵਿਚ ਰਹੀ ਹੈ। ਭਾਵੇਂ ਯੂਨਾਨ ਦੀ ਮਹਾਨ ਕਵਿਤਾ ਹੋਵੇਂ ਜਾਂ ਰੋਮਨ ਦੀਆਂ ਵੀਰ ਕਥਾਵਾਂ ਹੋਣ ਸਭ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਦੀ ਗੱਲ ਬੜੇ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ। ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਭਾਰਤੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਰਮਾਇਣ ਜਾਂ ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਹੋਵੇ ਉਸ ਦਾ ਕੇਂਦਰੀਵੀ ਪਾਤਰ ਇਸਤਰੀ ਹੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਹਰ ਇਕ ਯੁੱਗ ਵਿਚ ਸਮਕਾਲੀ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਨੇ ਸਮਕਾਲੀ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਰਤਨਾਂ ਨੂੰ ਸੰਕੇਤਾਮਕ ਰੂਪ ਵਿਚ ਆਪਣੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਵਿਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਪਾਲ ਕੋਰ ਵੀ ਇਕ ਅਜਿਹੀ ਹੀ ਨਵੇਂ ਯੁਗ

ਦੀ ਕਵਿੱਤਰੀ ਹੈ ਜਿਸ ਨੇ ਨਾਰੀ-ਜਗਤ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਨੂੰ ਪਛਾਨਣ ਦਾ ਇਕ ਸਫਲ ਪ੍ਰਯਾਸ ਕੀਤਾ ਹੈ।

<mark>ਪਾਲ ਕੋਰ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਦਾ ਕੇਂਦ</mark>ਰੀ ਵਿਸ਼ਾ ਇਸਤਰੀ ਅਤੇ ਇਸਤਰੀ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਹਨ। ਉਹ ਮੂਲ ਰੂਪ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਦੇ ਦੁੱਖ-ਦਰਦ, ਗ਼ਮ-ਪੀੜ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀਆਂ ਛੁਪੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਮਨ ਦੀਆਂ ਇੱਛਾਵਾਂ ਦਾ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਇਜ਼ਹਾਰ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਹ ਇਕ ਸਮੁੱਚੀ ਔਰਤ ਦੇ ਚਰਿੱਤਰ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਕਰਦੀ ਪ੍ਰਤੀਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮੁੱਢ ਤੋਂ ਹੀ ਔਰਤ ਆਪਣੇ ਹੱਕਾਂ ਅਤੇ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਦੀ ਖ਼ਾਤਿਰ ਲੜਦੀ ਰਹੀ ਹੈ। ਅੱਜ ਦੇ ਵਰਤਮਾਨ ਦੋਰ ਵਿਚ ਵੀ ਔਰਤ ਨੂੰ ਦੋਹਰੀ ਕਿਸਮ ਦੀ ਲੜਾਈ ਲੜਨੀ ਪੈ ਰਹੀ ਹੈ। ਇਹ ਗੱਲ ਬੜੀ ਸਪੱਸ਼ਟ ਰੂਪ ਵਿਚ ਦਿਖਾਈ ਦੇਦੀ ਹੈ ਕਿ ਨਾਹੀ-ਕਾਵਿ ਜਾਂ ਨਾਰੀ ਸੰਵੇਦਨਾ ਕੋਈ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਨਿਵੇਕਲੀ ਕਾਵਿ-ਪਰੰਪਰਾ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਪਾਲ ਕੋਰ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਵੀ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਕਵੀਆਂ ਅਤੇ ਕਵਿੱਤਰੀਆਂ ਨੇ ਨਾਰੀ-ਚਿੰਤਨ ਦੀ ਭਰਪੂਰ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਸ਼ਾਇਰ ਪ੍ਰੋ. ਮੋਹਨ ਨੇ ਪਹਿਲੀ ਵਾਰ ਆਪਣੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਇਸਤਰੀ ਦੇ ਪ੍ਰੇਮ, ਪਿਆਰ ਅਤੇ ਇਸਕ ਦੀ ਗੱਲ ਬੜੀ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਸਤਰੀ ਨੇ ਪਿਆਰ ਅਤੇ ਮੁਹੱਬਤ ਦਾ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਪ੍ਰਗਟਾ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਗੱਲ ਦੀ ਹਾਮੀ ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਭਰਤੀ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਔਰਤ ਦੇ ਮਨ ਦੀਆਂ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਅਤੇ ਪਿਆਰ ਤੋਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਈ ਖੂਬਸੂਰਤ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨੂੰ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਪਲਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਮੁੱਖ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣਾਇਆ ਹੈ। ਪ੍ਰੋ. ਮੋਹਨ ਸਿੰਘ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਸ ਦੀ ਸਮਕਾਲੀ ਕਵਿੱਤਰੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਪੀਤਮ ਨੇ ਵੀ ਨਾਰੀ-ਕਾਵਿ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਸਮੁੱਚੀ ਸਾਹਿਤ ਸਿਰਜਣਾ ਵਿਚ ਔਰਤ 'ਅਤੇ ਔਰਤ ਨਾਲ ਜੁੰਡੀਆਂ ਢੇਰ ਸਾਰੀਆਂ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਕਾਵਿ ਦਾ ਮੂਲ ਹਿੱਸਾ ਬਣਾਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਹੋਰ ਵੀ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵੀ ਹਨ ਜਿਵੇਂ ਡਾ. ਹਰਭਜਨ ਸਿੰਘ, ਪ੍ਰਭਜੋਤ ਕੋਰ, ਮਹਿੰਦਰ ਕੋਰ ਗਿੱਲ ਜਾਂ ਮਨਜੀਤ ਇੰਦਰਾ ਅਤੇ ਵਨੀਤਾ ਆਦਿ ਦੇ ਨਾਂ ਲਏ ਜਾ ਸਕਦੇ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅੱਰਤ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਮੂਲ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਕਵਿਤਾ ਦਾ ਕੇਂਦਰੀ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣਾਇਆ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਹਰਿਭਜਨ ਸਿੰਘ ਵੀ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਤੈ ਸਮਰੱਥ ਸ਼ਾਇਰ ਹੈ ਜਿਸਨੇ ਔਰਤ ਦੀਆਂ ਅੰਦਰਲੀਆਂ ਲੁਕੀਆਂ ਹੋਈਆਂ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਦਾ ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਪ੍ਗਟਾ ਕੀਤਾ ਹੈ।

ਇਸ ਸੰਖੇਪ ਜਿਹੀ ਚਰਚਾ ਤੋਂ ਸਾਡਾ ਭਾਵ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਅੰਮ੍ਰਿਤਾ ਜਾਂ ਹੋਰ ਪੰਜਾਬੀ ਦੇ ਕਵੀਆਂ ਦਾ ਔਰਤ ਅਤੇ ਉਸ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ ਦਾ ਬਿਆਨੀਆਂ ਢੰਗ ਬਿਲਕੁਲ ਵੱਖਰਾ-ਵੱਖਰਾ ਹੈ। ਪਾਲ ਕੋਰ ਦਾ ਆਪਣਾ ਇਰ ਵੱਖਰਾ ਅੰਦਾਜ਼ ਹੈ, ਜਿਸ ਰਾਹੀਂ ਉਹ ਆਪਣੀ ਗੱਲ ਬੜੀ ਬੇਬਾਕੀ ਅਤੇ ਦਲੇਰੀ ਨਾਲ ਬੜੇ ਕਰੜੇ ਅਤੇ ਕਠੋਰ ਸਬਦਾਂ ਵਿਚ ਕਹਿਣ ਦੀ ਜ਼ੁਅਰਤ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਆਪਣੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਸਿਰਫ਼ ਕਲਪਨਾ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਰਾਹੀ ਆਪਣੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ ਕਹੀ ਸਗੋਂ ਯਥਾਰਥ ਦੀ ਪੱਧਰ ਤੇ ਵੀ ਆਪਣੀ ਕਾਵਿ ਅਭਿਵਿਅਕਤੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਪਾਲ ਕੌਰ ਨੇ ਆਪਣੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿਚ ਸਿਰਫ਼ ਉਸ ਸੱਚ ਨੂੰ ਹੀ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨੰਗੇ ਸੱਚ ਨੂੰ ਉਸਨੇ ਖ਼ੁਦ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡੇ ਤੇ ਭੋਗਿਆ

ਅਤੇ ਹੰਢਾਇਆ ਹੈ।

Pramana Quarterly Research Journal October-December (2018)

Attested to be true copy

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

Principal

Dayanand Mahila Mahavidyala

### कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Year : 8

Issue: 32 (II)

Oct. - December- 2018

www. chintanresearchjournal.com

Impact Factor: 4.012

यतेमहि स्वराज्ये

ISSN: 2229-7227

International Refereed

## दिवंदिवं

Chintan Research Journal

रिसर्च जर्नल

(कला, साहित्य, मृानावकी (Indexed & Liste

विज्ञान, विधि, प्रवंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan) (Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJINDEX)) (UGC Approved List No. 41243)

संपादक आचार्य (डॉ.) शीलक राम



### आचार्य अकादमी

भारत ISO 9001:2008

Attended to be true copy

Principal
Dayanand Mahila Mahavidyala

Your Young To AC

Dayanand Mahila Mahavidyalaya

Kurukshetra

• प्रमुख स्मृतियों में न्याय-व्यवस्था : एक अध्यवन	**
– डॉ॰ सुनीता देवी	672-675
Evolution of Management	0,20,0
- Naveen Kumar	676-681
Socio Economic Conditions of Female in Rajasthan : A Geograpi	hical Analysis
- Nachita Kumari	682-687
ੈ 21ਵੀਂ ਸਦੀ ਦੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕਹਾਣੀ : ਦਲਿਤ ਪਰਿਪੇਖ	
ਡਾ. ਪਰਮਜੀਤ ਕੌਰ ਸਿੱਧੂ	688-694
ਮਨੁੱਖੀ ਅਹਿਸਾਸਾ ਦੀ ਪਰਵਾਜ਼ : ਪਰਵਾਜ਼	000-034
ज मेह्नेभ करी	695-707
The Changing Trends of Indian Writing in English	300 A
- Saroj Bala	708-711
<ul> <li>Geographical Environment effect on Human behaviour and social</li> </ul>	
- Rajesh Kumar	712-716
• Future prospects of cashless payment system indicators in India	
- Dr. Neeraj	717-723
• ਸੂਰਿੰਦਰ ਨੀਰ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਵਿਚ ਨਾਰੀ ਸਰੋਕਾਰ 🍃	
– ਬਲਗਜ਼ ਸਿੰਘ	724-728
<ul> <li>आधुनिक काल में बाल साहित्यकारों का योगदान</li> </ul>	124-128
- डॉ॰ विजय हिंदुराव पाटिल, संजय कमार	700 700
<ul> <li>'ट्राम नम्बर 5 और बोहैंमियन धुन' कहानी में चित्रित ओम का स्वरूप</li> </ul>	729-733
- संध्या	724 727
	734-737
<ul> <li>माध्यन्दिन शतपथ बाह्मण पर वपलब्ध भाष्य</li> </ul>	
- पुनीत चौहान	738-743
• भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के संदर्भ में मानवाधिकार	
– पूनम यादव	744-746
Ayushman Bharat (NHPM)- Affordable Healthcare (An Overview	
- Nidhi	747-750
Directing Diversity in Workplace	251 254
- Komal Vashisht	751-754
Birth of Hindustan Socialist Republican Association	765 750
- Jogender Dhankhar	755-758
Academic Libraries and Talent Management	759-763
- Jaishree	1394103
Political Participation of Women in India ayanand Mahila Mahavidya	1laya 764-768
- Vilay Chitiboyina	707-700
Digital Marketing Revolution in India	769-775
- Surender Saini	107-113



Principal
Dayanand Mahila Mahavidyala
Kurukshetra (Haryana)







UGC List No.41243 Impact Factor: 4,012

International Refereed 'चिन्तर्न' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN : 2229-7227)

वर्ष 8, अंक 32 (11)

(4.4. 701 707)

विक्रमी सम्बत्: 2076 (अक्तूबर-दिसम्बर 2018)

### ਮਨੁੱਖੀ ਅਹਿਸਾਸਾਂ ਦੀ ਪਰਵਾਜ਼ : ਪਰਵਾਜ਼

ਡਾ, ਸੋਨੀਆ ਗਨੀ भागिमटेट प्रहेमन ही. भारा, बारस वुत्वमउत

ਸ਼ੋਧ ਆਲੇਖ ਸਾਰ

**ਢਿੱਲੋਂ ਦੀ ਸ਼ਾਇਰੀ ਬਹੁਦਿਸਾਵੀ ਅਤੇ ਬਹੁਪਰਤੀ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਸਮਕਾਲ ਦੀਆਂ ਕਈ ਵੰਗਾਰਾਂ ਨੂੰ ਬੇਖੋਫ਼ ਹੈ** ਕੇ ਬਨਕਾਬ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਇਕ ਪ੍ਰੇਢ ਮਾਇਰ ਹੋਣ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸ਼ਾਇਰੀ ਅੰਦਰ ਖਿਛਲੇ ਪੰਜ-ਛੇ ਦਹਾਕਿਆਂ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਅਜੋਕੇ ਜੀਫਨ ਦੀਆਂ ਅੱਕੜਾਂ ਦੀ ਬਿੰਬਾਂ, ਪ੍ਰਤੀਕਾਂ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਦੁਆਰਾ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ ਹੋਈ ਹੈ, ਜਿਸ ਰਾਹੀਂ ਇਕ ਨਿਵੇਕਲਾ ਕਾਵਿ-ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਸਾਹਮਣੇ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।

ਮੁਖ ਸ਼ਬਦ : ਸਮਕਾਲੀ ਸਮਾਜ, ਸਦਾਚਾਰਕ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ, ਪ੍ਰਤਿਭਾਸ਼ਾਲੀ, ਮਾਨਸਿਕਤਾ ।

ਹਰ ਯੁੱਗ ਦਾ ਸਾਹਿਤ ਸਮਕਾਲੀ ਸਮਾਜ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਰੂਪ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਪ੍ਰਤਿਰੂਪ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ ਵਿਚ ਕਵਿਤਾ ਤ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਹੋਰ ਰੂਪਾਂ ਨਾਲੋਂ ਵੱਧ ਸਨਮਾਨ ਮਿਲਿਆ ਹੈ । ਹਰ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸਾਹਿਤ ਵਿਚ ਕਵਿਤਾ ਦਾ ਜਨਮ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲ ਮੰਨਿਆ ਗਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸਨੂੰ ਰੱਬੀ ਆਮਦ ਨਾਲ ਵੀ ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਹਰ ਯੁੱਗ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਸਮਾਜ ਦੇ ਕੁਝ ਪੁੱਖਾਂ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕਰਕੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਨਵੀਆਂ ਮੇਧਾਂ ਤੇ ਜੀਵਨ ਜਾਂਚ ਸਿਖਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਅਜੋਕੇ ਨਵੇਂ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਅਤੇ ਉੱਤਰ-ਆਧੁਨਿਕ ਸਮੇ ਵਿਚ ਮਨੁੱਖ ਪੈਸੇ ਅਤੇ ਪਦਾਰਥ ਦੀ ਅੰਧਾ-ਪੁੰਦ ਹੋੜ ਵਿਚ ਸਿਰਫ਼ ਅੰਦਰਲੇ ਖ਼ਿਆਲ ਨਾਲ ਹੀ ਦੋ-ਚਾਰ ਨਹੀਂ ਹੈ ਰਿਹਾ ਸਗ ਬਾਹਰੀ ਇਕਸੂਰਤਾ ਨਾਲੋਂ ਵੀ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਲਗਾਤਾਰ ਤੋੜ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਅਜਿਹਾ ਮਨੁੱਖ ਕੀ ਆਪਣੀ ਹੋਣੀ ਤੋਂ, ਭਰ ਤ ਨਿਰਾਸ਼ਾ ਤੋਂ, ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਟੁੱਟ ਭੱਜ, ਭੂੰਜੇ ਲਹਿੰਦੀਆਂ ਨੈਤਿਕ ਸਦਾਚਾਰਕ ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਤੋਂ ਦੂਰ ਕਿਸੇ ਅਜਿਹੇ ਵਾਤਾਵਰਣ <mark>ਦੀ ਸ਼ਰਣ ਨਹੀਂ ਲੈਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ ਜਿੱਥੇ ਕੇਵਲ ਆਨੰਦ ਹੋਵੇ, ਖ</mark>ੁਸ਼ੀਆਂ ਹੋਣ, ਸਾਂਝਾਂ ਅਤੇ ਪਿਆਰ ਦੇ ਗੀਤ ਹੋਣ, ਇੱਕ ਆਦਰਸ਼ ਸਮਾਜ ਸਿਰਜਣ ਦੀ ਤਾਂਘ ਹੋਵੇ, ਗਲਵਕੜੀ 'ਚ ਸਿਮਟ ਜਾਣ ਦੀ ਭਾਵੂਕਤਾ, ਧਰਤੀ 'ਤੇ ਧੂਪ ਵਾਂਗ ਖਿੜਣ ਦੀ ਕਾਰਣ ਹੋਵੇਂ ਆਧੁਨਿਕ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਬੰਜਰ ਅਹਿਸਾਸਾਂ 'ਤੇ ਤ੍ਰਿਪ-ਤ੍ਰਿਪ ਬਰਸਦੀ ਸਾਇਰੀ ਭਾਵ ਕਵਿਤਾ ਹੀ ਅਜਿਹਾ ਕਰ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਕਵਿਤਾ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਮਨੁੱਖ ਹੋਣ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਹੀ ਨਹੀਂ ਕਰਾਉਂਦੀ ਸਗੋਂ ਉਸਦੇ ਵਜੂਦ ਨੂੰ ਵੀ ਬਣਾਈ ਰੱਖਦੀ ਹੈ। ਅਜਮੋਫ ਰੋਡੇ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਇਸ ਸੰਦਰਭ ਵਿਚ ਵਿਚਾਰਨ ਯੋਗ ਹਨ :

''ਜਿਉਂਦੇ ਰਹਿਣ ਲਈ ਕਵਿਤਾ ਓਨੀ ਹੀ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ ਜਿੰਨਾ ਕਿ ਪਿਆਰ । ਇਸ ਤੋਂ ਬਿਨਾਂ ਮਨੁੱਖ ਹਿੰਸਕ ਅਤੇ ਪਾਗਲ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਮਨੁੱਖ (ਇਕਵੀ ਸਦੀ ਦੇ ਮਨੁੱਖ) ਦਾ ਮਨੁੱਖ ਬਣਿਆ ਰਹਿਣਾ ਅੱਜ ਉਸ ਲਈ ਇਕ ਭੀਸ਼ਮ ਚੁਣੱਤੀ ਹੈ। ਦਿਨੌ-ਦਿਨ ਮੰਡੀ ਬਣ ਰਹੀ ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਉਹ ਵਿਕਣ ਵਾਲੀ ਸ਼ੈਅ ਅਤੇ ਪਲੌ-ਪਲ ਹਾਵੀ ਹੋ ਰਹੇ ਸਾਈਬਰ ਸਪਸ ਵਿਚ ਰੋਬਾਟ ਬਣ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਸਥਿਤੀ ਵਿਚ ਕਵਿਤਾ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਕਰਮ ਉਸ ਲਈ ਅਜਿਹੀਆਂ ਸੰਭਾਵਨਾਵਾਂ ਸਿਗਜਣ ਵਿਚ ਹੈ ਜਿੱਥੇ ਉਸਦੀ ਮਾਨਵਤਾ ਬਚੀ ਰਹਿ ਸਕੇ ਅਤੇ ਵਿਕਸ ਸਕੇ । ਇਸ ਕਾਲੀ ਬੋਲੀ ਰਾਤ ਵਿਚ ਦੀਵਾ ਜਗਦਾ ਰੱਖਣਾ

ਕਵਿਤਾ ਦੀ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਹੈ।

ਅੱਜ ਦੇ ਦੌਰ ਵਿਚ ਡਾ. ਰਤਨ ਸਿੰਘ ਢਿੱਲੋਂ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਜਿਸ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀ ਨੂੰ ਬਾਖ਼ੂਬੀ ਪੂਰਾ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਰ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵਿਤਾ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਡਾ. ਰਤਨ ਸਿੰਘ ਢਿੱਲੋਂ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਵਿਲੱਖਣ ਕਾਵਿ-ਹਸਤਾਖ਼ਰ ਹੈ ਜੋ ਕਿਸੇ ਜਾਣ-ਪਛਾਣ ਦਾ ਮੁਥਾਜ ਨਹੀਂ । ਉਹ ਇਕ ਅਜਿਹੇ ਪ੍ਰਤਿਭਾਸ਼ੀਲ, ਬਹੁਪੱਖੀ ਤੇ ਨਾਮਵਰ ਸ਼ਾਇਰ ਹੈ ਜਿਸਨੇ ਆਪਣੀ ਕਾਵਿ-ਸਾਧਨਾ <sup>ਨਾਏ</sup> ਆਧੁਨਿਕ ਪੰਜਾਬੀ ਕਾਵਿ-ਜਗਤ ਵਿਚ ਨਿਵੇਕਲੀ, ਵੱਖਰੀ ਤੇ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਪਛਾਣ ਬਣਾਈ ਹੈ। ਉਹ ਆਪਣੀ ਕਲਮ-ਸ਼ਕਤੀ ਰਾਹੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਖ਼ਾਮੋਸ਼ ਪਏ ਵਿਚਾਰਾਂ, ਸੰਵੇਦਨਾਵਾਂ ਅਤੇ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੈਣ ਨੂੰ ਸ਼ਾਇਰੀ ਦਾ ਜਾਮਾ ਪਹਿਨਾਕੇ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ ਜਿਸਦੀ ਗਵਾਹੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਹੁਣ ਤੱਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਹੋ ਚੁੱਕੀਆਂ ਕਾਵਿ-ਪੁਸਤਕਾਂ 'ਮਾਰੂਥਲ', 'ਕਾਲੇ ਕੋਹਾਂ ਦਾ ਸਫ਼ਰ', 'ਸਰਘੀ ਦਾ ਇਕਰਾਰ', 'ਪਰਵਾਜ਼' ਤੇ 'ਕਾਜ਼ੀ ਹੋਏ ਰਿਸ਼ਵਤੀ' (ਸੰਪਾਦਕੀਆਂ ਦਾ ਸੰਗ੍ਰਹਿ) ਭਰਦੀਆਂ ਹਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਕਾਵਿ-ਪ੍ਰੀਤਿਭਾ ਕਰਕੇ 'ਕਾਲੇ ਕੋਹਾਂ ਦਾ ਸਫ਼ਰ' 'ਤੇ ਹਰਿਆਣਾ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ ਅਕਾਦਮੀ ਵੱਲੋਂ ਭਾਈ ਸੰਤੇਖ਼ ਸਿੰਘ ਅਵਾਰਡ ਨਾਲ ਨਵਾਂਗਿਆ ਗਿਆ । ਇੱਥੇ ਸਾਡਾ ਮਨੌਰਥ ਉਸਦੀ ਕਾਵਿ ਪੁਸਤਕ 'ਪਰਵਾਜ਼' ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਉਸ ਵਿਚ ਪ੍ਰਾਪਤ ਮਨੁੱਖੀ ਅਹਿਸਾਸ਼ਾਂ ਦੀ ਤਰਜ਼ਮਾਨੀ ਕਰਨਾ ਹੈ। 'ਪਰਵਾਜ਼' ਦੇ ਵਿਚ ਪ੍ਰਾਪਤ 64 ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਰਾਹੀਂ ਕਵੀ ਨੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵੰਨ-ਸੁਵੰਨੇ ਪੱਖਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਤੀਕਾਂ, ਬਿੰਬਾਂ ਤੇ ਵਿਅੰਗ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਰਾਹੀਂ ਬਿਆਨ ਕਰਕੇ ਖਾਮੋਜ਼ ਪਏ ਮਨੁੱਖੀ ਅਹਿਸਾਸਾਂ ਨੂੰ ਜ਼ੁਬਾਨ ਦੇਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇਸ ਸਬੰਧੀ ਪ੍ਰ**਼ਾ**ਾਸ਼੍ਰਾਮਜਗਦੀਸ਼ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਲਿਖਦੇ ਹਨ :

चिन्तन अंतरराष्ट्रीय त्रमासिक शोध-पत्रिका ay (अक्तूबर-दिसम्बर 2018)

Kurukshetra

Mahavidyala

(19)

वर्ष 7, अंक 7, मार्च 2018

NE P

साहित्य, शिक्षा, वाणिज्य, मानविकी विकान एवं सभी विवयों की

**मृत्यांकि**त

स्कार चेत्ना Impect Factor - 2.003

अत्तरराष्ट्रीय शोध पीएका (मासिक) ISSN 2347 : 4041 UGC List No. 41232

हिं स्वामी हरिज्ञोम दास परिवाजक विस्तर वाटिका हिं कुठक्षेत्र ध्री जय मगवान सिंगला लेखक एवं साहित्यकार बुरुक्षेत्र

र्को. सुधीर बुमार, पूर्व निदेशक हरियाणा संस्कृत अकादमी पंतकृता

हाँ. इच वर हहान, मूर्व इतशील कुरुकेव फिरनियालर. कुरुकेव इस्केव इस्केव इस्केव इस्केव इस्केव इस्केव इस्केव इस्केव इस्केव श्री प्रदीप शर्मा समाजसेवी दिल्ली

मार्गदर्शकः

.डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, विधानावासीत वृशं सदस्य, मारतीय दशेष अनुतामान पीपद वृशं अध्यक्ष ,दर्शन विभाग, इ.वि. कुठकोष

मुख्य संरक्षक डॉ. बी. के. कुठियाला

कुलपति, माञ्रनलाल वनवंदी पत्रकारिता विश्वविधालय, भीपाल अध्यक्ष, हरियाणा उच्च शिक्षा परिषद्

प्रधान संपादक डॉ. विजय दत्त शर्मा

प्रबन्ध संपादक , डॉ. गणेश दत्त \* डॉ. तरसेम कौशिक हॉ. प्रवीण वत्स

> संपादक डॉ.केवल कृष्ण

उप संपादक डॉ.ऋषिपाल डॉ.अशोक कुमार

शोध चेतना अकादमी अंतर्गत

'वसुधैव सुदुम्बकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.) email: sanskarchetna@gmail.com www.sanskarchetna.com

सम्पादकीय कार्यालयः संपादक, संस्कार चेतना, 153, सैक्टर- 30, कुरुक्षेत्र, हरियाणा 136118

पंजीकृत कार्यालयः संपादक, संस्कार चेतना, सिरसमा, बीड मथाना, कुरुक्षेत्र, हरियाणा 136131

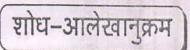
Attested to be true copy

Principal
Davanand Mahila Mahavidyala
Sehetri Harvana

Kurukshetra TQAC Convened Mahila Mahavidyalaya

Chiver IQAC

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra



सम	पादक <u>ीय - 'डॉ</u> ' के <b>र्वज कृष्ण</b>	
√.	संस्कृति में संगीत कला का महत्त्व	
	ड़ाॅ. नीलू रानी	8-10
✓	लोक, लोकतत्व एवं लोक रूडियाँ परिभाषिक परिदृश्य में	
	डॉ. अजय कुमार शर्मा	11-17
✓	वित्रपट संगीत में उपलब्ध देशभिक्त गीतों का मानव जीवन में महत्त्व	
	प्रोमिला देवी	18-20
$\checkmark$	गीता की सार्वभौम प्रासंगिकता 🔧	
	डॉ॰ श्रीमती सन्तोष देवी	21-26
<b>✓</b>	उत्तर भारत के मन्दिरों का कलात्मक परिचय	
	सतविन्द्र चौहान	27-31
ν.	Evaluating the Relationship between Economic Value Added	
	Accounting and Capital Structure in Indian Pharmaceutical Industry	
,	Dr. Virender S. Poonia, Vandana	32-37
<b>V</b>	Live-in-Relationship Indian Perspective	
,	Savi	38-41
<b>√</b>	- 113 - W 113 1	
,	डॉ॰ हरेराम सिंह	42-44
<b>√</b>	Socialist Ideology in Hindustan Republican Army	
	Dr. Neelam Rani	45-48
<b>√</b>	Representation of Cultural Dissemination in Amit Chaudhuri's A Strange and Address and A New World	d Sublim
	Rachna	49-52
<b>/</b>	Role of Media in Socio-Economic Welfare with Reference to India	
	Dr.Sukhbir Kaur, Manveer Kaur	53-57
✓	संगीत शिक्षण में पाट्यक्रम का महत्व	
	अरोक कुमार	58-59
V	अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों का साहित्यिक प्रदेय	
	डॉ. गोरखनाथ तिवारी, गहेनीनाथ	60-63
<b>√</b>	Search for the Roots: A Diasporic study of Uma Parameswaran's Selected	d Work
	Sunil Kumar	64-67

Attested to be true copy

Principal W Davanano Mat Ila Menavidyala K siletie Heryana,

Conveyer
IQAC
Dayanand Mahila Mahavidyalaya
Kurukshetra





Subaltern Historiography of Civil Disobedience Movement : with special reference of Sumit Sarkar

Mona Gulathi

68-75

✓ योग का सामाजिक-नैतिक आधार

डाँ॰ अनु चौहान

76-81

Attested to be true copy

Principal: Dayanand Mahila Mahavidyala Kuruksheira (Haryana)

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kuruksherra

ISSN: 2347-4041 अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका Impact Factor 2.003 वर्ष 7, अंक 7, मार्च 2018

योग का सामाजिक-नैतिक आधार

डाँ॰ अनु चौहान सहायक प्राध्यापिका शारीरिक शिक्षा विभाग दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरक्षेत्र (हरियाणा)

"संयोग योग इत्युक्तो जीवात्म पर-मात्मन: ।" (योग याज्ञवृत्क्यम्) अर्थात् "जीवात्मा और परमात्मा की एकता का अनुभव करने का नाम ही योग है ।" योग का लक्ष्य है आत्मा पर पर्ड अविद्या-रूपी पर्दे को हटाकर चित्त को अधिकाधिक चिन्मय बनाना, ब्रह्मस्वरूप अवस्था विरोध या स्थिति का अधिकाधिक अनुभव करना और उस महान् ब्रह्मस्वरूप में एकाकार होने की उत्कट अभिलाषा पैदा करना।" - वेदान्त के मतानुसार

महर्षि पतंज़िल ने चित्त की वृत्तियों का निरोध करना योग बताया है "योगश्चित्तवृत्ति निरोध: । (योग 01-2) .

हमारे सारे कायाँ का आधार ही चित्त की वृत्तियां हैं । उनका नियमन करने से ही हम अपने जीवन का नियमन कर सकते हैं और जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं । भगवान शीकृष्ण ने उसे और सरल कर दिया है । उन्होंने "योग: कर्मसु कौशलम्" अथित् हम कर्म इस कौशल से अथित् चतुराई से करें कि हमें अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त हो जाय । यही कर्मयोग है ।

डाँ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार, "योग वह पुरातन पथ हैं जो व्यक्ति को अँधेरे से प्रकाश में लाता है।"

योग-भाष्य के अनुसार, "ध्रोग: समाधि: स च सार्वभौमिश्चित्तस्य धर्म:" अर्थात् योग समाधि को कहते हैं, जो चित्त का सार्वभौम पूर्म है।

इस प्रकार योग को उस साधन या मार्ग का नाम दिया जा सकता है जिसके माध्यम से व्यक्ति को अपनी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों में उत्तरोत्तर वृद्धि कर जीवन व अपने कार्य क्षेत्र में सुख, संलोष और आनंद की प्राप्ति करने तथा एकाग्रचित्त होकर समाधि-अवस्था को प्राप्त होने एवं मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। योग का सामाजिक नैतिक आधार

योग का शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष जितना सशक्त है उतना ही सामाजिक एवं नैतिक पक्ष भी । समाज के नियम, आचरण संहिताओं तथा मर्यादाओं का अनुगमन करने और उन्हें एक ठोस रूप प्रदान कराने में भी योग द्वारा प्रशिक्षित मन और मस्तिष्क महत्त्व पूर्ण भूमिका निभाता है । स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है और योगाभ्यास तो शरीर और मन को सशक्त एवं सबल बनाता ही है। योग द्वारा मन की वृत्तियों पर अंकुश लगाकर चित्त की शान्ति और निर्मलता की प्राप्ति होती है। योग का अध्यास करने वाला संयमी, इन्द्रिय निग्रही एवं विचार तथा कर्म से श्रेष्ठ बनता चला जाता है । इसके फलस्वरूप उसमें सामाजिक तथा नैतिक गुणों का ऐसा अंकुर फूटता हैकि जिससे न केवल उसे वैयक्तिक दृष्टि से लाभ पहुँचता हैं अपितु समाज को एक नई दिशा प्रदान करने और सामाजिक प्रगति में अपना

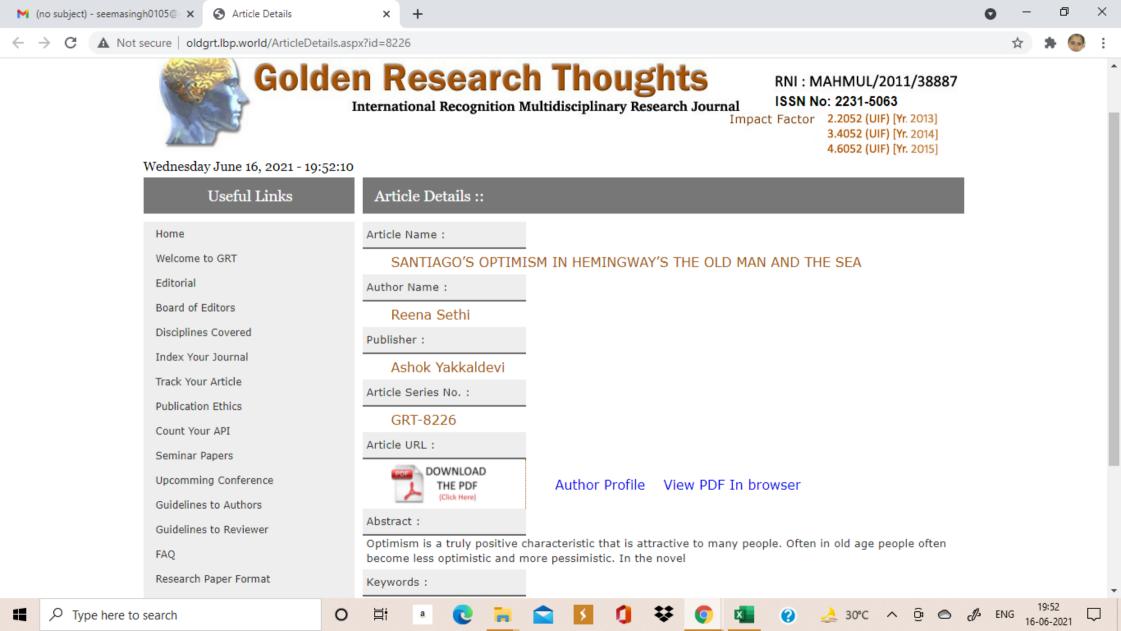
संस्कार चेतना, अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका

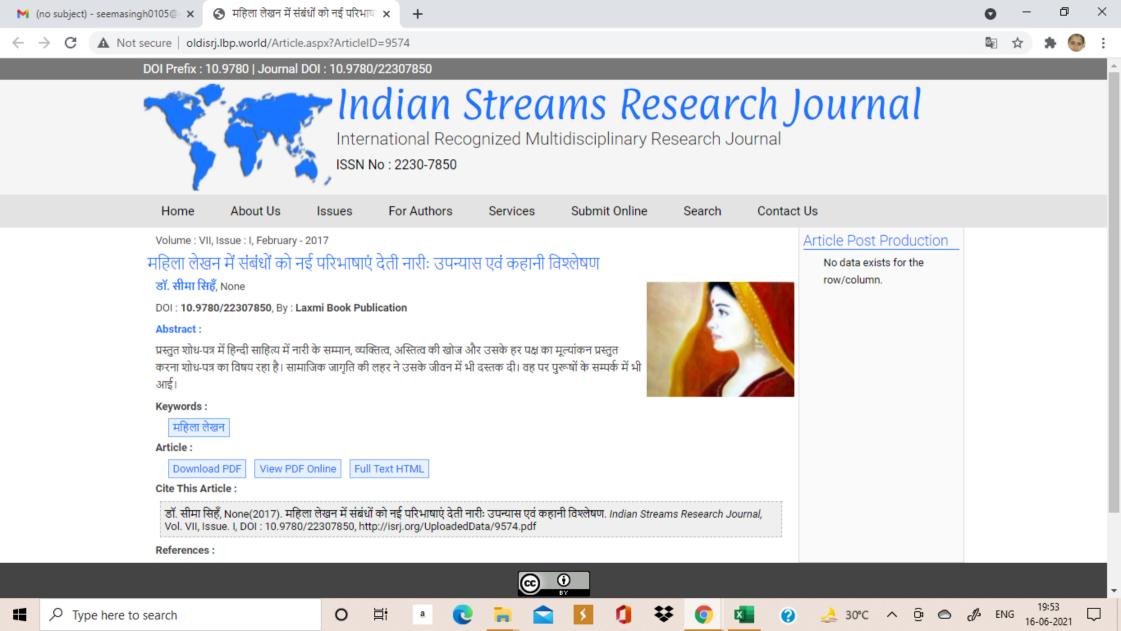
Attested to be true copy

Dayanand Mahila Mahavidyala Kurukshetra (Haryana)

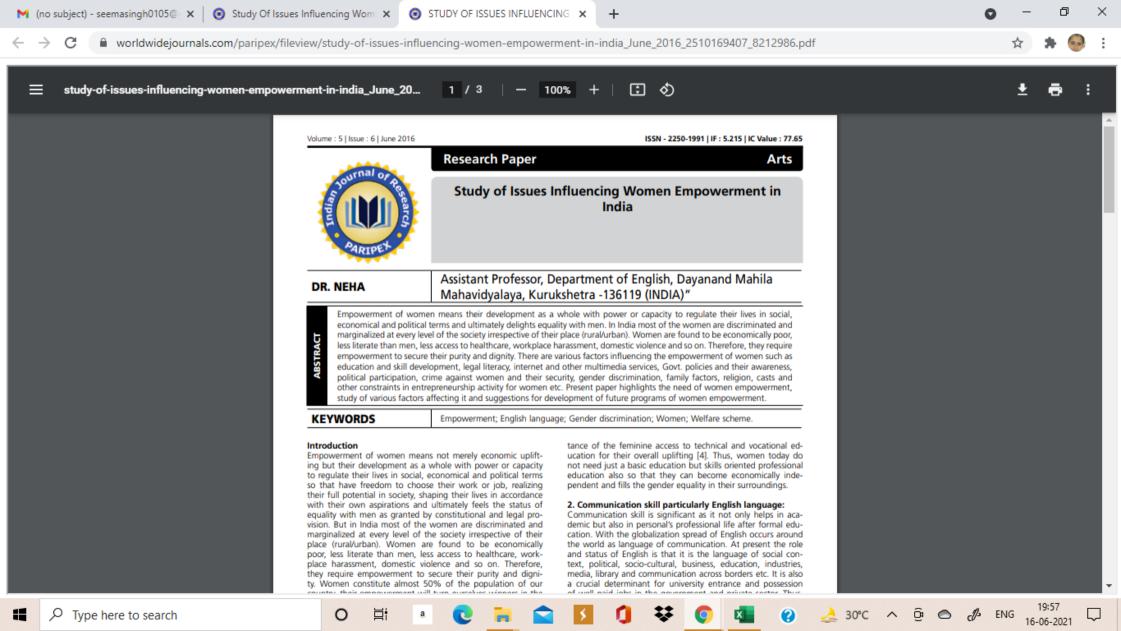
Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

# Session: 2017 (online Papers)





# Session: 2016 (online Papers)



# Session: 2016 (offline Papers)

बतना बतना ISSN 2347-4041

प्रथमां विश्ववारां तां संस्कृतिं स्वयुगानुगाम्। संस्कारचेतना धत्ते वमुधेव कुटुम्बकम्।।

साहित्य,शिक्षा, वाणिज्य,मानविकी, विज्ञान एवं सभी विश्वयाँ की



## संस्कार चेतना

- तार चेतना
  - ਾ ਕਰਤ
- कार जातना
- en siere
  - - Harry P.
    - SEE B
    - 4-1-1

अन्तरशाष्ट्रीय मूल्यांदित्त शोधापद्भिका (मासिक) International Reference Dressearch Journal

> प्रधानाःसंपादका डॉ. विजयादता शर्माद्रवृत्वन्त्रःकः हरियाणाज्यः अकादमी,पेवकुना

> > संपादक डॉ.केवल कृष्ण



शीरि चेत्रा छात्रात्मी च्छ्रियच्छुन्द्रम् संद्रितिसेवा आयाम (पंचीट)

Attached to be true copy

IQAC

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra Scanned with CamScanner

enter ordere en en enterfet frøgeligtet er opplynde frætten. Opplynde e का महारामाच्या महाभू संदर्भ अवश्वस्थातमा स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन पर्दर्वत लोगाका कोली में समायम ल महागाता की प्रसुद्ध लेक रूपा का ार्या आरे पावनसं को वितंता से भारतीय प्रासीयकता Inequality and Correlation Between Literacy/and Sex Ratio in Haryana A & a Analysis: Rolender Singh, Surender Kulmar Free of Money Market in the Indian Economic Expansion गाम पंचायत महिला नेतृत्व प्रशिक्षण : शाहबाद खण्ड का अध्ययन जो प्राप्ता नुसार। कान्ता देवी Development of Hindl Version of the Reactions to Tests Questionnaire Joginder Singh ਹਨੀਂ। ਕੌਰ ਟਿਵਾਣਾ ਦੇ ਨਾਵਲਾਂ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਔਰਤ ਦੀ ਸਮਾਜਕ ਸਥਿਤੀ ਦਾ ਨਿਰੂਪਣ ਤਾ, ਪ੍ਰਤਜਤ ਕੋਰ ਭਾ ਸ਼ੂਸ਼ੀਲ ਸ਼ਰਮਾਂ ਦੀ ਖੋਜ ਪੁਸਤਕ 'ਨੌਰਾਤੇ' ਦਾ ਮੈਟਾ ਅਧਿਐਨ ਬਲਵਾਨ ਸਿੰਘ ਪੰਜਾਬੀ ਪੱਤਰਕਾਰੀ : ਸਰੂਪ ਤੇ ਸਿਧਾਂਤ ਹਰਦੇਵ ਸਿੰਘ भारतीय राजनीति में महिलाओं की स्थिति व योगदान Dr. Suman Kumari A Study of Adjustment, Personality and Socio-Economic Status Differentials amount Caste and Scheduled Caste B.Ed. Students of Kaithal District (Haryana) Anu Rani // Impact of Adjustment on Balanced Learning of Student : A Psychological Stud ManjuKaur Fistentialism In T.S. Ellot's The Wasteland A Comparative Study of General and Scheduled Caste Students Studying (in 12.5) into me of the inpersonality, Adjustment and Socio-Economic Status उसका क्यार की सार्वकालिक काविताएँ ह एक विविद्या 9-177 11 6 भागिता है। जो संस्कृति संदेश Attended to be true o

Principal Daniel

Dayanand Mahila Mahavidyal Scanned with CamScanner Kurukshetra

offene

सस्कार चतन अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका

ISSN: 2347-4041

वर्ष 5, अंक-7-8, मार्च-अप्रैल 2018

Existentialism in T. S. Eliot's The Wasteland

Reena Sethi

Assistant Professor in English Dayanand Mahila Mahavidyalya Kurukshetra

Abstract

e

y

ıŧ

t

T. S. Ellot is an existential writer who was greatly influenced by the Victorian era. Ellot is not only a great novelist, but he is also widely accepted for his poetic abilities. T. S. Eliot's contribution of publications like The Wasteland, have been considered by many to be "a leading poet of the avant-garde and the single more influential poetic work of the 20th century. The Wasteland is a very detailed tale of human existence after a war, in a manner that calls for humans to change their thinking in order to survive. Modern existentialism is confined to human existence. The paper is an introduction to the main currents of existentialist thought which finds transcendental treatment in T.S Eliot's

#### Introduction

Existentialism tells us of the conditions of existence, and to be aware of existence is to know them. Economic slavery, triumph of science, materialistic approach to life and preoccupation with the idea of the welfare state has paralyzed humanity. In his supreme conquest over material things, the individual has become a stranger to his own inner being and to the world. In their efforts at systematization, the so called 'intellectuals' have created economic man, political man, military man, materialistic man. The individual has lost his uniqueness, and a disorientation of personality has set in Such a crisis always leads to the ultimate human tragedy, the tragedy of meaninglessness of life.

It is the realization of one's true being and its destiny, not its standardization that is to be achieved if mankind is to be emancipated and saved from its inevitable catastrophe. The existentialists believed in the ability, the necessity of the individual to construct the self. They believe that life is given meaning by individuals. Eliot evinced this existentialist trend in his thought. He saw the vast horror of the world war and contemporary man being cut off, alone, estranged, absurd.

T.S. Eliot detailed the alienation and meaninglessness in his poems and participated in the search, exploring the philosophy of Existentialist thinkers, Buddhism, Hinduism for doctrines to explain and repair the fragmentation and meaninglessness of modern culture. Existence of man in The Wasteland

Modern Existentialism is confined to human existence. The paper is an introduction to the main currents of existentialist thought which finds transcendental treatment in T.S. Eliot's poetry. The bleaker aspects of existentialism: alienation, nausea, absurdity, sanity, anomie, ennui, anxiety, estrangement, weightlessness, meaninglessness, purposelessness, and nihilism find expression in T.S Eliot's poetry. 'The Waste Land' expresses with startling Power the disillusionment of the post-war years.

Attested to be true copy

269

Principal Davana - Mahita Mahavidyala 'axvana)

Dayanand Mahila Maha Scanned with CamScanner

Kurukshetra







साहित्य, शिक्षा, वाणिज्य, मानिव्की एवं विद्वान विषयों की

ISSN - 2347: 4041

### अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका

वर्ष-5, अंक- 5, जनवरी, 2016

स्वामी हरिओम दास पीखाजक वात्सत्य बाटिका कुरुक्षेत्र

हाँ. मुधीर कुमार, दूर्व निदेशक, द्मियाचा संस्कृत अकारमी पंचक्ता

रॉ. कृष्ण चन्द र्ल्हाण, पृतं कुलसीवन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

डॉ. रोहताश गुप्ता,पूर्वाध्यक्ष प्राणी शास्त्र विभाग, कु.वि.कुरुक्षेत्र

डॉ. गिरीश धीपश, अध्यक्ष प्राणी शास्त्र विमाग, ब्.वि.कुरुक्षेत्र

मार्गदर्शकः

डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, विमावाचार्यात

पूर्व सदस्य, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद् पूर्व अध्यक्ष ,दर्शन विभाग, कु.वि.कुरुक्षेत्र

मुख्य संरक्षक

डॉ. बी. के. कुठियाला

कुलपति, माखनलाल धतुर्देदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रधान संपादक डॉ. विजय दत्त शर्मा

प्रबन्ध संपादक डॉ. गणेश दत्त डॉ. तर्सेम कौशिक डॉ. प्रवीण वत्स

> संपादक केवल कृष्ण

उप सपादक डॉ. ऋषि पाल डा.चन्द्रपाल पूनिया

शोध चेतना अकादमी

Dayanand Mahila Mahavidyalaya

Kurukshetra

'वसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.)

email: sanskarchetna@gmail.com www.sanskarchetna.com

सम्पादकीय कार्यालयः संपादक, संस्कार चेतना, 1575, गली नं. 4, दीदार नगर, कुरुक्षेत्र,हरियाणा 136118

पंजीकृत कार्यालयः संपादक, संस्कार चेतना, सिरसमा, बीड मथाना, कुरुदोह्न, हरियाणा 136131

Mahavidvala

## शोध-आलेखानुक्रम

The state of the s		
सम्पादकीय - केवल कृष्ण	7	भारत
अभिव्यक्ति – डॉ॰ वी॰ डी॰ शर्मा	8	
<ul> <li>✓ हरियाणवी लोकसाहित्य और अहमदबक्श थानेसरी</li> </ul>	<b>√</b>	हिन्द
डॉ॰ कृष्णचन्द रल्हाण	9-16	
✓ वाल्मीकि रामायण में गंगा का स्वरूप		समव
डॉ <sub>○</sub> सुधीर कुमार	17-21	
✓ स्मृतिकार महर्षि पराशर का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं काल		विश
डॉ॰ योगेश शर्मा	22-27	1593
		प्रो.
<ul> <li>✓ आचार्य श्यामलाल उपाध्याय के काव्य सर्जना में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना</li> </ul>		76.4
केवल कृष्ण	28-31	sĭ.
√ लिंग संवेदनशीलता और नारी का म्वरूप		81.
डॉ॰ मनजीत ेकौर	32-35	-
<ul> <li>✓ महादिलत महिला : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन</li> </ul>		श्ले
डॉ॰ सुरेखा	36-39	जर
<ul> <li>र वर्तमान में हिन्दी भाषा</li> </ul>		dic
डॉ॰ स्नेह गौड़	40-41	err
महर्षि दयानन्द सरस्वती एवम् नारी जाति के प्रति उनका दृष्टिकोण		धम
डॉ॰ रूकमेश देवी	42-44	
√ प्रवासी साहित्यकार हिरशंकर आदेश का हिन्दी को योगदान	~	भा
इकबाल	45-47	
√ विज्ञापनों का हिन्दी को विकसित करने में योगदान	<b>✓</b>	qu
वीरेन्द्र कुमार	48-51	
<ul> <li>✓ अज्ञेय के काव्य सर्जना : परम्परागत प्रतीकों का नया प्रयोग</li> </ul>	<b>✓</b>	सम
मुकेश कुमार	52-56	
<ul> <li>✓ प्रवासी साहित्यकार के रूप में प्रो॰ 'आदेश'</li> </ul>	<b>✓</b>	यो
श्याम देवी	57-62	
√ नरेन्द्र कोहली के महाभारत कथा पर आधारित उपन्यासों के प्रमुख पुरूष पात्रों का	। चरित्र-चित्रण √	ढद
अन्जूबाई	63-71	
<ul> <li>✓ विकेश निझावन के कथा साहित्य में चित्रित मानवीय संवेदनाएं</li> </ul>	· ·	का
शर्मिला देवी, डॉ. बीर सिंह	72-75	
√ मोहन राकेश के साहित्य में परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व-नारी पात्र	-	**
अनीता	76-80	
<ul> <li>✓ निर्मल वर्मा के साहित्य में सामाजिक चेतना</li> </ul>	4	वी
नीलम देवी	81-86	
<ul> <li>✓ 'गोदान' उपन्यास में इक्कीसवीं सदी के किसान का चित्रण</li> </ul>	<b>✓</b>	भ
अनीता देवी	87-92	
✓ कुसुम खेमानी के कहानी संग्रह 'अनुगूँज जिन्दगी की' में आधुनिक रानी	✓	सं
अधिक सभी	93-95	
अमता रागा र कुसुम अंसल के उपन्यास 'उस तक' में चित्रित नारी चीवन की विडम्बनाओं व	की शिनाख्त 🗸	(सि
सरोज बाला	96-98	

Dayanand Mahila Mahavidyalaya Kurukshetra

Principal Dayanand Mahila Mahavidyala Dayanand Mahila Mahavidyala

ISSN: 2347-4041

### संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका वर्ष 5, अंक-5, ज वर्ष 5, अंक-5, जनवरी 2018

### लिंग संवेदनशीलता और नारी का स्वरूप

डाँ₀ मनजीत कौर असिसटेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

भूमिका 🔪

संसार रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं - एक नर तथा दूसरा नारी । यदि एक भी कमक हुआ तो जीवन की गति धीमी पड़ जायेगी । इतिहास इस बात का गवाह रहा है कि - आरंप से ही नारों ने अपने अस्तित्व को बचाने के लिये संघर्ष किया । आरंभ से ही नारी पुरुष व समाउ के पक्षपात का शिकार होती रही है । एक समय ऐसा भी था जब नारी को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था । अनेक अनुष्ठान उसकी अनुषस्थिति में पूर्ण नहीं माने जाते थे, उस स्वयंवर का अधिकार था, राज्य सम्बन्धी गंभीर मामलों में उससे परामर्श लिये जाते थे। उसे शिक्ष प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार था ।

मध्यकाल में विदेशी आक्रमणकारियों तथा भारतीय समाज की संकीर्ण मानसिकता के कारण नारी-जाति का पतन होने लगा । उसे घर की चारदीवारी में बंद रखा जाने लगा। नारी से समस्त आवश्यक अधिकार छीन लिये गये । उसे केवल घर के कार्यों तक सीमित कर दिया गया। परिणामस्वरूप समाज में नारी सम्बन्धी अनेक वुराइयों ने जन्म लिया । बाल-विवाह, दहेज-प्रधा बहु-विवाह, विधवा-विवाह पर रोक, सती-प्रथा, जौहर प्रथा आदि अनेक ऐसी कुरीतियां थी :

जिनके कारण नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई थी । ऐसी गंभीर स्थिति में भी नारों ने हार स्वीकार नहीं की । यह निरन्तर अपनी दशा सुधारने के लिये प्रयास करती रही । इसी समय भारतीय समाज में अनेक समाज सुधारकों का आगमन हुआ जिन्होंने नारी जाति के विकास के लिये, उनकी दशा सुधारने के लिये अनेक प्रयास किये। इन्होंने नारी अधिकारों पर विचार-विमर्श किया । इससे नारी-जाति को पतन के गर्त से उबरने का सुनहरा अवसर मिला । इस प्रकार नारी धीरे-धीरे वर्तमान सशक्त स्वरूप को प्राप्त किया । ये अनेक महान् समाज-सुधारको तथा नारी-आंदोलन के फलस्वरूप संभव हो पाया । वर्तमान समय में नारी को पूर्ण हुए से सराक्त कहा जाता है । आज वह जीवन के हर क्षेत्र में अपनी योग्यता का परचम लहर चुकी हैं। जमीन से लेकर आसमान तक नारी ने अपनी क्षमता व शक्ति साबित की है। शायर हीं कोई ऐसा क्षेत्र होगा जहाँ नारी पुरुष के समान कार्यस्त न हो ।

परंतु आश्चर्य होता है कि - एक ओर तो वर्तमान नारी को सशक्त कहा जा रहा है तो दूसरी और वह आज भी समाज व पुरुष की संकीर्ण मानसिकता का शिकार हो रही है। आज भिंगताओं जाति की अनेक गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

संस्कार चेतना, अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका Dawanand Mahila Mahavidyalaya

Kurukshetra

Attested to be true copy ta la Mahavidyala

RIC!

सस्कार चेतना संस्कार चेतना

> वर्ष-5 3175-5

जनवरी 2015-16

संस्कार चेतना

सस्कार चेतना

सस्कार चेतना

सस्कार चेतना

संस्कार चेतना

संस्कार चेतना

सस्कार चेतना संस्कार चेतना

संस्कार चेतना

संस्कार चेतना

सस्कार चेतना

सस्कार चेतना

संस्कार चेतना

सस्कार चेतना

संस्कार चेतना

संस्कार चेतना

offline

ISSN 2347-4041

प्रथमां विश्ववारां तां संस्कृतिं स्वयुगानुगाम्। संस्कारचेतना धत्ते वसुधैव कुटुम्बकम्।।

साहित्य,शिक्षा, वाणिज्य,मानविकी एवं विज्ञान विषयों की



## शोध के प्रयोज

### सृष्टि में कोई भी कार्य बगैर प्रयोजन के नहीं होता। प्रत्येक कार्य का अपना लक्ष्य होता है।

शोध के प्रयोजन के बारे में मिल-मिल दिचार दिए गए हैं :-

इसन्-

शोध कार्य का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रयोजन झान प्राप्ति ही है। एन्साइनलोपीडिया ब्रिटेनिका के खंड (१९) में रिलाई शब्द पर प्रकाश डाला गया है। अत: शोधक का मुख्य प्रयोजन ज्ञान का विस्तार है चाहे वह मौतिक ज्ञान हो, बाहे देवारिक या किर आध्यात्मिको सम्पूर्ण ज्ञान शोध से संभवहै।

अर्थ प्राप्ति -शोध'का एक प्रयोजन अर्थ प्राप्ति भी कह सकते हैं। डॉ. उदयभानु सिंह ने अपने ग्रंथ ' अनुसंधान का विदेवन' में शोध के इस प्रयोजन को महत्त्व देते हुए लिखा है - 'उपाधि परक शोधकार्य करने वाले विद्यार्थी का प्रधान साध्य अर्थ ही है।' यशप्राप्ति ~

धन लिप्सा से यश लिप्सा ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। अंग्रेजी में एक कहावत है कि एक सदाशयी व्यक्ति की अंतिम दुर्वलता है यश। इसलिए अनेक सुसम्पन्न व्यक्ति भी कीर्ति के लिए पीएच.डी., डी.लिट्. आदि उपाधियों से अलंकृत होते देखे जाते हैं। पत्रिकाओं में शोधपत्रों के दुवारा भी व्यक्ति की अलग पहचान बनती है।

ी हिर्मा ने मात्र इसी कारण शोध कार्य में लगे हुए हैं माकि आमे आने वाले शोधकों की एक विशासना है। ोरत्य 🗐 चार्यो भागे प्रकृतिः सम्मय का**न्याम सी प्रकृतिः सहत्यती है। ऐसे** समाग समय-सूरण एएगी 🖻 ि असे कि इस की रहते हैं।

तर्कपूर्ण व क्रियाशील बुद्धि - कई विद्वान ऐसे हैं जिनकी बुद्धि प्रत्येक विषय में क्रियाशील रहती है तथा वे तर्क द्वारा एक नवीन अवधारणा को जन्म देते हैं और यह अवधारणा शोध के क्षेत्र में अपना स्थान बनाती है। अतः उनकी तार्किक बुद्धि उन्हें शोध कार्य में संलग्न होने की प्रेरणा देती रहती है। इसमें उनका मुख्य प्रयोजन मानसिक उलझन को तर्कपूर्ण तरीकों से सुलझाना रहता है।



"उदारचरितानां त् वस्थैव कटम्बकम"

शोध चेतना अकादमी

Attested to be शिक्षुधैव अपिकेम् संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.)

email:sanskarchetna@gmail.com www.sanskarchetna.com

विकृत कार्यालयः संपादक पंरकोर चेंतना, सिरसमा, बीड् मथाना, कुरुक्षेत्र, हरियाणा 136131 Principal चलभाष. 094166-38831,9467648848

Dayanand Mahila Mahavidyala Kiruksiiga (aryans)

तरराष्ट्रीय मूल्यांकित

धार

अन्त्ररराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका (मासिक) संस्कार चेतना संस्कार चेतना INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL सस्कार चेतना

मार्गदर्शक:

डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा विद्यावाचस्पति पूर्व सदस्य, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिन्द

> प्रधान संपादक डॉ.विजय दत्त शर्मा

संपादक **डें** केवल कृष्ण



शोध चेतना अकादमी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.

Kurukshetra

शोध-आलेखानुक्रम

सम्पादकीय - केवल कृष्ण	
अभिव्यक्ति - डॉ॰ वी॰ डी॰ शर्मा	7
<ul> <li>✓ हरियाणवी लोकसाहित्य और अहमदबक्श थानेसरी</li> </ul>	8
डा॰ कृष्णचन्द रल्हाण	-
✓ वाल्मीिक रामायण में गंगा का स्वरूप	9-16
डॉ॰ सुधीर कुमार	
✓ स्मृतिकार महिषि पराशर का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं काल	17-21
७७ वागरा रामा	
√ आचार्य श्यामलाल उपाध्याय के काव्य सर्जना में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना केवल क्षणः	22-27
મનલ ખુબલ	
√ लिंग संवेदनशीलता और नारी का स्वरूप	28-31
डॉ॰ मनजीत कौर	
<ul> <li>✓ महादिलत महिला : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन</li> </ul>	32-35
डॉ॰ सुरेखा	
√ वर्तमान में हिन्दी भाषा	36-39
त्र डॉ॰ स्नेह गौड़	
महर्षि दयानन्द सरस्वती एवम् नारी जाति के प्रति उनका दृष्टिकोण	40-41
डॉ॰ रूकमेश देवी	
✓ प्रवासी साहित्यकार हिरशंकर आदेश का हिन्दी को योगदान	42-44
इकबाल	
<ul> <li>✓ विज्ञापनों का हिन्दी को विकसित करने में योगदान</li> </ul>	45-47
वीरेन्द्र कुमार	
✓ अज्ञेय के काव्य सर्जना : परम्परागत प्रतीकों का नया प्रयोग	48-51
मुक्श कुमार	
✓ प्रवासी साहित्यकार के रूप में प्रो₀ 'आदेश'	52-56
श्याम देवी	
√ नरेन्द्र कोहली के महाभारत कथा पर आधारित उपन्यासों के प्रमुख पुरूष पात्रों का अन्जबाई	57-62
✓ विकेश निझावन के कथा साहित्य में चित्रित मानवीय संवेदनाएं	63-71
रामिला देवा, डा. बार सिंह	
✓ मोहन राकेश के साहित्य में परम्परा और आधुनिकता का द्वन्द्व-नारी पात्र	72-75
of Add	
<ul> <li>निर्मल वर्मा के साहित्य में सामाजिक चेतना</li> </ul>	76-80
नीलम देवी	
<ul> <li>✓ 'गोदान' उपन्यास में इक्कीसवीं सदी के किसान का चित्रण</li> </ul>	81-86
Attested to	he true copy
√ कुसुम खेमानी के कहानी संग्रह 'अनगँज जिन्दगी की' में आधारिक करी	87-92
ानवा सन्।	14-14-14-1
√ कुसुम अंसल के उपन्यास <sup>+</sup> उस तक' में चित्रित नारी जीवन की विडस्बनाओं की सरोज बाला	93-95 Ferror
Principal Powenand Ma	ahila Mahavidya
Dayananu wa	/Harvana)
Kurukshetra	(mai yana)

<ul><li>✓ अंतर्विद्यावर्ती शोध</li></ul>	
पवन कुमार	
<ul> <li>✓ भारतमृति कालीन नाट्य मंडप एवं आधुनिक नाट्य मंडप (सिनेमाघार उ संक्षिप्त अध्ययन</li> </ul>	99-102 ग़िद) का तुलनात्मक
वलजीत सिंह	
चिन्दी उपन्यास साहित्य में सामाजिक और राजनीतिक चेतना सोहनलाल	103-106
√ समकालीन कहानी में नारी की उपे <mark>क्षा</mark> सविता देवी	107-109
✓ विश्वम्भार दत्त शर्मा की काव्यगत भाषा की विशेषताएं रविन्द्र सिंह	110-113
<ul><li>प्रो. 'आदेश' के महाकाव्यों में भाषा-शैली</li></ul>	114-122
जगदीश चन्द्र	
<ul> <li>डॉ. ज्ञानीदेवी के 'काव्यांजिल' काव्यसंग्रह में आध्यात्मिकता</li> <li>डॉ. रेखा रानी जूड</li> </ul>	123-129
<ul> <li>✓ श्लेश अलंकार व काव्य में इसकी महत्ता</li> <li>डाँ₀ पूनम</li> </ul>	130-133
<ul> <li>✓ जयशंकर प्रसाद का साहित्य अनुशीलन सन्दीप कुमार</li> </ul>	134-137
✓ धर्मवीर भारती के काव्य में प्रेम-सौन्दर्य  जगदीश चन्द	138-141
<ul> <li>भारतीय योगचिन्तन में क्लेश विचार</li> <li>डॉ. अमित शर्मा</li> </ul>	142-146
√ वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था	147~151
डॉ॰ प्रतिभा वर्मा ✓ समकालीन समस्याएँ एवं श्रीमद्भगवद्गीता डॉ॰ राजवीर आर्व	152-157
्र योगदर्शने अष्टाङ्गयोगस्य विवेचनम् ज्योतिः	158-162
✓ उदात्तादि स्वरों का स्वराङ्कन प्रकार बलसज	163-165
<ul> <li>काश्मीर शैव दर्शन में बन्धन एवम् मोक्ष तथा शक्तिपात</li> </ul>	166-171
सलन्द्र ।सह ४ "स्मृतिग्रंथों में वर्णित अर्थ और राजनीति की अवधारणा''	172~177
डा० मन्जू ४ वैदिकवाङ्मये धर्मशास्त्राणां महत्त्वम	178-181
विकास शास्त्री ४ भारत में वन सरंक्षण	182-184
डॉ॰ सोमवीर <ul> <li>संगीत जगत् में दूरदर्शन की भूमिक</li> <li>शशी कुमारी</li> </ul>	185–189
सितार वादन में गत का विकास IQAC	190-195
सरिता • Dayanand Mahda Mahavidyalaya Kurukshe La	₹6-200

ISSN: 2347-4041

सस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका

महर्षि दयानन्द सरस्वती एवम् नारी जाति के प्रति

उनका दुष्टिकोण

डॉ॰ रूकमेश देवी असिसटेंट प्रोफेसर दयानन्द महिला महाविद्यालय क्रक्षेत्र (हरियाणा)

मनु महाराज के अनुसार - "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्र क्रियाफला।'

अर्थात् जहाँ पर स्त्रियों की पूजा होती है, उनका सम्मान, सत्कार किया जाता है, वहां पर देवता निवास करते हैं। जहां स्त्री जाति का सत्कार नहीं होता वहां सभी क्रियाएं विफल हो जाती है। परन्तु भारत में सहस्त्रों वर्षों से नारी जाति का अनादर होना आरम्भ हो गया था। कई सौ वर्षों पहले स्वामी शंकराचार्य जी ने भी कहा था -

"द्वार किमेंक नरकस्यानारी"

उनका मानना था कि नारी नरक का द्वार होती है। पौराणिक काल में स्त्रियों को वेदाध ययन और यज्ञादि के अधिकार से वंचित कर दिया था और कुछ स्वार्थी स्त्रियों को पशुओं के समान मानते थे । गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार 💤

'ढोल गंवार शद्र पश नारी। ये सब ताडन के अधिकारी ।।3

जबकि परमेश्वर ने स्त्री व पुरुषों दोनों को समान बनाया है। दोनों को समान नेत्र, कान, मुख, मस्तिष्क व विद्या पढ़ने के साधन दिए है। परन्तु समाज में कन्यावध, सती प्रथा, बाल-विवाह, पर्दा प्रथा जैसी बुराईयां प्रचलित होने के कारण पुरुष प्रधान समाज स्त्रियों को हेय दृष्टि से देखता था।4

नारियों की अति शोचनीय अवस्था का वर्णन करते हुए आचार्य मेघाव्रत जी ने लिखा है:-

श्रद्धाल्भिमृढजनै स्वकन्या, देवालये देवदराय दत्ता। श्री देवास्य कृतगीतलास्य, बलादभुज्यन्त विटैरजस्त्रम् ।।5

आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व नारी जाति का घोर अपमान हो रहा था। उसे हर तरह से प्रताड़ित विरोध कि रही की चोह वह बाल्यावस्था में थी या युवावस्था में प्राय: हिन्दुओं में कन्या वध की प्रथा थी। जहां एक ओर पुत्र के जन्म के समय हर्षोल्लास मनाया जाता था वही दूसरी Convener ओर घर में कन्या के जाम्म को अशुभ समझा जाता था। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पंजाब इत्यादि में IQAC

नकजात कन्याओं को पैदा होते ही मार दिया जाता था। कन्याओं को मारने का कार्य प्राय: स्त्रियां ही करती थी और प्रत्येक गांव में ऐसी दो-चार स्त्रियां होती थी। जिनको कन्याओं के मारने के कई प्रकार के ढंग आते थे और वो इस कार्य में पूर्णत: सिद्धहस्त थी। जैसे ही किसी के घर में कत्या का जन्म होता था तो इन स्त्रियों को बुला लिया जाता था। ये स्त्रियां अंगूठे से गला दबाकर या फिर बच्ची के गले में तंबाकू ठूंसकर उसे मार देती थी।

पंजाब में कन्या के हाथ में गुड़ की डली और एक हाथ में रूई की पीनी देने के बाद उसको मारा जाता था और मरने वाली बच्ची को कहा जाता था। -

> ''ग्ड खावीं पूजां कती। आप न आवां भाता छटी'"

offline

अर्थात् तू गुड़ खाना और पूनी कातना, तू लौटकर यहां मत आना अपने भाईयों को भेजना। उस समय नारी जाति पूर्णत अविद्या के अंधकार में पड़ी हुई थी मठों में मठाधीश मंदिरों में देवदासी के रूप में रखकर उनकी बलि देते थे। पुजारीगण उनसे व्यभिचार करते थे, स्त्रियां खेती समझी जाती थी। विधवा-नारी को नियोग और पुर्नविवाह करने की आज्ञा नही थी। सती प्रथा के अनुसार विधवा स्त्री को पित के साथ जीवित रुप में ही भस्म कर दिया जाता था।8

डॉ. बर्नियर मुगलकालीन यूरोपियन इतिहासकार जो कि शाहजहां व औरंगजेब के शासनकाल में भारत आया था। उसने अपनी भारतयात्रा पुस्तक में सती होने वाली स्त्रियों का आंखो देखा हाल लिखा है कि किस प्रकार चिता के चारों ओर कुछ ब्राह्मण लाठियां और बांस लेकर खड़े हो जाते थे कि कहीं कोई स्त्री आग से डरकर भाग ना जाए और अगर कोई स्त्री ऐसा करती थी तो उसे जबरदस्ती चिता में फैंक दिया जाता था।

बर्नियर लिखते है कि "लाहौर में मेरे सामने 12 वर्ष की परमसुन्दरी विधवा लड़की को हाथ-पांव बांधकर उसके पति की चिता पर रखकर जला दिया गया था। "

आम जनता में यह प्रचार किया जाता था कि "स्त्रिणां नेव विश्वासं दुष्टानां कारयेद बुधाः। '' अर्थात् स्त्रियो पर विश्वास नहीं करना चाहिए। ऐसे समय में भगवान का लाख-लाख धन्यवाद है कि उन्होंने महर्षि दयानंद महाराज द्वारा आर्यसमाज की स्थापना का शुभावसर प्रदान किया। जिसने नारी जाति के उद्धार का व्रत लेकर नारी जाति को गढ़े में गिरने से बचाया। महर्षि ने यह घोषणा की कि हे ऋषि जाति का अपमान करने वाले लोगों?"

''भार्या श्रेष्ठतम सखा'" अर्थात् पत्नी पुरुष की सर्वश्रेष्ठतम मित्र होती है जिस प्रकार एक पहिए से गाड़ी नहीं चल सकती उसी प्रकार बिना स्त्री के गृहस्थ धर्मरूपी गाड़ी नहीं चल सकती इसलिए इनका सम्मान करो।

वैदिक युग में स्त्रियों को यज्ञोपवीत एवं वेद के पठन-पाठन का विधान था। 3 सीता, सावित्री जैसी स्त्रियाँ वेदों का अध्ययन करती थी और तुम हो कि इनके वेदों के सुनने से भी निषेध करते हो। इतना ही नहीं नारी जाति के उद्धार के लिए कुर्म-पुराण का प्रमाण देते हुए उन धूर्ती को बताया

''पराकल्पेष कमारिया, मौजी बंधन मिष्यते। स्भद्रा देवकी सीता, वेद वेदांड्ग. पारंगा।15

Dayanand Mahila Mahavidyalaya

Principal Manual Manavidyalaya प्राप्त कर्ता अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका Kuruksh संस्कार चेतना, अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका Kurukshetre (HEWAIR)

43



स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में 'इमं मन्त्रं पत्नी षठेत" अर्थात् पत्नी से मंत्र पढ्वाऐ इस श्रोत्र सूत्र के द्वारा वेदों को पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार दिया गया और सभी को वेद के पठन-पाठन का विधान बताया।

'आपोहिष्ठा मयोमुवस्ताभ ऊजेदघाटन महे रणायचक्षसे'''

युजुर्वेद के इस मंत्र से वेद में स्त्री की महत्ता बतुलाकर स्त्री जाति का उद्धार किया। अर्थवेद का प्रमाण देकर विधवा नारी को चिता में जलने से बचाया। नियोग का नियम बतलाया और इसकी आज्ञा दी। स्वमी दयानंद ने नारी जाति के लिए शिक्षा, पठन-पाठन, बच्चे का पालन पोषण, भक्ष्या-भक्ष्य सोलह संस्कार गर्भाधान से लेकर अत्येष्टि तक बहुत सी शिक्षा दी। वेदों और शास्त्रों के आधार पर यह प्रचार किया -

"नारी निन्दा मत करी, नारी नर की खान । नारी से नर उपजे, ध्रुव प्रहलाद समान।।

अंत में हम यही कहेंगे कि स्वामी दयानन्द सरस्वती का नारी जाति पर जो उपकार है उसके लिए समस्त नारी जाति उनकी ऋणी रहेगी और कभी उनके इस उपकार को नहीं भूल पएगी।

### संदर्भ-प्रत्रिकाएं-

- आर्य महिला पत्रिका 1960. पृ. 67
- आर्योदय पत्रिका 1963, अंक (13 मई 1963) पृ. 9
- आर्य पत्रिका जनवरी-जून, 1957-59 (अंक 23 जून 1957) पूं. 4
- गुरुकुल पत्रिका दिसम्बर 1974-75, पृ. 442
- आर्य जगत पत्रिका मार्च, 1964, पृ. 6
- आर्य पत्रिका-दिसम्बर, 1950, पृ. 9 -
- उपरोक्त, आर्योदय पृ. 9
- आर्य पत्रिका रविवार 5 अप्रैल 1951, पृ. 42
- उपरोक्त आर्योदय, पृ. 9
- उपरोक्त आर्योदय, पृ. 10
- गुरुकुल पत्रिका 1936-1938 (अंक 12 मार्च-1937) पृ. 4-5
- आर्योदय पत्रिका 1960, अंक- 1 मई 1960, पृ. 3
- अार्य महिला पत्रिका 1933, पृ. 9
- गुरुकुल पत्रिका अप्रैल-जुलाई, 1940-41 (अंक-4 अप्रैल) पृ. 2
- उपरोक्त आर्यजगत, म. 🕡
- आर्यपत्रिका अप्रैल १९६३ है (अंक 17 मई 1953) पृ. 9
- उपरोक् के अधिकासते, Myhika Mahavidyalaya
  - उपरोक्तें प्रमार्थेंदेख tra पृ. 10

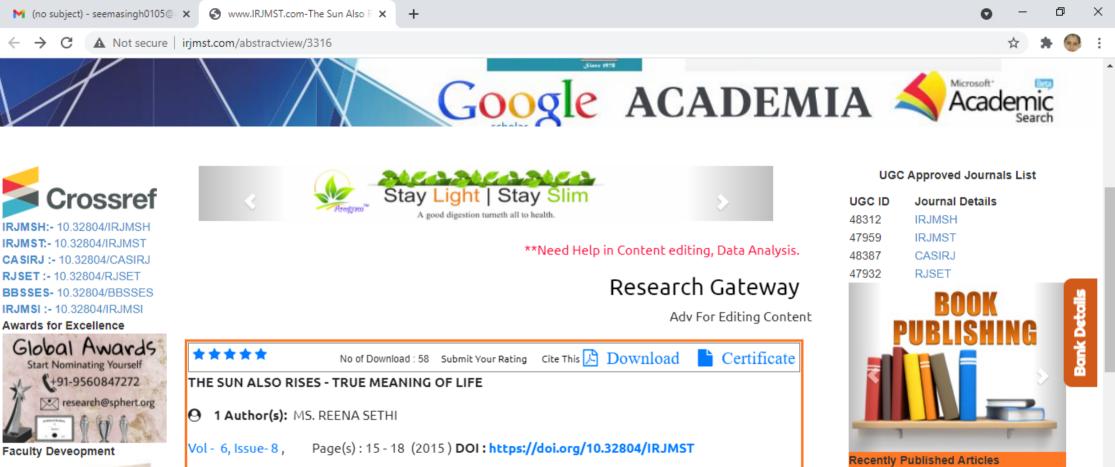
Attested to be true copy

Principal Dayanand Mahila Mahavidyala Kurukshetra (Haryana)

संस्कार चेतना, अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका

# Session: 2015 (online Papers)





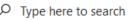




### Abstract

The Sun Also Rises is a 1926 novel written by American author Ernest Hemingway about a group of American and British expatriates who travel from Paris to the Festival of San Fermín in Pamplona to watch the running of the bulls and the bullfights. An early and enduring modernist novel, it received mixed reviews upon publication. Hemingway biographer Jeffrey Meyers writes that it is "recognized as Hemingway's greatest work", and Hemingway scholar Linda Wagner-Martin calls it his most important Year: 2021 AN ANALYSIS OF CONSUMPTION AND PRODUCTION PATTERN OF RICE IN PURVANCHAL: A FOCUSED GROUP DISCUSSION

































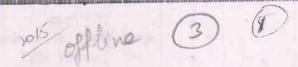








# Session: 2015 (offline Papers)





साहित्य, शिक्षा, वाणिज्य, मानविकी एवं विज्ञान विषयों की

ISSN - 2347 : 4041

## स्कार चेत्ना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पित्रका

वर्ष-5, अंक- 2, अक्तूबर, 2015

स्वामी हरिज्ञोम दास परिव्राजक बात्सल्य बाटिका कुरुक्षेत्र

डॉ. सुधीर कुमार, पूर्व निदेशक, इरियामा संस्कृत अनेबद्गी पंचकृता डॉ. कृष्य वन्द रव्हाण, परं क्रनक्षिव कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र डॉ. रोहताश गुप्ता,पूर्वाध्यस प्राणी शास्त्र विमाग, कु.वि.कुरुक्षेत्र र्टी. गिरीश धीपडा, अध्यक्ष प्राणी शास्त्र विभाग, बु.वि.बुरुक्षेत्र

### मार्गदर्शक:

डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, विद्यावायत्पति पूर्व सदस्व, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद् पूर्व अध्यक्ष, दर्शन विभाग, बु.वि. बुरुक्षेत्र

मुख्य संरक्षक डॉ. बी. के. कुठियाला कुलपति, मामनताल बतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल

> प्रधान संपादक डॉ. विजय दत्त शर्मा

प्रबन्ध संपादक डॉ. गणेश दत्त डॉ. तरसेम कीशिक डॉ. प्रवीण वत्स

> संपादक केवल कृष्ण

Attested to be true copy

Principal
Dayanand Mahila Mahavidyala
Kurukshetra Haryana)

उप संपादक डॉ.क्षि पाल डा.चन्द्रपाल पूनिया

शोध चेतना अकादमी

viania

Kurukshetra

Dayanand Mahila Manavidyalay

'दसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.) email: sanskarchetna@gmail.com www.sanskarchetna.com

सम्पादकीय कार्यालयः संपादक, संस्कार चेतना, 1575, गली नं. 4, दीदार नगर, कुरुक्षेत्र,हरियाणा 136118

पंजीकृत कार्यालयः संपादक, संस्कार् चेतना, सिर्समा, बीड् मथाना, कुरुक्षेत्र,हरियाणा 136131

पुष्ठ संख्य विवन्नी कुनार पार्तीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं राष्ट्रीय आन्दोलन कि.स. पार्तीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं राष्ट्रीय आन्दोलन कि.स. पार्तीय कांग्रेस एवं राष्ट्रीय आन्दोलन कि.स. पार्तीय कांग्रेस एवं राष्ट्रीय आन्दोलन कि.स. पार्तीय कांग्रेस एवं राष्ट्रीय आन्दोल कि.स. पार्तीय कांग्रेस एवं राष्ट्रीय कांग्रेस समायांजन का महत्त्व वीवन में समायांजन का महत्त्व वीवन में समायांजन का महत्त्व वीवन पर्वेश स्वेश एवं राष्ट्रीय स्वेश पार्टिय पर्वेश स्वेश स्वेश पार्टिय पर्वेश स्वेश पार्टिय पर्वेश स्वेश स्वेश स्वेश कांग्रेस समकालीन हिन्दी कविवा संवय सुमार पर्वेश स्वेश प्रवेश कुमार पर्वेश सामकालीन हिन्दी कविवा संवय सुमार पर्वेश स्वेश प्रवेश कुमार पर्वेश सामकालीन हिन्दी कविवा संवय सुमार पर्वेश स्वेश प्रवेश कुमार पर्वेश सामकालीन हिन्दी कविवा संवय सुमार पर्वेश स्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश कुमार पर्वेश सामकालीन हिन्दी कविवा स्वेश सुमार पर्वेश स्वेश पर्वेश कुमार पर्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश पर्वेश स्वेश पर्वेश परविवेश पर्वेश परविवेश परवेश परव			हिन्दी नाटकों में जनवादी चेतना का सामाजिक पक्ष	1
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं राष्ट्रीय आन्दोलन हित्तु गुप्ता कृष्णा सोवती के उपन्यासों में नारी समस्याएँ अमनदीय कोर प्रवास का का काल्य-संग्रह चांदनी की व्यथा, एक दृष्टि इं विदाश करवाल का काल्य-संग्रह चांदनी की व्यथा, एक दृष्टि इं विदाश वांदन स्थार विदाश वांदन स्थार विदाश वांदन स्थार वांदन के व्यथा, एक दृष्टि इं विदाश वांदन स्थार वांदन के वांदन स्थार वांदन के वांदन से समायोजन का महत्त्व रोपक देवी प्रवास वांदन से समायोजन का महत्त्व रोपक देवी प्रवास वांदन से समायोजन का महत्त्व वांदन से दृश्यों में सामवीय विजीविषा और संघर्ष से विदाश वांदन से दृश्यों में सामवीय विजीविषा और संघर्ष से विद्या वांदन से वांदन स्थार समकालीन हिन्दी कविवा संवय कृष्य वांदन से वांदन सूचल वांदन से वांदन से वांदन सूचल वांदन से वांदन सूचल वांदन वांदन वांदन सूचल वांदन सूचल वांदन वांदन सूचल वां	पष्ठ संख्य		विक्की कुमार	84-87
प्रभाव सोबती के उपन्यासों में नारी समस्याएँ अमनदीप कीर अमनदीप		•	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं राष्ट्रीय आन्दोलन	
कृष्णा सीवती के उपन्यासों में नारी समस्याएँ अमनरीय कौर प्रभावित को उपन्यासों में नारी समस्याएँ अमनरीय कौर प्रमादीय कौर प्रभावित अग्रवाल का काल्य-संग्रह चांदनी की ल्यथा, एक दृष्टि उर्ड जितंन्द्र कुमार विवार्धी जीवन में समायोजन का महत्त्व अ 99-102 हिकम की दुग्गी में मानवीय जिजीविषा और संघर्ष स्नेहलता 103-106 Access to Justice In India 107-116 मनुस्मृति में वर्णित 'उपनयक्त संस्कार' शिल्ड सिंह विवार में पानवीय जिजीविषा और संघर्ष स्नेहलता 107-116 मनुस्मृति में वर्णित 'उपनयक्त संस्कार' शिल्ड सिंह विवार सींह विवार स	6		रितु गुप्ता	88-90
8-16 विद्यार्थी जीवन में समायोजन का महत्त्व 17-20 रोपक देवी 99-102 17-20 हिकम की दुग्गी में मानवीय जिजीविषा और संघर्ष 17-24 सेहरुता 21-24 सेहरुता 25-28 Sunii Kumar, Cheshta Dahiya 107-116 25-28 हिन्दी की राजनैतिक जागरण में भूमिका (भारतेंदु युग के सन्दर्भ में) 33-40 शित राजनैतिक जागरण में भूमिका (भारतेंदु युग के सन्दर्भ में) 33-40 असंगठित क्षेत्र एंव उसके बढ़ने के कारण छाँ, कृष्ण कुमार, रोपक कुमार विघटित होते जीवन मृत्य और समकाशीन हिन्दी कविचा संजय कुमार विघटित होते जीवन मृत्य और समकाशीन हिन्दी कविचा संजय कुमार 138-140 48-52 पुक्रेश कुमार 19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरोयों का शिक्षा में योगदान सोनम यादव 19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरोयों का शिक्षा में योगदान किन्ठित पात्र में कल्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीया वर्मा वर्गमा सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव 161-66 विवार सेंवर हिंद हिंद होजेन्छ हो पेक्रवर्ण हिंद के लिए राजने हिंद हो सहस्त की रामाया हेतु सुझाव 162-170 Liberalism 71-74 Ritu, Kavita, Roopa उपन्दनाव अञ्चक के कथा-साहित्य में चित्रत साथाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीरा कुमार पार्ट स्तिश कुमार पार्ट प्राचीन कीर सिंस विवार साथाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीरा कुमार पार्ट प्राचीन कीर में विवार की दशा और दिशा पार्ट प्राचीन कीर स्ति में विवार की दशा और समस्याएँ सतीरा कुमार पार्ट प्राचीन कीर स्वारा और दिशा पार्ट प्राचीन कीर प्राचीन कीर साथाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीरा दुमार स्वारा कुमार पार्ट प्राचीत कीर प्राचीन कीर साथाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीरा प्रकृतिक कीर में विवार की दशा और दिशा पार्ट प्रवार की हैन सम्बात कीर साथाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीरा प्रकृतिक कीर में विवार की दशा और दिशा पार्ट प्रवार कोर में विवार की दशा और दिशा पार्ट प्रवार की साथाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीरा प्रकृतिक कीर में विवार की दशा और दिशा पार्ट प्रवार प्रवार कीर में विवार की दशा और दिशा पार्ट प्रवार प्रवार कीर कीर विवार की दशा और स्वरा। पार्ट प्रवार प्रवार कीर में विवर की दशा और दिशा पार्ट प्रवार प्रवार कीर कीर विवार की दशा और साथाजिक-अर्थिक समस्याएँ सतीरा प्रवार कीर कीर विवार की दशा और विवार की दशा की दशा की दशा की साथाजिक-अर्थिक समस्याएँ पार्ट प्रवार प्रवार की दशा की दशा की दशा की साथाजिक-अर्थिक समस्याएँ पार्ट प्रवा		•	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी समस्याएँ	
8-16 उँ जितेन्द्र कुमार विद्यार्थी जीविन में समायोजन का महत्त्व दीपक देवी 99-102 हिक्स की दुग्गी में सामयोजन का महत्त्व दीपक देवी 99-102 हिक्स की दुग्गी में सामयोजन का महत्त्व 103-106  25-28 स्वेह्स की दुग्गी में मानवीय जिजीविषा और संघर्ष सेवहस्ता 103-106  25-28 Sunil Kumar, Cheshta Dahiya 107-116  25-28 हिन्दी की राजनैतिक जागरण में मृमिका (भारतेंद्र युग के सन्दर्भ में)  33-40 रीग यादव 125-127  33-40 सेग यादव 128-137  41-45 इतं कृष्ण कुमार, दीपक कुमार 128-137  46-47 संज्य कुमार वीपक कुमार 138-140  48-52 मुकंश कुमार 141-149  48-52 मुकंश कुमार 150-156  53-55 सोनम यादव 150-156  53-55 सोनम यादव 150-156  54-58 मनीय वर्मा कस्तेय, साहस और समाज स्वक अध्ययन मंगाय वर्मा वर्मा सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेत् सुझाव नीलम रानी 163-166  61-66 विद्यार पानी स्वित्य हिं कार्य-ग्रह्म सेगी दिश्मण की गुणवत्ता हेत् सुझाव नीलम रानी 163-166  61-66 विद्यार पानी स्वित्य में स्वित्य सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ तिव्य-ग्रह्म अर्थ-दम्म पानीय वर्मा सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेत् सुझाव नीलम रानी 163-166  61-67-70 Liberalism Ritu, Kavita, Roopa 177-181  55-79 सेनेन्न स्वर्थ के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ स्वरित्य अर्थ-दम्म पानीय कुमार स्वर्थ विद्या की देश वर्ष कि अर्थ-दम्म की स्वर्थ की दशा पिक्स की स्वर्थ की दशा की समस्याएँ स्वरित्य अर्थ-दम्म की स्वर्थ की दशा की दशा की समस्याएँ सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सामाजिक-विद्या की दशा की सम्बर्ध की दशा की समस्याएँ सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सामाजिक-विद्या की दशा की समस्याएँ सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सामाजिक-विद्या की दशा की सम्बर्ध की दशा की समस्याएँ सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सामाजिक-विद्या की समस्याएँ सामाजिक-विद्या की समस्याएँ सामाजिक-विद्या की समस्याएँ सामाजिक-विद्या की समस्या की सामाजिक-विद्या की समस्याएँ सामाजिक-विद्या की समस्या की सामाजिक-विद्या की सामाजिक-विद्या की समस्याएँ सामाजिक-विद्या की समस्या की सामाजिक-विद्या की समस्यापँ सामाजिक	7		अमनदीप कौर	91-93
8-16 विद्यार्थी जीवन में सुमार 17-20 रोपक देवी हुकम की दुगगे में मानवीय जिजीविषा और संघार्थ मनेतर की दुगगे में मानवीय जिजीविषा और संघार्थ 21-24 सनेतरता 103-106 Access to Justice In India 25-28 Sunii Kumar, Cheshta Dahiya 107-116 मनुस्मृति में वर्णित 'उपनयक, संस्कार' 29-32 शिल्प की राजनैतिक जागरण में भृमिका (भारतेंदु सुग के सन्दर्भ में) रीना यादव असंगठित क्षेत्र पंत्र उसके बढ़ने के कारण इतिकारित हिल्प असे समकालीन हिल्पी कविता संजय कुमार विघाटित होते जीवन मृल्य और समकालीन हिल्पी कविता संजय कुमार विघाटित होते जीवन मृल्य और समकालीन हिल्पी कविता संजय कुमार 138-140 सांस्कृतिक दृष्टि से कवीर की प्रासंगिकता मुकेश कुमार 19वाँ सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरियों का शिक्षा में योगदान सोनम यादव प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीया वर्मा वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी हें कि हों छल हों छल हो पहल की रामाजिक-आर्थिक समस्यार्थ सतीश कुमार प्राचीन परना हों हें हें छल हो पहल की दशा और दिशा प्राचीन परना हों दें हें छल हो पहल की दशा और दिशा प्राचीन परना हों हो हो छल हो सहस की दशा और दिशा प्राचीन परना हों हो हो छल हो सहस की दशा और दिशा प्राचीन परना हों स्वतीं कुमार प्राचीन परना हों स्वतीं कुमार प्राचीन परना हों स्वतीं कुमार प्राचीन परना हों हो मनजीत कोर सताश कुमार प्राचीन हों सम्बर्ग की दशा और दिशा प्राचीन केर सिकारी की सामाजिक सामस्यार्थ प्राचीन हों समजीत कोर प्राचीन कीर प्राचीन कीर सामाजिक सामाजिक सामस्यार्थ प्राचीन कीर प्राचीन कीर प्राचीन कीर सामाजिक सामाजिक सामस्यार्थ प्राचीन कीर प्राचीन कीर प्राचीन कीर			घमंडीलाल अग्रवाल का काव्य-संगृह चांदनी की व्यथा, एक दिष्ट	
विद्यार्थी जीवैन में समायोजन का महत्त्व   दीपक देवी   १९०००००००००००००००००००००००००००००००००००	0_14			94-98
हुकम की दुग्गों में मानवीय जिजीविषा और संघर्ष  21-24 स्नेहलता  Access to Justice In India  25-28 Suill Kumar, Cheshta Dahiya  107-116  107-116  29-32 शैलेन्द्र सिंह  117-124  हिन्दी की राजनैतिक जागरण में भृमिका (भारतेंदु युग के सन्दर्भ में)  रीता थादव  33-40 रीता थादव  31-40 असंगठित क्षेत्र एंव उसके बढ़ने के कारण  इ. कृष्ण कृमार, रीपक कृमार  विघटित होते जीवन मृल्य और समकालीन हिन्दी कविता  संज्य कृमार  138-137  विघटित होते जीवन मृल्य और समकालीन हिन्दी कविता  संज्य कृमार  138-140  सीस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता  मुकेश कृमार  19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरियों का शिक्षा में योगदान  सोनम यादव  150-156  प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन  मनीपा वर्मा  56-58 चर्नमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव  नीलम रानी  59-60 चर्नमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव  नीलम रानी  61-66 लेति लेति होतु होए राजी-यहाट टी पेशवरजी  तेया जारी  होतु हाएए  172-176  Liberalism  Ritu, Kavita, Roopa  उपेन्द्रनाय अश्वक के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ  सतीश कुमार  प्रमुण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा  हाँ मनजीत कीर  Kashmiri Sufiana Music and its Future  Dr. Farhat Hassan Wani	0 10		विद्यार्थी जीवैन में समायोजन का महत्त्व	
21-24 संहलता 103-106 Access to Justice In India 5UNII Kumar, Cheshta Dahiya 107-116 25-28 SUNII Kumar, Cheshta Dahiya 107-116 117-124 मनुस्मृति में वर्णित 'उपनयम् संस्कार' शेलेन्द्र सिंह हिन्दी की राजनैतिक जागरण में भूमिका (भारतेंद्र युग के सन्दर्भ में) रीना यादल 125-127 33-40 असंगठित क्षेत्र एंज उसके बढ़ने के कारण 25. कृष्ण कृमार, दीपक कृमार 128-137 विघटित होते जीवन मूल्य और समकालीन हिन्दी कविवा संजय कृमार 128-137 विघटित होते जीवन मूल्य और समकालीन हिन्दी कविवा संजय कृमार 138-140 सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता 141-149 18-52 मुकेश लृमार 19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरयों का शिक्षा में योगदान 150-156 प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीणा वर्षा 157-162 56-58 प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीणा वर्षा वर्षमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी 163-166 केवाउ (अलजेक हिण्णउ) इं तेतुं शक्ण 172-176 Liberalism Ritu, Kavita, Roopa 3पेन्द्रनाथ अपक के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ मतीश कृमार ममजात को रहा मार्थ समस्याएँ सन्दर्भी कुमार ममजात को रहा महित्र सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार ममजात को रहा महित्र सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार ममजात को रहा में विश्वत सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार ममजात कोर स्वाच की रशा और दिशा  185-191 Kashmiri Suffana Music and Its Future के प्रधान की स्वच की स्थाप का स्वच्या का स्वच्या का स्वच्या कोर समझात कोर स्वच्या की स्वच्या	17. 20		दीपक देवी	99-102
21-24 स्नेडलता Access to Justice In India 25-28 Sunil Kumar, Cheshta Dahiya 107-116 19-32 गैलेन्द्र सिंह 117-124 29-32 शैलेन्द्र सिंह 117-124 33-40 शैन यावल असंगठित क्षेत्र एंख उसके बढ़ने के कारण ऑत प्राप्त क्षमार 125-127 असंगठित क्षेत्र एंख उसके बढ़ने के कारण ऑ. कृष्ण कुमार, दीपक कुमार 128-137 विघटित होते जीवन मूल्य और समकालीन हिन्दी कविता संजय कुमार 138-140 सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता मुकेश कुमार 19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनरियों का शिक्षा में योगदान सोनम यावल 150-156 प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीषा वर्मा वर्षमां वर्षमां प्राप्त सिंसण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी 163-166 अपूर्णित प्राप्त विंहर हिंह रुजी-पहाट ही प्रेप्तवर्ष हेल उत्तरित सास्त्र स्वरमां प्राप्त सिंसण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी 163-166 161-66 अपूर्णित प्राप्त विंहर हिंह रुजी-पहाट ही प्रेप्तवर्षी हेल होते हिंह रुजी-पहाट ही प्रेप्तवर्षी सिंदर के के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार प्राप्त के के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार प्रमुखनरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखनीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखनीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखनीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखनीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा होते प्रमुखनीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा	17-20		हकम की दग्गी में मानवीय जिजीविषा और संघर्ष	
** Access to Justice In India  25-28	21 24			103-106
25-28 Sunil Kumar, Cheshta Dahiya  107-116  117-124  117-127  117-127  118-127  118-137  128-137  128-137  138-140  138-140  138-140  148-52  19ai सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरमों का शिक्षा में योगदान  138-140  148-52  19ai सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरमों का शिक्षा में योगदान  138-140  141-149  150-156  118-156  118-156  118-166  118-166  118-166  118-166  118-166  118-166  118-171  117-18	21-24			103 100
मनुस्मृति में वर्णित 'उपनयक्क संस्कार' शेलेन्द्र सिंह  हिन्दी की राजनैतिक जागरण में भूमिका (भारतेंद्र युग के सन्दर्भ में)  रोना यावव  असंगठित क्षेत्र एंव उसके बढ़ने के कारण  डॉ. कृष्ण कृमार, रीपक कृमार  128-137  विघटित होते जीवन मूल्य और समकालीन हिन्दी कविता संजय कृमार  सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता  सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता  19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरयों का शिक्षा में योगदान सोनम यादव  150-156  प्राचीन भारत में कस्तेय, साइस और समाज : एक अध्ययन मनीया यमा  वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी  क्षेत्र गटी लेवति के अण्युतिव पोणवि वर्दिश हिंच रुगी-पहाट ही पोमवरगी तेष गटी लेवति के स्वापता अश्रक के कथा-साहित्य में चित्रत सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कृमार  182-184  स्वापा द्वार  प्राचीन पाप को रोम विश्व की दशा और दिशा  अर्थकर के कथा-साहित्य में चित्रत सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कृमार  प्राचान साहित्य में विश्व की दशा और दिशा  Dr. Farhat Hassan Wani  1177-193	25. 20			107-116
29-32 शैलेन्द्र सिंह 117-124  हिन्दी की राजनैतिक जागरण में भूमिका (भारतेंदु युग के सन्दर्भ में) रीता यादव 125-127 असंगठित क्षेत्र एंव उसके बढ़ने के कारण डॉ. कृष्ण कुमार, दीपक कुमार 128-137 विघटित होते जीवन मूल्य और समकालीन हिन्दी कविता संज्य कुमार 138-140 सास्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता मुकेश कुमार 19वीं सरी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनरियों का शिक्षा में योगदान रात्रय 150-156 प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीषा वर्मा 157-162 वर्षमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव 163-166 अप्तुठित पंतर्षी विहंडा हिंच ठावी-पहार ही प्रेमवाती वेष गरी ठेवली-पहार ही प्रेमवाती विहंडा कि ठावी-पहार ही प्रमाजी विहंडा कि ठावी-पहार हो प्रमाजी विहंडा कि ठावी-पहार ही प्रमाजी विहंडा कि ठावी-पहार हो विहंडा कि ठावी-पहार ही प्रमाजी विहंडा कि ठावी-पहार हो प्रमाजी कि रहा कि ठावी-पहार हो जावी विहंडा कि ठावी-पहार हो प्रमाजी विहंडा कि ठावी-पहार हो विहंडा कि ठावी-पहार हो विहंडा कि ठावी-पहार हो प्रमाजी विहंडा कि ठावी-पहार हो प्रमाजी विहंडा कि ठावी-पहार हो विहंडा कि ठावी-पहार हो प्रमाजी विहंडा हो विहंडा कि ठावी-पहार हो विहंडा कि ठावी-पहार हो विहंडा विहंडा हो विहंडा हो विहंडा हो विहंडा कि ठावी-पहार हो विहंडा हो विहंडा हो विहंडा हो विहंडा हो विहंडा कि ठावी-पहार हो विहंडा	25-28			107 110
हिन्दी की राजनैतिक जागरण में भूमिका (भारतेंदु सुग के सन्दर्भ में)  रीना यादव 125-127  असंगठित क्षेत्र एंच उसके बढ़ने के कारण डॉ. कृष्ण कुमार, रीपक कुमार 128-137 विघटित होते जीवन भूल्य और समकालीन हिन्दी कविता संजय कुमार 138-140  सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता मुकंश कुमार 141-149  19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरयों का शिक्षा में योगदान सोनम यादव 150-156  प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीया वर्मा वर्मा वर्मा वर्मा 157-162  वर्षमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव 163-166  अण्युतिव पंतरादी बहिड़ा हिंह ठावी-यहाट टी पंत्रवार्धी वर्म वर्म वर्म वर्म वर्म वर्म वर्म वर्म	100			117_124
33-40 रीना यादव 125-127 असंगठित क्षेत्र एंव उसके बढ़ने के कारण डॉ. कृष्ण कृमार, रीपक कृमार विघटित होते जीवन मूल्य और समकालीन हिन्दी कविता संजय कृमार 138-140 सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता मुकेश कृमार 19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरयों का शिक्षा में योगदान सोनम यादव 150-156 प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीषा वर्मा 157-162 वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी 163-166 अपाठित पंत्रची बहिउन हिंह ठावी-पहाट ही पेम्रवाती वेधन वर्टी लेठनित हिंह ठावी-पहाट ही पेम्रवाती वेधन वर्टी लेठतीं (अल्ठोक हिंह ठावी-पहाट ही पेम्रवाती वेधन वर्टी लेठतीं (अल्ठोक हिंह ठावी-पहाट ही पेम्रवाती वेधन वर्टी लेठतीं (अल्डोक हिंह ठावी-पहाट ही पेम्रवाती वेधन वर्टी लेठतीं वर्ण के प्रध्यायाती विवाद समस्याएँ सतीश कुमार पायहर्गीकरण के दौर में विश्वत की दशा और दिशा विवाद समस्याएँ पायहर्गीकरण के दौर में विश्वत की दशा और दिशा विवाद समस्याएँ पायहर्गीकरण के दौर में विश्वत की दशा और दिशा विवाद समस्याएँ विवाद समस्याएँ पायहर्गीकरण के दौर में विश्वत की दशा और दिशा विवाद समस्याएँ विवाद समस्याएँ विवाद समस्याहर्ग समस्याहर	29-32			11/-124
* असंगठित क्षेत्र एंव उसके बढने के कारण  डॉ. कृष्ण कृमार, दीपक कृमार  विघटित होते जीवन मूल्य और समकालीन हिन्दी कविता संजय कृमार  सांस्कृतिक हुष्टि से कबीर की प्रासंगिकता मुकेश कृमार  19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनिरयों का शिक्षा में योगदान  शाचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीषा वर्मा  वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी  वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी  61–66 अण्यित योगवीं बहिड़ा हिंच ठारी-यहाट ही पेम्रवाती तेथा गर्टी लेतजीड (अठमेल हिवगड) डॉ वेट्टे शिला  71–74 Liberalism Ritu, Kavita, Roopa उपन्दनाथ अश्वक के कथा-साहित्य में चित्रत सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कृमार  185–191  Attested to be true copy  (124–193  (136–191  (137–193  (138–140  (138–140  (141–149  (141–14)  (141–149  (141–149  (141–149  (141–149  (141–14)  (141–149  (141–149  (141–14)  (141–149  (141–14)  (141–149  (141–149  (141–14)  (141–149  (141–14)  (141–149  (141–14)  (141–149  (141–14)  (141–14)  (141–14)  (141–14)  (141–14)  (141–14)  (141–149  (141–14)  (141–14)  (141–14)  (141–14)  (141–14				125 127
41-45 डॉ. क्ष्ण कुमार, दीपक कुमार 128-137  विघटित होते जीवन मूल्य और समकालीन हिन्दी कविता संजय कुमार 138-140  सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता मुकेश कुमार 141-149  19वीं सरी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनरियों का शिक्षा में योगदान सोनम यादव 150-156 प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीया वर्मा वर्षमा सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी 163-166  59-60 जिल्ला पानी विद्या हिंग ठणी-पहण्ट सी पेम्रवणी वेप जटी हेळळीड (अठअेह हिलाह) इं तेट्टे झाल 177-181  67-70 Liberalism  71-74 Ritu, Kavita, Roopa 3पेन्द्रनाथ अश्क के कथा-साहित्य में चित्रत सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार 182-184  • स्मूण्य कुमार 182-184  • स्मूण्य कुमार के तैर में विश्व की दशा और दिशा 185-191  Kashmiri Sufiana Music and Its Future 194 कि स्वर्थ की स्वर्थ की प्रमाय विद्या 192-193	33-40			125-127
किघटित होते जीवन मूल्य और समकालीन हिन्दी कविवा संजय कुमार 138–140 सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता पुकेश कुमार 141–149 19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनरियों का शिक्षा में योगदान स्रोनम यादव 150–156 प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन मनीषा वर्मा 157–162 वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी 163–166 अण्पुठिव पीमधी विहिज्ञ हिंच ठणी-पडाङ ही पीमवणी तेथा जाडी स्रितवीड (अठभेठ हिंच प्रज) डाँ वेठूँ शला 172–176 Liberalism त्रान-79 Ritu, Kavita, Roopa उपेन्द्रनाथ अश्यक के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार 182–184  ***********************************				100 107
46-47	41-45			128-137
सांस्कृतिक दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता  48-52				400 440
48-52       मुकेश कुमार       141-149         19वीं सरी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनरियों का शिक्षा में योगदान       150-156         53-55       सोनम यादव       150-156         प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन       157-162         वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव       163-166         अण्पुठिव पीमपी वरिडा हिंच ठावी-पहाट ही पीमवरवी       163-166         केथा वाटी हेळावीड (мойю हिंचगड)       167-171         हेळावीड (мойю हिंचगड)       172-176         Liberalism       172-176         ८ Liberalism       177-181         उपेन्द्रनाथ अश्वक के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ       182-184         भूमण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा       185-191         Kashmiri Sufiana Music and Its Future       100-193         Dr. Farhat Hassan Wani       100-193	46-47			138-140
19वीं सदी में पूर्वी पंजाब में ईसाई मिशनरियों का शिक्षा में योगदान  53-55  सोनम यादव  150-156  प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन  मनीषा वर्मा  157-162  वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव  नीलम रानी  163-166  अप्पृतिव पीनांधी विहंडा हिंच ठावी-पहाट सी प्रेमवावी तेष राटी लेववींड (अठमेल हिनमड) डॉ नेट्टे घाला  167-171  Kashmiri Sufian Roopa  71-74  Ritu, Kavita, Roopa  3पेन्द्रनाथ अश्व के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार  म्मण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा  हॉ. मनजीत कौर  Kashmiri Sufiana Music and Its Future  Dr. Farhat Hassan Wani				449 440
53-55 सोनम यादव 150-156 प्राचीन भारत में कस्तेय, साइस और समाज : एक अध्ययन  मनीषा वर्मा 157-162 वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव  जीलम रानी 163-166 भण्पीठव भीमधी बरिडा हिंच ठाठी-प्रहाट टी भेम्रवाठी वेषा ठाटी लेखतीड (अठभेल हिंचगन्न) हों वेठूं मला 172-176 Liberalism  71-74 Ritu, Kavita, Roopa उपेन्द्रनाथ अश्रक के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार 182-184  म्मण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा डॉ॰ मनजीत कौर 185-191 Kashmiri Sufiana Music and Its Future Dr. Farhat Hassan Wani	48-52			141-149
प्राचीन भारत में कस्तेय, साहस और समाज : एक अध्ययन  मनीषा वर्मा  वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव  नीलम रानी  भण्ठित पीमषी वरिड़ा हिंच ठाठी-पहाट ही पेम्रवाठी वेध गटी हेन्नताड (अल्ट्रॉल हिंच मान) हाँ वेठूं घाला  167-171  Kashmiri Sufiana Music and Its Future  Dr. Farhat Hassan Wani  157-162  157-162  157-162  157-162  157-162  163-166  163-166  163-166  163-166  163-166  167-171  163-176  167-171  167-171  172-176  172-176  172-176  172-176  182-181  185-191  185-191				450 454
56-58मनीषा वर्मा157-162वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव163-16659-60नीलम रानी163-16661-66अण्पुतिव पौताथी विहेडा हिंच ठावी-पहाट ही पोम्रवावी वेधा वाटी लेववीड (अत्रोल हिंचामड) इाँ वेर्टू शाला167-17167-70Liberalism172-176Liberalism177-1813पेन्द्रनाथ अश्वक के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार182-184स्मण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा डाँ० मनजीत कौर185-191Kashmiri Sufiana Music and Its Future Dr. Farhat Hassan Wani10A	53-55			150-156
वर्तमान सन्दर्भ में संगीत शिक्षण की गुणवत्ता हेतु सुझाव नीलम रानी 163-166  %ण्युर्तिव पीमाची बहिउंग हिंच ठाती-पहाट ही पेम्रवाती तेथा ताटी लेवतींंंं (अरुनेल हिंच प्राप्त) डाँ तेर्तु घाला 172-176  Liberalism 71-74 Ritu, Kavita, Roopa उपेन्द्रनाथ अश्व के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ सतीश कुमार प्राप्त कुमार प्रमुख्य किरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा डाँ० मनजीत कौर Kashmiri Sufiana Music and Its Future  Dr. Farhat Hassan Wani 163-166 167-171 163-166 167-171 172-176 172-176 172-176 182-181 185-191 185-191				
59-60 नीलम रानी 163-166	56-58	76		157-162
अण्युतिव पैताष्टी विश्व हुँ हिंच ठानी-पहाट टी पेमवानी         61-66       वेध नाटी       167-171         लेका हो हो है काला       172-176         Liberalism       172-176         Cliberalism       177-181         उपेन्द्रनाथ अश्क के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ         सतीश कुमार       182-184         प्रमण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा         Sio मनजीत कौर       185-191         Kashmiri Sufiana Music and Its Future       192-193         Dr. Farhat Hassan Wani       192-193				
61-66	59-60		नालम राना	163-166
61-66			ਆਧੁਨਿਕ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵਿਤਾ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀ-ਪਛਾਣ ਦੀ ਪੇਸ਼ਕਾਰੀ	
इं वेर्ट् घला172-176Liberalism177-181उपेन्द्रनाथ अश्रक के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ75-79सतीश कुमार182-184Attested to be true colspan="2">प्रमुण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा डॉ॰ मनजीत कौर185-191Kashmiri Sufiana Music and Its FutureIQACDr. Farhat Hassan Wani192-193	61-66			167-171
Liberalism  71-74 Ritu, Kavita, Roopa 3पेन्द्रनाथ अश्रक के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ  सतीश कुमार प्रमुण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा डॉ॰ मनजीत कौर Kashmiri Sufiana Music and Its Future  Dr. Farhat Hassan Wani  172-176  172-176  172-176  172-176  172-176  172-176  172-176  172-176  173-181  185-181  185-191  Cashmiri Sufiana Music and Its Future  Dayanand Mahila Mahavidyalaya 192-193		•		
Ritu, Kavita, Roopa  उपेन्द्रनाथ अश्रक के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ  सतीश कुमार  182-184  Attested to be true copy डॉ॰ मनजीत कौर  Kashmiri Sufiana Music and Its Future  Dr. Farhat Hassan Wani  Dayanand Mahila Mahavidyalaya  192-193	67-70			172-176
उपेन्द्रनाथ अश्क के कथा-साहित्य में चित्रित सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ  सतीश कुमार  **  "स्मण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा  डॉ. मनजीत कौर  Kashmiri Sufiana Music and Its Future  Dr. Farhat Hassan Wani  Dayanand Mahila Mahavidyalaya  192-193			Liberalism	
तिहा कुमार १८२-१८४ सतीश कुमार १८२-१८४ स्मण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा १८५-१९४ हाँ मनजीत कौर १८५-१९१ टिस्स Dr. Farhat Hassan Wani Dayanand Mahila Mahavidyalaya 192-193	71-74			177-181
Attested to be true copy डॉ॰ मनजीत कौर  Kashmiri Sufiana Music and Its Future  Dr. Farhat Hassan Wani  Dayanand Mahila Mahavidyalaya  192-193				.9
Adtested to be true टिक्प डॉ॰ मनजीत कौर  Kashmiri Sufiana Music and Its Future विशेष  Dr. Farhat Hassan Wani  Dayanand Mahila Mahavidyalaya 192-193	75-79			182-184
Dr. Farhat Hassan Wani  Dayanand Mahila Mahavidyalaya  192-193		* Am	भूमण्डलीकरण के दौर में विश्व की दशा और दिशा	
Dr. Farhat Hassan Wani  Dayanand Mahila Mahavidyalaya  192-193	Adtested	to be tru	डॉ॰ मनजीत कौर	185-191
The later of the l	\ \		Kashmiri Sufiana Music and Its Future	
The later of the l	1.	11	Dr. Farhat Hassan Wani	192-193
Daysond Mahila Mahavidyala	Principa	201	- L-hara	
Dayanano mana	Dayanani	Mahila N	Manavidyate	
Kurukshetra (Haryana)	Kurukshe	tra (Har)	yana)	

### स्कार चतुन अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका ISSN: 2347-4041 वर्ष 5, अंक-2, अक्तूबर 2015

भूमण्डलीकरण के दौर में विश्व की दश्रा और दिशा

डॉ॰ मनजीत कौर हिन्दी विभाग

दयानन्द महिला महाविद्यालय क्रक्षेत्र (हरियाणा)

भूमण्डलीकरण ऐसी प्रक्रिया है जिसने सम्पूर्ण विश्व को अपने जाल में जकड़ रखा है। इस प्रक्रिया ने मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को बड़े ही गहरे रूप से प्रभावित किया है। इसके साथ ही मनुष्य को परिवर्तित हो जाने के लिये भी विवश किया है। भूमण्डलीकरण को वैश्वीकरण की संज्ञा भी दी जाती है परन्तु कुछ विद्वानों ने इन दोनों में बारीक-सा अन्तर खोज लिया है । परन्तु अधिकतर विद्वानों ने इन दोनों शब्दों का अर्थ एक ही स्वीकार किया है । टाम जी॰ पामर, जे॰ एम॰ वाटसन आदि इसके मुख्य समर्थक रहे है। भूमण्डलीकरण का अर्थ:

'भूमण्डलीकरण के अर्थ को लेकर विश्व के अनेक विचारकों में कुछ मतभेद रहा है। कुछ विचारकों का मानना है कि-यह एक प्रक्रिया है जो निरन्तर सम्पूर्ण विश्व को अपने जाल में फंसाती जा रही है। वास्तव में भूमण्डलीकरण की अवधारणा कोई नई नहीं है जो अचानक ही कही से आ गई । इसके आरंभ होने को लेकर भी विद्वानों में काफी मतभेद रहा है। कुछ विचारकों का मत है कि-भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया मानव-इतिहास के आरंभ से ही चल रही है । विद्वानों के एक समूह का मानना है कि-भूमण्डलीकरण पूंजीवाद से जुड़ा हुआ है । इसका सम्बन्ध आधुनिकीकरण से अधिक है। कुछ विद्वान् मानते है कि-भूमण्डलीकरण एक नई घटना है जिसका संबंध आधुनिकता एवं औद्योगीकरण से है। वास्तव में आधुनिकता और औद्योगीकरण में बहुत फर्क नहीं है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया किसी न किसी रूप में विश्व को प्रभावित करती रही है। इस प्रकार भूमण्डलीकरण का अर्थ एक प्रक्रिया के रूप में ही लेना चाहिए । यह प्रक्रिया विश्व में धीरे-धीर चल रही है। ध्मण्डलीकरण की परिभाषा

विधिन्न विद्वानों ने भूमण्डलीकरण को अपने-अपने तरीके से व्यक्त करने के प्रयास किये हैं। कुछ विचारकों ने भूमण्डलीकरण को अपने-अपने तरिक से जन्म । इन रोजों कि विचारकों ने भूमण्डलीकरण को वैश्वीकरण की संज्ञा भी दी है तो कुछ विद्वान इन दोनों शब्दों में बारीक-सा अन्तर भी मानते हैं।

कुछ विचारको के bमन्rusस oपकार है -श्री Attesfed to be trusस्कार है - Dayanand Mahila Mahawidyalaya विवाहर लाल कौल कहते हैं - "ग्लोबलाइजेशन या वैश्वीक्रतास तेसा ही श्रीब्द्रांव विश्वीक्रतास तेसा ही श्रीब्द्रांव विश्वीक्रतास तेसा ही श्रीब्द्रांव विश्वीक्रतास तेसा ही श्रीब्द्रांव विश्वीक ताल करें कि कार्या के स्वाहित स्व

185)







माहित्य, शिक्षा, वाणिज्य, मानिवृत्ती एवं विज्ञान विषयों की

ISSN - 2347: 4041

## सस्कार चतन् अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका

वर्ष-5, अंक- 4, दिसम्बर, 2015

स्वामी हरिक्रोम दाम पिछाजक डॉ. मुधीर कुमार, पूर्व निदेशक, शत्मत्य बारिका कुरुक्षेत्र

हरियाणा संस्कृत अकादम्री पचकुला

हों. कृषण चन्द र्ल्हाण,पूर्व कुनम्धिव कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

डॉ. रोहताश गुप्ता, पूर्वाध्यक्ष प्राणी शास्त्र विमाग, बु.वि.बुरुक्षेत्र

डॉ. गिरीश चौपडा, अध्यक्ष प्राणी शास्त्र विमाग, कु.वि.बुरुक्षेत्र

Dayanand Mahila ....havidyalaya

Kurukshetra

मार्गदर्शकः

डॉ. हिम्मत सिंह सिन्हा, विधायाचापति पूर्व सदस्य, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद् पूर्व अध्यक्ष ,दर्शन विमाग, कु.वि.कुरुक्षेत्र

मुख्य संरक्षक डॉ. बी. के. कुठियाला कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल

> प्रधान संपादक डॉ. विजय दत्त शर्मा

> प्रबन्ध संपादक डॉ. गणेश दत्त डॉ. तरसेम कौशिक डॉ. प्रवीण वत्स

> > संपादक केवल कृष्ण

Attached to be true copy

Dayanand Mahila Mahavidyala - kehetra (Haryana)

उप संपादक डॉ.ऋषिपाल डॉ.चन्द्रपाल पूनिया डॉ. अशोक कुमार

शोध चेतना अकादमी

'वसुधैव कुटुम्बकम्' संस्कृति सेवा आयाम (पंजी.)

email: sanskarchetna@gmail.com www.sanskarchetna.com

पंजीकृत कार्यालयः संपादक, संस्कार चेतना, सिरसमा, बीड् मथाना, कुरुक्षेत्र, हरियाणा 136131

## शोध-आलेखानुक्रम

\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
रियाणा की लोकनाट्य परम्परा और अहमदबक्श थानेसरी
डॉ॰ कृष्णचन्द रल्हाण
गा माहात्म्य तथा स्वरूप
न्तं मधीर कमार
क गोरखनाथ की कविताई और उनका प्रबाधन
व्यं बाबराम (दो लिट.) •
पाष्ट्रवाद के उत्थान में स्वामी दयानंद का योगदान
अस्ताम आर्थ
भारतीय समाज में महिला विकास की वास्तविक स्थिति
टॉ. करमजीत करि
निसरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श
डॉ. पुजा
डॉ. पूजा भवानी आसाद पिश्र के काव्य की इतिहास संवेदना और संमकालीन जीवन बोध
डॉ॰ सोमनी देवी
डॉ॰ सीमनी देवा अमृतलाल मदान के साहित्य में चित्रित समाज व्यवस्था का अध्ययन
डॉ॰ नीलम रानी
रिन्ती कल और आज
डॉ॰ सुकर्मवती देवी
हिन्दी की भारतीय बोलियाँ
THE THE STATE OF STAT
नारी संशक्तिकरण : समस्याएं और समाधान
चाँ मन्त्रीत करि
भारतीय नारी : मानवतावाद की प्रबल पुरोधा
राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में हिन्दी का मूल्यांकन
जर्म होंग चेन्द्र
वेदों में विश्वबन्धुत्व की अवधरणा
कंवल कृष्ण
धूमिल को पढ़ते हुए
मंगीत शर्मा अधिकारी
सुधेश का काव्य रूप
बाह्र राम
प्रेमचंद की सामाजिक विचारधारा
जागा राम समेस्टर प्रणाली का शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में योगदान
इन्द्रजीत कीर
इन्द्रजात कीर डॉ. ज्ञानी देवी के 'अभिमन्यु का संकल्प' काव्य संग्रह : सामाजिक चित्रण
संजय कुमार
कामकाजी महिलाओं का द्वन्द्व
मायविन्द कीर
राष्ट्र भाषा हिन्दी : एक चिंतनीय विषय
स्नेह गाँड स्व <b>मां स्वाप्त क्षित्र के स्वाप्त क्षाप्त क्ष क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्ष</b>
स्विमालक्षेत्रस्ति हिस्सि सहानिया पर विपार अवस्ति ८००
दीपिका सोनी TOAC Davanand Mahila Mahavidyalaya
Davanand Manie

Principal Dayanand Mahila Mahavidyala Kurukshetra (Haryana)

पाठाली चन में मूण इत्वा-स डॉ. ज्ञानी देव प्रेमचन्द के स पर्वावरण प्रदूष सोम वेदो में नैतिव वैदिक साहित्य डॉ संत कवि क STO. रमेश पोखरिय प्रेमचन्द की व श्रीमद्भगवद्गी 83-85 सांख्यदर्शने वे 86-88 श्रीम भारतीय दर्शन 89-95 सरोः राबस्थान का 96-102 **क**व्वाली 103-107

डॉ

संगीत में शो

111-114 संगीत शिक्षण

115-119 स्व. पार्श्व ग

120-122 हरियाणवी लो

अट में लोकर

'गुड़ीया भीतः

डॉ. ज्ञानी देव

रघुवीर सहीव

9-17

18-27

28-33

34-39

40-43

44-46

47-52

53-56

57-64

65-67

68-72

73-78

79-82

108-110

Kurukshetra

ISSN: 2347-4041

#### संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका वर्ष 5, अंक-4, दिसम्बर 2015 और समाधान समस्याएं

डॉ॰ मनजीत कौर असिसटेंट प्रोफंसर (हिन्दी विभाग) दयानन्द महिला महाविद्यालय क्रक्षेत्र

नारी सशक्तिकरण आधुनिक युग की एक महत्त्वपूर्ण विचारधारा है, एक आंदोलन है। प्राचीनकाल से हो नारी-जाति के साथ भेद-भावपूर्ण व्यवहार होता रहा है जिसके कारण वह समाउ में अपनी भूमिका निभा पाने में असमर्थ रही । पुरुष-प्रधान समाज में नारी के लिये अपनी पहचान स्थापित करना अत्यन्त कठिन हो गया । वह केवल घर की चार दीवारी तक सीमित होकर रह गईं। उसे समस्त अधिकारों से वंचित रखा गया। ऐसी विकट स्थिति में भी नारी अपनी पहचान के लिये लगातार संघर्ष करतो रही । अनेक महान् समाज सुधारकों तथा नारी-संघर्ष कं कारण स्त्रियों की दशा में काफी परिवर्तन आये । एक लम्बे संघाएं के बाद नारी अधिकारों की बात उठाई जाने लगी । अन्ततः नारी को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हो गयं । अपने अधिकारों का उपयोग करते हुए नारी-जाति ने सम्पूर्ण विश्व में अपनी योग्यता व शक्ति का परचम लहरा दिया।

आज वह पुरुषों के समान हर क्षेत्र में कार्य कर रही है । परंतु विडम्बना ये है कि आज भी नारी पुरुष व समाज की क्रूरता का शिकार हो रही है। केवल अशिक्षित महिला ही नहीं बल्कि सशक्त नारों भी अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना कर रही है । ऐसा प्रतीत होता हैं कि - नारों केवल कहने भर को सशक्त है, वह अपने अधिकारों का उपयोग तक करें के लिये पुरुष पर निर्भर हैं । नारी-सशक्तिकरण के अन्तर्गत नारी अधिकारों की वात की जाती है। नारी-अधिकारों को लेकर बड़े-बड़े विचारकों में काफी मतभेद रहा है। इस विचारधारा के मार्ग में अनेक कटिनाइयां हैं । वर्तमान समय में भी नारी को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामन करना पड़ रहा है।

नारी-सशक्तिकरण के मार्ग की समस्याएँ :

वर्तमान समय में नारी को सशक्त बनाने के लिये अनेक प्रयास किये जा रहे हैं परि वास्तविकता कुछ और हो है । "भारत जैसे पितृसत्तात्मक देश और पुरुष वर्चस्ववादी समाज नै आज भी औरतें दलितों में दलित और अपने घर में ही शोषण और अपमान का शिकार है। लगभग 7000 स्त्रियाँ हर साल दहेज-हत्या की शिकार है और पिता या पति के सहयोग के अभा<sup>त</sup> में लगभग हर साल 40000 महिलाएँ देह-व्यापार करने पर मजबूर होती है ।""

भारत देश में अपन भी पुरुष-प्रधान समाज विद्यमान है जिसमें नारी को निर्णय लेने की अधिकार नहीं हैं। विकास की में भी नारों को पुरुषों के समान दर्जा नहीं दिया जाता । उर्वे

68

Dayanand Mahila Mah संस्कृतक्ष्य प्रेतना, अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिकी

Attested to be true copy

Dayanand Mahila Mahavidyala Ki rukshairi Yaryana)